B++

स्मारिका

व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम

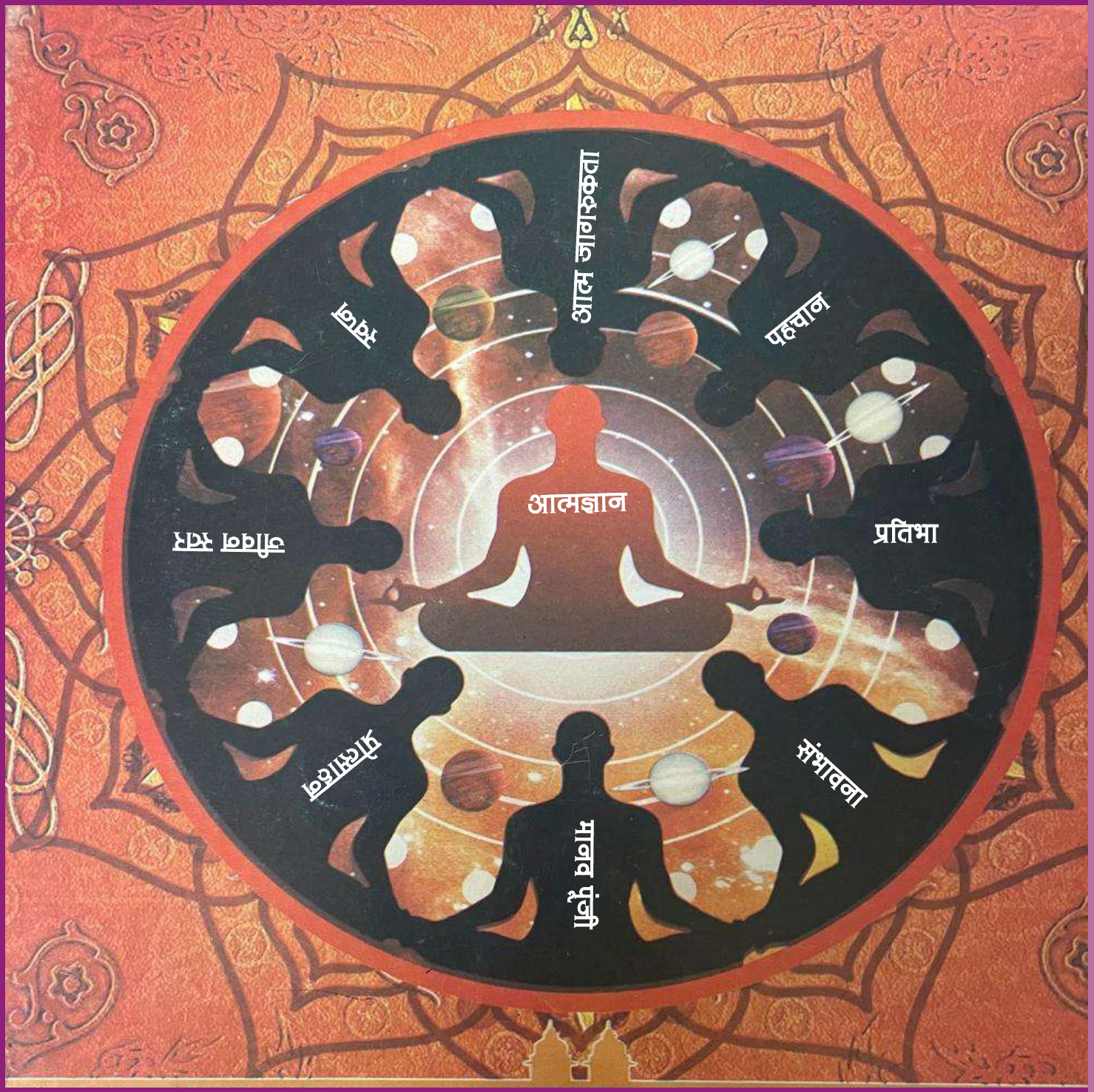

बाबूलाल गौर शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल

प्रायोजक : उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल

उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. शासन के सहयोग से आयोजित

राष्ट्रीय वेबिनार

"व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम"

24 अगस्त 2023 समय- 12:30 बजे

मुख्य संरक्षक

डॉ. मथुरा प्रसाद
क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक
भोपाल नर्मदापुरम् संभाग, भोपाल

मुख्यवक्ता

डॉ. गोपाल प्रसाद
प्रोफेसर- राजनीति विज्ञान
दीनदयाल विश्वविद्यालय, गोरखपुर उ.प्र.
समय- 12:30 से 1:30

मुख्यवक्ता

डॉ. घनश्याम अयंगर
प्रोफेसर- अंग्रेजी
विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी छत्तीसगढ़
समय- 1:30 से 2:30

स्मारिका में प्रकाशन हेतु व्यक्तित्व विकास के निम्नलिखित विविध आयामों पर शोध आलेख अधिकतम 1500 शब्द Ms Word, फान्ट कृतिदेव 10, फान्ट साइज 14 में दिनांक 10 अगस्त 2023 तक webinaraugust2023@gmail.com पर आमंत्रित है-

1. व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण
2. आंतरिक दृढ़ता एवं नकारात्मकता के द्वन्द्व
3. व्यक्ति विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका
4. लक्ष्य निर्धारण: सफलता के मूल मंत्र
5. डिजिटल शिष्टाचार
6. आदर्श दिनचर्या
7. भारत के गौरवपूर्ण अतीत से स्व-प्रेरणा
8. राष्ट्र, राष्ट्रीयता और स्वाधीनता का गौरव
9. अष्टांगयोग से संयत जीवन
10. वसुधैव कुटुम्बकम
11. आचरण शुद्धिकरण के उपाय
12. महापुरूषों के जीवन चरित्र से प्रेरणा
13. गुरू शिष्य परम्परा का महत्व
14. आत्म अनुशासन: लक्ष्यों और उपलब्धियों के बीच का सेतु
15. संचार कौशल
16. व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान
17. संतुलित आहार का मन मस्तिष्क पर प्रभाव

रजिस्टेशन लिंक- https://forms.gle/anB3Yjux8Qyc6VnXA
व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए लिंक- Click here to join WhatsApp group
शोध आलेख भेजने हेतु ई.मेल आई.डी.- webinaraugust2023@gmail.com
तकनीकी सहयोग- श्रीमती पूनम वरवड़े, सुश्री आरती कैथल
संपर्क- 9425170549, 9425358667

डॉ. अनुपमा यादव
संयोजक

शोध समन्वय समिति

डॉ. आर.के.खजवानिया डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव डॉ. पुनीता जैन
डॉ. सुषमा जादौन डॉ. सीमा माथुर डॉ. समता जैन

डॉ. संजय जैन
प्राचार्य

स्मारिका

व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम

मुख्य संरक्षक

डॉ. मथुरा प्रसाद

क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक
भोपाल नर्मदापुरम संभाग, भोपाल

संरक्षक

डॉ. संजय जैन

प्राचार्य

संयोजक

डॉ. अनुपमा यादव

शोध समन्वय समिति

डॉ. आर.के. खजवानिया

डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव

डॉ. पुनीता जैन

डॉ. सुषमा जादौन

डॉ. समता जैन

डॉ. सीमा माथुर

प्रायोजक : उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन

आकल्पन

अस्मि प्रकाशन, भोपाल

मुद्रण

जे.एम.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स

ज़ोन १ एम.पी. नगर, भोपाल

प्राचार्य की कलम से...

मनुष्य का व्यक्तित्त्व परिवर्तनशील होता है, इसके स्वरूपों में विविधता पाई जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यक्तित्व विकास विषय के अध्ययन अध्यापन को विभिन्न स्तरों पर स्वीकारा गया है ऐसे अवसर पर उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. शासन के तत्वाधान में बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल भोपाल द्वारा आयोजित दिनांक 24अगस्त 2023 को "व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम" विषय के इस राष्ट्रीय वेबिनार ने निश्चित ही विषय विशेषज्ञों ,विचारकों ,शोधार्थियों को एसा अवसर दिया होगा जिससे वे इस विषय की अद्यतन जानकारी से रूबरू हो सके। मै डॉ गोपाल प्रसाद प्रोफ़ेसर राजनीतिविज्ञान दीनदयाल विश्वविद्यालय गोरखपुर उ.प्र. एवं डॉ घनश्याम अयंगार प्रोफ़ेसर अंग्रेजी विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी छत्तीसगढ़ शासन का ह्रदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मुख्य एवं विशिष्ट वक्ता का दायित्व निर्वहन स्वीकार करते हुए व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों की तथ्यात्मक और शोधात्मक जानकारी से सहभागिता करने वालों को अभिभूत कर इस राष्ट्रीय वेबिनार को गरिमा प्रदान की है। इस स्मारिका में सैफई, कानपुर, वाराणसी, झांसी, उरई, जालौन, होडल, पलवल, रेहटी, सुल्तानपुर, सीहोर, सागर, दमोह, इंदौर सहित भोपाल के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के विद्वानों और शोधार्थियों के शोध पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं जो वर्तमान परिवेश में इस विषय राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे चिंतन, मनन और शोध का महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित होगा।

श्रीमान आयुक्त उच्च शिक्षा श्री कर्मवीर शर्मा जी एवं विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी अकादमी शाखा डॉ. धीरेन्द्र शुक्ला जी ने इस महाविद्यालय को यह अवसर प्रदान किया इसके लिए महाविद्यालय परिवार आपका तज्ञ रहेगा। क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक डॉ. मथुरा प्रसाद जी का मुख्य संरक्षण ऐसी अकेदमिक गतिविधियों को आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, आशा करता हूँ कि भविष्य में ऐसे और अवसर प्रदान करेंगे। इस वेबिनार के संयोजक, शोध समन्वय समिति तथा स्मारिका प्रकाशक संस्था अत्यंत प्रशंसा के पात्र हैं, उनके सतत प्रयासों से वेबिनार आयोजित हो सका और यह स्मारिका अपना स्वरूप ले सकी। वेबिनार में प्रत्येक सहभागी और प्रत्यक्ष–परोक्ष समस्त सहयोगियों के बिना यह आयोजन संभव ही न था अतः वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं, भविष्य में भी उनकी सहभागिता और सहयोग का आकांक्षी रहूँगा।

डॉ. संजय जैन
प्राचार्य एवं संरक्षक

प्रतिवेदन

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल में उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से दिनांक 24 अगस्त 2023 को एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया यह वेबिनार ''व्यक्त्वि विकास के विविध आयाम'' जैसे महत्वपूर्ण व समसामयिक विषय पर केन्द्रित था। आनलाइन वेबिनार की शुरूआत शोध समन्वय समिति की संयोजक डा. अनुपमा यादव ने ज्ञान की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती के चंदन वंदन व आत्मिक स्मरण से की। डॉ. अनुपमा यादव ने वेबिनार के मुख्य संरक्षक डॉ. मथुराप्रसाद क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक नर्मदापुरम संभाग भोपाल का अन्तर्मन से स्वागत किया साथ ही महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. संजय जैन जी का एवं आनलाइन तथा आफलाइन जुड़े हुए म.प्र. एवं प्रदेश के बाहर के सभ सम्मानीय प्राध्यापको, अतिथि विद्वानों शोद्यार्थियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के उद्देश्य एवं उपयोगिता को बताया। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ताओं का स्वागत करते हुए उनका संक्षिप्त परिचय दिया व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

प्रथम वक्ता के रूप में गोरखपुर उत्तरप्रदेश के डॉ. गोपाल प्रसाद ने व्यक्तित्व विकास के अनेक पहलुओं की चर्चा की। आपने यूनेस्को के द्वारा व्यक्तित्व विकास के 5 बिन्दुओं को विस्तृत रूप से समझाया। समाज, पर्यावरण, शैक्षिक व्यवस्था, आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक पक्ष की व्यक्तित्व विकास में महती भूमिका सिद्ध की।

वेबिनार के दूसरे प्रमुख वक्ता डॉ. घनश्याम अयंगर जी ने बड़े ही रोचक तरीके व्यक्तित्व विकास को एक सतत् प्रक्रिया बताया उन्होंने बताया कि व्यक्तित्व विकास ही अस्तित्व विकास है व्यक्तित्व विकास में आपने ''क्वाटिली'' को विस्तार से समझाया, सकारात्मक दृष्टिकोण भावनात्मक समझ, कृतज्ञता, सद्भावना, ईमानदारी, सच्चाई, बी योर सेल्फ फीलगुड, विषम परिस्थितियों में भी धैर्यवान रहना, सीखना, परानुभूति, उत्साह, अहंकार से दूरी वर्तमान में आशावान होकर जीना ये सब व्यक्तित्व निर्माण के आधार बिन्दु है! लक्ष्य प्राप्ति से भी आवश्यक है लक्ष्य निर्माण करना, जीवन मूल्यों को भी आपने व्यक्तित्व विकास में सहायक बताया। लगातार सीखते रहना, हार ना मानना, समयबद्धता, त्वरित निर्णय ये सभी 24 केरेट स्वर्ण सूत्र हैं। जो व्यक्तित्व विकास में पूर्णरूप से सहायक है।

इस राष्ट्रीय वेबिनार का विधिवत समापन करते हुए डा. कीर्ति श्रीवास्तव ने दोनो प्रमुख वक्ताओं का आत्मिक आभार व्यक्त किया व आनलाइन एवं आफलाइन जुड़े हुए म.प्र. एवं बाहर के सभी विद्वतजनों का, तकनीकी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

उक्त वेबिनार में शोध समन्वय समिति के सभी सदस्य डॉ. आर. के. खजवानियाँ, डॉ. पुनीता जैन, डॉ. सुषमा जादौन, डॉ. समता जैन, डॉ. सीमा माथुर सभी ने अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्रीय वेबिनार में प्रेषित शोध आलेखों का संकलन कर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

संयोजक
डॉ. अनुपमा यादव
प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

अनुक्रमणिका

क्र.	शोध शीर्षक	प्रस्तुतकर्ता	पृष्ठ क्र.
	प्राचार्य की कलम से	डॉ. संजय जैन	i
	प्रतिवेदन	डॉ. अनुपमा यादव	ii
1.	नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों से प्रेरित महापुरुषों के जीवन चरित्र से व्यक्तित्व विकास	डॉ. अनुपमा यादव	07 - 08
2.	व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण	श्री आदित्य कुमार	09
3.	अष्टांग योग से संयत जीवन	सुश्री विनीता श्री जटाशंकर यादव	10-11
4.	Health benefits of Balanced Diet: A brief Review	Dr. Aradhana Verma	12-13
5.	छात्रों के व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान	डॉ. गीता चौहान	14-16
6.	महापुरुषों के जीवन चरित्र से प्रेरणा	डॉ. रितु यादव	17-18
7.	राष्ट्र, राष्ट्रीयता और स्वाधीनता का गौरव	साक्षी शर्मा	19-21
8.	Role of National Service Scheme in Personality Development	Akshay Kumar Tiwari	22-27
9.	Role of Technology for Development of Indian Farmer	Neelam Chopra[1], Gopal Rathor[2], Shailendra Chourey[3]	28-32
10.	वसुधैव कुटुम्बकम का आदर्श	डॉ. भुवनेश्वरी स्वामी	33-34
11.	वसुधैव कुटुम्बकम	अतुल मिश्रा	35-36
12.	व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्वपूर्ण भूमिका	डॉ. समता जैन	37-40
13.	मानव जीवन में संचार कौशल एक अध्ययन	मोहम्मद काशिफ तौफीक	41-42
14.	संचार कौशल व्यक्तित्व विकास	डॉ. अर्चना शर्मा शिवांगी शर्मा	43-44
15.	व्यक्तित्व विकास में संचार कौशल और डिजिटल शिष्टाचार की उपयोगिता	डॉ. सुनीता त्रिपाठी	45-48
16.	डिजीटल शिष्टाचार	ज्योति	49-54
17.	मानवीय लक्ष्य की पहचान और निर्धारण के लिए मानवीय दिशा का आकलन व परिणाम	डॉ. अभय वानखेड़े	55-57

18. वसुधैव कुटुम्बकम	डॉ. निखिल चौरसिया डॉ. गिरीश लांबा	58-60
19. राष्ट्रीय सेवा योजना का व्यक्तित्व विकास में योगदान	डॉ. प्रेरणा पंडित	61-62
20. व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान	डॉ. उमारतन नीलम चौधरी	63-65
21. व्यक्तित्व विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका	श्री मनोज राठौर	66-67
22. भारत के गौरवपूर्ण अतीत से स्वप्रेरणा प्राप्ति : व्यक्तित्व विकास का सेतु	डॉ. सुषमा जादौन	68-71
23. राजनीतिक परिदृश्य और व्यक्तित्व निर्माण	श्री दीपेश गौर	72-74
24. भारतीय महापुरुषों के प्रेरणास्पद विचार	प्रेमांशु	75-77
25. लक्ष्य निर्धारण : सफलता के मूल मंत्र	श्री योगेश धाकड	78-79
26. व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. सुरेन्द्र मोहन	80-82
27. व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण : एक व्यापक विश्लेषण	डॉ. भावना ठाकुर	83-86
28. व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान	श्री अनुराग रोकड़े	87-90
29. व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व	डॉ. प्रतीक्षा सावले	91-92

नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों से प्रेरित महापुरुषों के जीवन चरित्र से व्यक्तित्व विकास

डॉ. अनुपमा यादव, प्राध्यापक
बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल

भारत की संस्कृति को अति प्राचीनकाल से विश्व में अतीव आदरपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है जहाँ प्राचीन विश्व की समकालीन संस्कृतियाँ पूर्णतया काल–कवलित हो गयीं वहीं भारतीय संस्कृति आज भी जीवन्त है और यही अहसास भारतीयों को गौरवान्वित करता है भारत सदियों से विश्व का ना केवल आध्यात्मिक गुरु रहा है वरन् अनेक ऐसे महापुरुषों की जन्मभूमि है जिनके जीवन चरित्र ने व्यक्तित्व विकास की प्रेरणा भावी पीढ़ी को दी है।

संसार में वह इंसान महान माना जाता है जो धैर्य, संयम, नियम और अपनी मर्यादाओं में लगातार खरा उतरता रहा है। ऐसे व्यक्तियों के सान्निध्य में रहने से प्रेरणा मिलती है। महान व्यक्ति सबकी भलाई में अपनी जिन्दगी लगाता है। अपना सबकुछ देने की कामना रखता है। याचक बनकर दुनिया में नहीं जीता स्वावलम्बन के बल पर आगे बढ़ता है।

सम्मान जगत से पाता है हमारी भारतीय संस्कृति का तो आधार नैतिकता और आध्यात्मिकता रहा है और इस आधार ने ही शिक्षा, चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के माध्यम से अपनी भावी पीढ़ी को उच्च आदर्शों, अभीष्ठ आशाओं, उत्कृष्ठ आकांक्षाओं, सनातन मूल्यों, सतत् विश्वासों और प्राचीन परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृतिक धरोहर को हस्तान्तिरित किया है।

हमारे वेद पुराण स्मृतियाँ, उपनिषद और अन्य धार्मिक ग्रंथ, साहित्य, इतिहास, महापुरुषों जीवन चरित्र के प्रेरक प्रसंग ये सभी नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से प्रेरित हैं। इन्हें अपनाकर ही हम अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास और इस भौतिकवादी युग में भी अपने शाश्वत मूल्यों की रक्षा कर सकते हैं।

धृति क्षमा दमोअस्तेयं शौच निन्द्रिय निग्रह

धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणं

अर्थात धैर्य, क्षमता, शान्ति, लोभ ना करना इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, आक्रोध ये धर्म के दस लक्षण हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं। भारतीय परम्परा के उपनिषद नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों एवं आदर्शों की जननी है। उपनिषदों का मानस सत्य, मानव सुख और जनहित की कामना से ओतप्रोत है इसमें गुरू द्वारा शिष्य को आश्रम से विदा होते समय कुछ कर्त्तव्यों के अनुपालन के निर्देश देते थे।

सत्यं वद, धर्मचर, स्वाध्यान्माप्रमद

मातृदेवो भव। पितृदेवोभव आचार्य देवोभव, अतिथ देवो भव।

ये नैतिक निर्देश युवा पीढ़ी के लिए व्यक्तित्व विकास में आज भी सहायक है गीता का कर्मवाद युवा पीढ़ी को अपने वर्तमान और भावी जीवन में निरन्तर कर्म करने और जीवन को उन्नत बनाने का प्रयत्न करता है। गीता में निर्भयता, सहृदयता बुद्धिमता, दान, संयम, तप, यक्ष, स्वाध्याय, स्वावलम्बन सदाचरण सत्य, अकौध, कर्मफल, त्याग, शांति, अस्तैय, क्षमा, धैर्य, अहंकार हीनता, शुद्धता आदि सद्गुणों की ओर संकेत मिलता है। मनुष्य आदि को निष्काम कर्म करते हुए मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए यही गीता का अमृत संदेश है यदि रामायणकालीन आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को देखे तो मर्यादा अनेक रूपों में देखने को मिलती है। माता, पिता के प्रति कर्त्तव्य, भाई के प्रति अनुराग, असत्य के प्रति कठोर, सत्य के प्रति प्यार, कर्म को मनुष्य की पहचान, सद्कर्मो से व्यक्तित्व विकास जैसे कई उदाहरण देखने को मिलते है।

भारतीय इतिहास अनेक महापुरूषों के अद्भुत प्रेरक व्यक्तित्व व जीवन चरित्र से भरा है जो युवा वर्ग को यह प्रेरणा देते है कि हम भी अपने जीवन चरित्र एवं व्यक्तित्व को कैसे महान बना सकते हैं। अधिकांश महापुरूषों ने इस सत्य को

स्वीकार किया है कि कठिनाइयों से गुजरे बिना कोई अपने लक्ष्य को नही पा सकता जिस उद्देश्य का मार्ग कठिनाइयों के बीच नही जाता उसकी उच्चता में संदेह करना चाहिए महात्मा बुद्ध ने अनेक प्रेरक कहानिया एवं रूपक के माध्यम से अच्छे कर्म करते हुए दुख और बुराइयों को देखते हुए धैर्य और साहस बनाये रखने की प्रेरणा दी है इससे समस्याएँ धीरे–धीरे समाप्त होती जाएँगी।

स्वतंत्रता के पुरोधा, पथ प्रदर्शक महात्मा गांधी ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से देशवासियों को प्रेरित किया कि सत्य, प्रेम, अहिंसा जैसे आध्यात्मिक नैतिक मूल्यों को भी हथियार के रूप में अपनाकर आजादी प्राप्त की जा सकती है।

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानन्द एक कर्मयोगी थे उन्होंने भारत के सभ्यतागत मूल्यों पर पूरी आस्था रखते हुए युवाओं को अपनी आध्यात्मिक चेतना के साथ–साथ सामाजिक चेतना को भी जाग्रत रखने के लिए प्रेरित किया उनका कहना था निर्भय बनो। कभी भी यह मत सोचो कि तुम कमजोर हो। उठो, जागो और तब तक न रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।

हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के महान स्वतंत्रता सेनानियों ने आत्म स्वावलम्बन स्वाभिमान धैर्य की शिक्षा देकर जागरूक एवं प्रेरित करने का कार्य किया लाल, बाल, पाल ने स्पष्ट कर दिया कि हमारा आर्दा दया याचना नहीं, आत्मनिर्भरता है। स्वावलम्बन के आधार पर स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है।

महर्षि अरविन्द घोष ने व्यक्तित्व विकास की दिशा में आध्यात्मिक प्रेरणा दी उनका कहना था मनुष्य अपने आप में व्याप्त परम ब्रह्म को नहीं जानता इसे जान लेने पर ही आत्मानुभूति होती है। ऐसी अनुभूति होने पर आध्यात्मिक योग होता है मनुष्य के सभी कर्म ईश्वरीय प्रेरणा से होते है। अपने अन्तःकरण की आवाज सुनकर मनुष्य सदैव शुभ कर्म करता है और इससे उसके शरीर, मन, इन्द्रियाँ, बुद्धि, कर्म सभी शुद्ध हो जाते है। और उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास संभव हो पाता है। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा द्वारा व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को महत्वपूर्ण बताते हुए उच्च शिक्षा में इसकी अनिवार्यता बताते हुए राष्ट्र के नवयुवकों को आध्यात्म और विज्ञान का समन्वय करने का संदेश दिया।

ऐसे अनेक महापुरूषों के उदाहरण से भारतीय इतिहास भरा है जिन्होंने आध्यात्मिक नैतिक मूल्यों से ही अपने व्यक्तित्व को निखारा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा को केवल साक्षरता तक सीमित न रखकर उसमें ज्ञान, बुद्धिमत्ता दोनों का एक साथ समावेश करके विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से प्रशिक्षित करके उनमें आत्मबोध जागृत किया जाय राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा संस्कृति के आदर्श तत्वों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम के व्यक्तित्व विकास की संभावनाएँ व्यक्तित्व विकास को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके एक अनूठी पहल की है इससे विद्यार्थियों के बहुमुखी व्यक्तित्व के विकास की संभावनाएँ सार्थक होगी।

संदर्भ – ग्रंथ

1. अखण्ड ज्योति अप्रैल 2014 मथुरा।
2. कृतिका ''अन्तर्राष्ट्रीय रेफ्रीड शोध पत्रिका।
3. कृष्ण गोपाल भारत की संत परम्परा और सामाजिक समरसता।
4. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन सरकार एवं राजनीति जे. श्याम सुन्दरम, सी.पी. शर्मा।
5. शशि प्रभा ''स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास''।
6. जीवन संचेतना – सितम्बर 2016।
7. के.सी. श्रीवास्तव ''भारत की संस्कृति तथा कला''।
8. श्री ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद ''श्रीमद्भगवद्गीता।

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण

आदित्य कुमार (सहा. प्राध्यापक)
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, चौ0 चरण सिंह पी.जी. कॉलेज, हँवरा, सैफई, जनपद–इटावा (उ0प्र0)।

इस संसार में मनुष्य अपने नैतिक दायित्वों एवं आदर्शों का निर्वहन करने हेतु कुछ मानवीय मूल्यों को स्वयं में अन्तर्समाहित करता है जिसके कारण इस सृष्टि के सभी मनुष्य, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, पर्यावरण व अन्य जीव जन्तु व्यष्टिवादी चेतना के बाबजूद समष्टिवादी चरित्र को स्वयं में समेटे हुए हैं, जिन मूल्यों के कारण यह सम्भव हो सका है उसे चरित्र कहा जाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए हर मनुष्य के पास उत्तम चरित्र एवं मानवतावादी मूल्यों से सम्पोषित विचार अति आवश्यक हैं।

किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही उसका व्यक्तित्व कहलाता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार की विशेषता है जिसका प्रदर्शन उसके विचारों की आदत व्यक्त करने के ढंग, अभिवृत्ति एवं रूचि कार्य करने का ढंग और जीवन के प्रति उसके अन्तरिक विचाराधारा के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार चरित्र निर्माण व्यक्तित्व विकास का एक अंग है। व्यक्तित्व विकास के माध्यम से ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉ० अब्दुल कलाम व्यक्तित्व एवं नैतिकता पर बल देते हुए कहते हैं कि षकिसी भी समाज की समृद्धि के लिए के लिए दो बातें जरूरी हैं– धनोपार्जन के जरिये समृद्धि तथा लोगों की नैतिक मूल्य व्यवस्था को बनाये रखना। इन दोनों का मेल राष्ट्र को सही मायने में शक्ति सम्पन्न और समृद्ध बनाता है।''1

मानव जीवन का सबसे बड़ा धन चरित्र होता है। यह एक मनुष्य को सदमार्ग पर अग्रसर होने के लिए नैतिक बल प्रदान करता है। बिना चरित्र का ज्ञान भी सुगन्धित शव के समान होता है। यदि एक बार चरित्र का पतन हो जाता है तो उसकी भरपाई ताउम्र के सत्कर्मों से भी नहीं किया जा सकता है। उत्तम चरित्र परजोर देते हुए विली ग्राहम कहते हैं कि "When wealth is lost nothing is lost, When Health is lost something is lost, When character is lost all is lost-"2

निःस्वार्थ भाव ईमानदारी शुद्धता, पवित्रता, आत्म–सम्मान, दया, साहस, बफादारी, आदर, त्याग, अनुशासन और शतकर्म जैसे गुणों के मिले–जुले रूप को सदचरित्र कहा जाता है। यह व्यक्ति में आत्मबल, णनिश्चय, धौर्य और विवेक का विकास करता है। इन सदगुणों से सम्पन्न पुरूष संसार की सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त कर सकता है। श्रीमद् भगवत गीता में श्रीष्ण इन्हीं भावनाओं एवं सतकर्मों पर जोर देते हुए कहते हैं कि–

''श्रद्धावाल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्धा परांशान्तिमचिरेणाधि गच्छति।।''3

व्यक्तित्व विकास के माध्य से ही मनुष्य इस संसार के अनन्त संभावनाओं का लाभ उठा सकता है। आत्म विश्वास से भरा हुआ सकारात्मक विचार वाला, धैर्यशील, अनयक कर्मयोगी ही राष्ट्र के विकास में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाकर समाज के लिए आदर्श स्थापित करते हैं। व्यक्तित्व विकास के सभी मनोभावों एवं कर्मों की प्रचण्ड सार्थकता को दर्शाते हुए डॉ० कलाम कहते हैं कि ''हमें व्यापक ष्टि से सोचना चाहिए। हमारा दृष्टिकोण निडर होना चाहिए क्योंकि ताकत से ही इज्जत मिलती है।''4

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तेजस्वी मन, प्रभात प्रकाशन संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या–56

2. https:@@www-brainquote-com@quotes@billy&graham161989

3. श्री अड़गड़ानन्द जी यथार्थगीता, प्रकाशन स्वामी अड़गड़ानन्द जी आश्रम ट्रस्ट संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या–125

4. महेन्द्र कुलश्रेष्ठ : झोपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक, राज्यपाल प्रकाशन संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या–111

अष्टांगयोग से संयत जीवन

विनीता (असिस्टेंटप्रोफेसर, वाणिज्यविभागाध्यक्ष)
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांधला (शामली)
जटाशंकर यादव (असिस्टेंटप्रोफेसर,हिंदी विभाग)
चौधरी चरण सिंह पीजी कॉलेज, हेवरा, सैफई, इटावा.।

मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज तक के इसकी विकास यात्रा का सर्वोच्च लक्ष्य आनंदावस्था को प्राप्त करना रहा है। इस चरम उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए देश, कालऔर परिस्थितियों के अनुसार मनुष्य मन, विचार और कर्म के स्तर पर अपने सिद्धांतों को निर्धारित करता रहा है।अपने इसी साध्य (मुक्ति/आनंद)की प्राप्ति के लिए मानव ने 'अष्टांगयोग' जैसी विशिष्ट पद्धति को सर्वोच्च प्राथमिकता दिया; जिसे 'राजयोग' भी कहां जाता है। अष्टांगयोग के प्रथम प्रस्तोता महर्षि पतंजलि है। राजयोग/अष्टांग योग को विकसित करने और सर्वाधिक प्रसिद्धि दिलाने वाले युगपुरुष स्वामी विवेकानंद हैं।

योग का मूल अर्थ जोड़ना है। पतंजलि ने अपनी 'योगसूत्र' में योग की निम्नलिखित परिभाषा दिये – "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"1अर्थात चित्रवृत्तियों के निरोध को योग कहते हैं। ऐसी अवस्था जो संसार के संयोग और वियोग से रहित हैं उसी का नाम योग है; जो आत्यंतिक सुख है यह मिलन का नाम योग है इसमें परम तत्व परमात्मा से आत्मा का मिलन होता है। भगवान श्री ष्ण श्रीमद्भागवत गीता में योग के संदर्भ में अर्जुन से कहते हैं कि–

" तंविद्याद्दुःखसंयोगवियोगंयोगसंज्ञितम्।

सनिश्चयेनयोक्तव्योयोगोऽनिर्विण्णचेतसा।।''2

आधुनिक परिपेक्ष्य में , हिंदुओं के छः दर्शनों में से एक दर्शन 'योग' है। इसी योग को विकसित करने और कार्य व्यवहार में लाने के लिए 'अष्टांगयोग' पद्धति का सहारा लिया जाता है ; जो निम्नलिखित आठ चरणों से होकर गुजरता है–

यम – नियम –आसन– प्राणायाम– प्रत्याहार– धारणा–ध्यान –समाधि

अष्टांगयोग का प्रथम चरण (यम) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य के सभी क्रियाकलाप मन द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होते हैं इसलिए अष्टांग योग के इस अवस्था में मन की सर्वाधिक महत्ता है 'यम' के प्रमुख भाग निम्न है–

1. मन, कर्म और वचन से हिंसा तथा लोभ न करना
2. मन, कर्म और वचनके स्तर से पूर्ण सत्यता एवंपवित्रता
3. चोरी न करना

अष्टांगयोग का द्वितीय अंग 'नियम' है। इसमें मनुष्य के शरीर की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन के अनुशासित कार्य व्यवहार एवं आहार–विहार पर जोर दिया जाता है इसके बिना मनुष्य शारीरिक और मानसिक रूप सेक्षीण एवं रोगी हो जाता है।

श्रीमद् भागवत के अनुसार–

"युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्टस्यकर्मसु।

युक्तस्वप्नवबोधस्ययोगोभवतिदुःखहा।''3

अर्थात दुखों का नाश करने वाला यह 'नियम' आहार –विहार, कर्मों मेंउपयुक्त चेष्टा और संतुलित शयन–जागरण करने वाले का ही पूर्ण होता है।

तृतीय चरण को 'आसन' कहा जाता है। इसके तहत योग साधक को मेरुदंड के ऊपर बिना जोर दिए कमर ,गर्दन और सिर को सीधा रखना पड़ता है। 'आसन' के संदर्भ में श्री ष्ण उपदेश देते हुए कहते हैं कि–

" समंकायशिरोग्रीवंधारयन्नचलंस्थिरः।

संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चानवलोकयन्।"4

अष्टांग योग का चतुर्थ अंग 'प्राणायाम' है इसके अंतर्गत प्राण वायु/जीवन शक्ति को वशीभूत करने के लिए श्वास/प्रश्वास को संयमित किया जाता है।

राजयोग साधना का पंचम चरण'प्रत्याहार'कहलाता हैइसका उद्देश्य मन को बहिर्मुखी होने से रोक कर अंतर्मुखी करना है। किसी भी विकार (काम, क्रोध, मोह और लोग) से मन को नियंत्रित करके परमतत्व /साध्य पर विचरण कराना ही प्रत्याहार कहलाता है।

अष्टांगयोग षष्ठ का चरण 'धारणा' है इसके तहत मन को लक्ष्य पर केंद्रित करना होता है धारणा अवस्था की प्राप्ति चेतन एवं अवचेतनमन समग्र शक्तियों के संकेंद्रण से होता है।

'ध्यान' अष्टांग योग का सप्तम चरण है इहलौकिक एवं पारलौकिक इच्छाओं को पूर्णाभूत करने के लिए 'ध्यान' सर्वोच्च अंग के रूप में स्वीकार्य हैं।

अष्टांग योग का अंतिम अंग अष्टम चरण 'समाधि' है। समाधि अवस्था ही इस साधना का अंतिम लक्ष्य होता है। इस अवस्था को प्राप्त मनुष्य सभी इच्छा, कर्म के बंधन से मुक्त होकर समभाव की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। लाभ–हानि, सुख–दुख, जय–पराजय से ऊपर उठकर समास्थ मनुष्य कर्मयोगी बन जाता है।

इस प्रकार "जब हम अपने जीवन व चेतना को अंतर्मुखी करके अपने अंदर की ओर चलना प्रारंभ कर देते हैं तो स्थूल शरीर (विषय आनंद), सूक्ष्म शरीर (वासना आनंद) और कारण की आवरण भेदकर आत्मसाक्षात्कार की मंजिल तक पहुंच जाते हैं।"5 इस अवस्था में पहुंचकर ही संयत जीवन अक्षय व शाश्वत आनंद की प्राप्ति होती है। यही मानव–जीवन का चरम लक्ष्य और सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है।

संदर्भ सूची

1. इतिमार्ग की साधना–पद्धति प्रकाशक अखिल भारतीय संतमत सत्संग, अष्टम संस्करण–2017, पृष्ठ संख्या–132

2. स्वामी श्री अड़गड़ानंद जीः यथार्थ गीता, प्रकाशक–स्वामी अड़गड़ानंद जी आश्रम ट्रस्ट, संस्करण–2018,पृष्ठ संख्या–152

3. वही पृष्ठ संख्या–150

4. वही पृष्ठ संख्या–149

5. इति मार्ग की साधना पद्धति, प्रकाशक–अखिल भारतीय संतमत सत्संग,नवम संस्करण–2017,पृष्ठ संख्या–53.

Health benefits of Balanced Diet: A brief review

Dr. Aradhana Verma
Department of Chemistry, Govt. Geetanjali Girls College, Bhopal

Abstract

A balanced diet means eating a wide variety of foods in the right proportions and consuming the right amount of food and drink to achieve and maintain a healthy body weight. A balanced diet contains are sufficient amount of different nutrients that ensure good health. A food plan consisting of a combination of all kinds of vitamins, minerals, proteins, carbohydrates and fats to make a person healthy and get all the benefits . The importance of a balanced diet can't be emphasized enough for a healthy life style.Good nutrition, physical activity and healthy body weight are essential parts of a person's overall health and well being.Safe, sustainable and balanced diet can satisfy the gap between nutrients requirements and current intakes are needed to rectify undernutrition, overnutrtion and micronutrients deficiencies.

Key words: Balanced diet, nutrients, health

Introduction

Diet is a necessary for appropriate growth development and activity from the beginning of life food intake which is strongly influenced by production distribution cultural and social leaves impacts the populations health and nutritional conditions without balanced nutrition your body is more prone to diseases infections fatig and low performance children who don't get enough healthy foods may face growth and developmental problems, poor academic performance and frequent infections.

Components of balanced diet

There are 7 essential factors for a balanced diet carbohydrate protein fat fibre vitamins minerals and water. Carbohydrate carbohydrate play important role within our body they are primary energy source that our brain and muscles use carbohydrate are energy foods and provide four calories per gram carbohydrates should comprise refly 60% of a person's diet. Protein is used by our body helps us developed and grow properly. Protienis an important part of a healthy diet. Proteins are made up of chemical 'building blocks' called amino acids. Your body uses amino acids to build and repair muscles and bones and to make hormones and enzymes. They can also be used as an energy source.

A small amount of fat is an essential part of a healthy, balanced diet. Fat is a source of essential fatty acids, which the body cannot make itself. Fat helps the body absorb vitamin A, vitamin D and vitamin E. These vitamins are fat-soluble, which means they can only be absorbed with the help of fats.Vitamins and minerals are essential for bodily functions such as helping to fight infection, wound healing, making our bones strong and regulating hormones. Vitamins and minerals can cause toxicity if consumed in large amounts.

Benefits of Healthy Eating

- May help you live longer.
- Keeps skin, teeth, and eyes healthy.
- Supports muscles.
- Boosts immunity.
- Strengthens bones.
- Lowers risk of heart disease, type 2 diabetes, and some cancers.
- Supports healthy pregnancies and breastfeeding.
- Helps the digestive system function.

Conclusion

Healthy lifestyle can be attained by maintaining a balanced diet and keeping into consideration to meet all the essential nutrients required by the body. A proper meal plan helps to attain ideal body weight and reduce the risk of chronic diseases like diabetes, cardiovascular and other types of cancer.

छात्रों के व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान

डॉ. गीता चौहान,
सहा.प्राध्यापक (समाज शास्त्र), बाबूलाल गौर शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल

प्रस्तावना–

राष्ट्रीय सेवा योजना युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित केंद्र प्रवर्तित महत्वाकांक्षी योजना है। राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य '' स्वयं से पहले आप'' (Not me but you) है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का उददे्श्य–

समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है

इसके विशिष्ट उददे्श्य

- जिस बस्ती गॉव /ग्राम समुदाय में कार्य करते है उसे समझना ।
- बस्ती बस्ती गॉव /ग्राम समुदाय के परिपेक्ष्य में स्वयं को समझना।
- जिस बस्ती गॉव /ग्राम समुदाय की उन समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पहचान करना जिनके समाधान में वे सहभागी हो सके ।
- सामाजिक दायित्व एवं नागरिक बोद्ध का विकास करना ।
- कठिनाईयों के व्यवहारिक निराकरण ढूॅढने में शिक्षा एवं ज्ञान को लागू करना।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
- सहभागिता सक्रिय करने हेतु कौशल का विकास करना।
- समूह–जीवन हेतु आवश्यक गुणों का विकास करना ।
- प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण एवं नेतृत्व के गुणों का विकास करना।
- संकट एवं प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने की क्षमता का विकास करना ।
- राष्ट्रीय एकता को व्यवहारिक स्वरूप देना।

''उठो जागो और तब तक नहीं रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'' स्वामी विवेकानंद जी के इस प्रेरणादायक आदर्श वाक्य से विश्व के समस्त युवाओं को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरणादायक ऊर्जा मिलती रहती है। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से स्वयं सेवकों को समाज के सभी वर्गो की सेवा करने का अवसर मिलता है। इस कार्यक्रम योजना से जुड़ने से स्वयंसेवकों को केद्र शासन एवं राज्य शासन की विभिन्न योजनाओं उसके क्रियान्वयन इत्यादि के बारे में ज्ञात होता है। स्वयंसेवक नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर वहां के जनसामान्य को जागरूक करने, योजनाओं, लाभों और समाज में फैली भ्रांतियां के दुष्परिणामों को बताते हैं।

इतिहास, प्रतीक चिन्ह एवं सेवा अवधि

राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरूआत श्री आर.वी.राव. ने 24 सितंबर 1969 में की थी। शुरूआत में इसे 37 विश्वविद्यालयों में शुरू किया गया था, जिसमें लगभग 40,000 स्वयं सेवकों को शामिल किया गया था। समय बीतने के साथ यह अखिल भारतीय कार्यक्रम बन गया।

भारत के उड़ीसा में स्थित विश्व प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर (काला शिवालय) के विशाल रथ पहिए पर आधारित हैघ सूर्य मंदिर के ये विशाल चक्र सृजन, संरक्षण और निर्मुक्ति के आवर्तन को अभिव्यक्त करते है तथा काल और स्थान से पूरे जीवन में गति का महत्व बताते है। प्रतीक का अभिकल्प सूर्य रथ के चक्र का सरलीकृत रूप है, जो मुख्यत': गति को दर्शाता है यह निरंतरता समाज में परिवर्तन लाने और उसे उन्नत करने के लिए निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रयास करने का द्योतक है।

राष्ट्रीय सेवा योजना बैज में कोणर्क पहिए के अनुसार 8 बार होते हैं जो 8 प्रहर को दर्शाती है। यह बैज धारण करने वाले को राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार रहने की याद दिलाता है। प्रतीक चिन्ह में निहित लाल एवं नीले रंग स्वयंसेवकों को राष्ट्र निर्माण, सामाजिक गतिविधियों के सक्रिय और ऊर्जावान होने के लिए प्रेरित करते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना में विद्यालय स्तर पर 'ए' प्रमाण पत्र, महाविद्यालय स्तर पर 'बी' प्रमाण पत्र एवं 'सी' प्रमाण पत्र दिया जाता है। जिसे प्राप्त करने के पश्चात स्वयं सेवकों को विभिन्न क्षेत्रों में अधिभार मिलता है। इस योजना से युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अनुभव प्रदान किया जाता है। समाज सेवा के माध्यम से छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का विकास करना है अर्थात जो कार्य विद्यार्थी अपने आप नहीं सीख सकते वह राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से सीखते हैं। समाज के जो वंचित तबके के व्यक्ति हैं उनके समीप जाकर शासन की योजनाओं से अवगत कराते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान, मतदाता, जागरूकता अभियान, वृक्षारोपण, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ, लाडली बहना योजना, टीकाकरण अभियान, एड्स जागरूकता कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान इत्यादि के सबंध में समाज को जागरूक करना एवं इससे संबंधित क्रियाकलापों को संपन्न किया जाता है।

सात दिवसीय विशेष शिविर कार्यक्रम

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल का सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन विद्यापीठ ग्रुप ऑफ इंस्टिटयूशन न्यू एसओएस बाल ग्राम खजूरी कलॉ ग्राम पिरिया भोपाल में दिनांक 19 मार्च 2023 से 25 मार्च 2023 तक किया गया। उक्त शिविर स्वास्थ्य स्वच्छता एवं व्यक्तिगत स्वास्थ्य थीम पर आयोजित किया गया।

शिविर स्थापना के अंतर्गत विद्यार्थियों ने शिविर परिसर की साफ–सफाई की। कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा शिविर के सुचारू संचालन हेतु विभिन्न समितियां गठित की गई, एवं इनके अंतर्गत किए जाने वाले कार्यो की जानकारी शिविरार्थियों को प्रदान की गई। विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिए स्थान चिन्हित कर आवश्यक पोस्टर बैनर, दिनचर्या एवं दिशा निर्देश लगाए गए। शिविरार्थियों द्वारा आकर्षक रंगोली एवं राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह बनाया गया। साथ ही राष्ट्रीय सेवा योजना का ध्वजारोहण कार्यक्रम किया गया। प्रतिदिन शिविर की शुरूआत विद्यार्थियों द्वारा सद्भावना एवं प्रेरणादायक गीत, प्रभात फेरी के साथ की जाती थी। जिसके पश्चात व्यायाम योगा स्वयंसेवको द्वारा नियमित अभ्यास किया जाता था। परियोजना कार्य के अंतर्गत ग्राम पीरिया में जनसंपर्क कर ग्रामवासियों को शिक्षा और साक्षरता के महत्व से अवगत कराया। इसके साथ ही विद्यार्थियों ने ग्रामवासियों को बाल अधिकार विषय पर चर्चा कर जागरूकता कार्यक्रम किया।

शिविरर्थियों द्वारा एसओएस बालग्राम का भ्रमण किया गया, जहां पर स्वयंसेवकों ने संस्था की कार्यप्रणाली को जाना एवं संस्था के निवासरत दिव्यांग बच्चों के प्रति माताओं और कर्मचारियों के समर्पण और सेवा की सर्वोत्तम मिसाल से अवगत हुए। बौद्धिक सत्र में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. मीता बादल ने अपने व्याख्यान में पौष्टिक भोजन के महत्व एवं उसके अभाव में होने वाले स्ट्रेस की जानकारी दी। उन्होंने मानसिक तनाव कम करने के कई कारगर उपाय बताएं। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना गणतंत्र दिवस परेड में शामिल श्री ऋषभ शर्मा ने जीवन में अनुशासन के महत्व को बताते हुए स्वयंसेवकों को परेड का प्रशिक्षण प्रदान किया। ग्राम संपर्क के दौरान माताओं बहनों को आयरन कैल्शियम युक्त भोज्य पदार्थो के अधिकाधि सेवन की सलाह दी गई।

एम्स भोपाल के डॉक्टर अलका असाटी, डॉक्टर मनकम एवं शिविरार्थियों के द्वारा ग्रामवासियों को उत्तम स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महत्वपूर्ण परामर्श दिये गये। बौद्धिक सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना गणतंत्र

दिवस परेड में शामिल श्री अक्षय तिवारी, श्री केशव मिश्रा, सुश्री भावना द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व एवं कर्त्तव्य पर प्रेरक व्याख्यान दिया गया। ग्राम संपर्क के दौरान ग्राम वासियों को मादक पदार्थो के दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए इसका सेवन नहीं करने की सलाह दी गई।

स्वच्छता अभियान के अंतर्गत ग्रामवासियों को साफ–सफाई के महत्व एवं दूषित जल से होने वाली बीमारियों से अवगत कराया गया। स्वयंसेवकों द्वारा गांव की पानी की टंकियों का निरीक्षण किया गया। और उनकी सफाई करने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। स्वयं सेविकाओं द्वारा महिलाओं एवं किशोरियों को व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व से अवगत कराया गया एवं ग्रामवासियों को पोस्टर प्रदर्शनी के माध्यम से एड्स के प्रति जागरूक किया गया।

ग्राम संपर्क के अंतर्गत ग्रामवासियों को डिजिटल पेमेंट के लाभ समझाते हुए। ऑनलाइन पेमेंट के लिए प्रोत्साहित किया गया। गांव से लौटकर शिविर परिसर में पौधारोपण किया गया।

निष्कर्ष –

उपरोक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयं सेवको को शासन की योजनाओं का ज्ञान ,जागरूकता एवं क्रियांन्वयन संबंधि क्रियाकलाप करने से सामूहिक कार्य करने की समझ विकसित होना, समस्याओं के निराकरण संबंधी ज्ञान होने के कारण आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व विकास में मदद मिलती है । अतः राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं को अभिलेखिय ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यो के प्रति प्रेरित कर समाज सेवा का अवसर प्रदान करती है और उनके व्यक्तित्व को निखारने एवं भविष्य में उन्हें कर्तव्यनिष्ठ संवेदनशील तथा उपयोगी नागरिक के रूप में सवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

संदर्भः–

1 मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग (जुलाई 1990) पाठ्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना ए बी एवं सी प्रमाण पत्र की निर्धारित गतिविधियॉ एवं क्रियांन्वयन मार्गदर्शिका ,पृष्ठ क्रमांक 2–3

2 राष्ट्रीय सेवा योजना संहिता मध्यप्रदेश शासन ,उच्च शिक्षा विभाग (1997) पृष्ठ क्रमांक. 123 –138

3 राष्ट्रीय सेवा योजना बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल (2022–23), पृष्ठ क्रमांक. 05–11

4 कार्यालय प्राचार्य बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल भोपाल का पत्र 594/बा गौ शा भे म/23 भोपाल दिनाँक 23/05/2023

महापुरुषों के जीवन चरित्र से प्रेरणा

डॉ. रितु यादव
शोधार्थी, CSJMU कानपुर

भारत एक ऐसा देश है जो सदैव अपनी संस्कृति और दीपक के समान प्रज्वलित होने वाले महापुरुषों के लिए विश्वविख्यात है। भारतीय परिदृश्य में देखा जाए तो ऐसे दैवीय गुणवाले महापुरुष असंख्य है, ऐसे महापुरुषों का जन्म तत्कालीन कुरीतियों को दूर करने के लिए होता है। ऐसे महान ज्योति स्तम्भ सत्य के प्रचार प्रसार और मानव संस्कार के लिए आते हैं। बुद्ध, ईसा, चैतन्य, रामकृष्ण, अरविन्द, गाँधी, राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बाल गंगाधर तिलक, विवेकानन्द, अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचन्द्रबोस, डॉ.अब्दुल कलाम आदि आध्यात्मिक शक्ति होने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। इनके विचारों से हमें प्रेरणा मिलती है।

महापुरूष राष्ट्र निर्माता होते हैं। वे दूसरे के चरित्र का अनेक प्रकार से निर्माण करते हैं। अपने चरित्र बल से वे अपने देशावासियों को उन्नति पथ पर अग्रसर होने में सहायता करते हैं मनुष्य में आदर्श की प्रेरणा एक ऐसा गुण है कि अपने चतुर्दिक भावनाओं को गृहण करता है। सफल जीवन के आदर्श अनेकों को कार्य की ओर प्रबल करते है सत्य तथा आनंद के वातावरण में परिचालित बालक निश्चय ही उत्तम और उपकारी मनुष्य बनेगा।

श्रीमद्भगवत गीता में सात्विक ज्ञान की बातें कही गई हैं जिसके द्वारा हम अनेकता में एकता अनुभव करते हैं तथा ब्रह्म ळवक का सभी प्राणियों में वास देखते हैं इस प्रकार गीता दर्शन के अनुसार सच्ची प्रेरणा वह है जो हमें हर व्यक्ति की आत्मा में परमेश्वर का अस्तित्व देखना सिखाती है। युद्ध के प्रारम्भ में अर्जुन भ्रमित था कृष्ण (गुरू) ने सम्पूर्ण को एक व्यक्ति में (स्वयं के विराट रूप में) मूर्तिमान दिखाया। इस प्रकार कृष्ण ने अर्जुन को प्रेरणा देते हुए कहा कि वह किसी आत्मा को मार नहीं सकता क्योंकि वह तो ब्रह्म में वास करती है। श्रीकृष्ण की प्रेरणा से ही अर्जुन विजय पथ तक पहुंच पाए।

महापुरुषों के गुणों, शिक्षा सिद्धान्तों व आदर्शों को जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है तथा जीवन को कैसे जिया जाए यह सीख मिलती है। ज्ञान जीवन में अनेकों समस्याओं का सामना करता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए समस्याऐं उसके समक्ष जरूर आती हैं महापुरुषों के जीवन चरित्र से हमें सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान मिलता है। जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी हमें आगे बढ़ने के लिये सदैव प्रेरित करती है। महापुरुषों की स्तुति करने से जीवन को समयक ज्ञान, श्रृद्धा, चिंतन मनन, शक्ति और सदाचरण करने का बल प्राप्त होता है।

महापुरुष सिर्फ विचारों से ही नहीं, कर्मों से भी अनुकरणीय होते हैं महात्मा गांधी ने कहा था मेरा जीवन ही संदेश है। यह बात विवेकानन्द ने की तो लेकिन उनका जीवन निश्चित तौर पर अनुकरणीय संदेश के तौर पर हमारे सामने उपस्थित है विवेकानन्द के जीवन के कार्य ऐसे प्रसंग विभिन्न किताबों में मिलते हैं। जिनसे काफी कुछ सीखा जा सकता है, विवेकानन्द के जीवन से जुड़े प्रसंग सम्पूर्ण मानवजाति के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार कोई व्यक्ति अपने आप स्वयं ही सीखता है बाहरी शिक्षक तो केवल सुझाव ही प्रस्तुत करता है जिससे भीतरी शिाक्षक को समझने और सीखने के लिए प्रेरणा मिलती है। उनके अनुसार शिक्षा को निषेधात्मक बताया। शिक्षा जनसाधारण को जीवन—संघर्ष के लिए तैयार नहीं कर सकती जो चरित्र निर्माण नहीं कर सकती तथा जो शोर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती ऐसी शिक्षा से क्या लाभ है हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति में वृद्धि होती है बुद्धि विकसित होती है तथा जिसको प्राप्त करके व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। स्वामी विवेकानन्द ने सैध्दान्तिक की अपेक्षा व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दियाहै। वे कहते हैं तुमको कार्य के प्रत्येक क्षेत्र को व्यावहारिक बनाना पड़ेगा। सम्पूर्ण देश का सिद्धान्तों के देशों ने विनाश कर दिया है।

इसी प्रकार गाँधीजी के विचारों ने भारतीय समाज में नयी क्रांति को जन्म दिया देश के लिये एक नई शिक्षा—योजना तैयार की जो बुनियादी शिक्षा के नाम से जानी जाती है। आज देश में लोग कहीं भाषा के नाम पर झगड़ रहे हैं तो कहीं जाति, क्षेत्र और धर्म के नाम पर लोग बस एक दूसरे के दुशमन बने हुए हैं गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा

लोकजीवन से जुड़ी है उनके शिक्षा दर्शन से बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है। भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सकता है तथा सामाजिक समानता व सामाजिक न्याय दिलाया जा सकता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि बिना स्त्रियों को शिक्षित किये हम अपने देश और समाज का उद्धार नहीं कर सकते। टैगोर ने स्त्री शिक्षा की पूरी रूपरेखा तैयार की थी। टैगोर ने स्पष्ट किया कि देश के आर्थिक विकास के लिए व्यावसायिक शिक्षा अतिआवशयक है चूँकि हमारा देश कृषिप्रधान देश है इसलिए यहाँ कृषि एवं कुटीर उद्योगों की शिक्षा की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए आधुनिक विज्ञान और तकनीकी से भी यह वंचित नहीं रहना चाहते थे और भारी उद्योगों के लिए इस प्रकार की शिाक्षा की व्यवस्था आवशयक समझते थे। टैगोर अन्तरराष्ट्रीयता के प्रतीक थे इन्होनें अपनी भाषा साहित्य और धर्मदर्शन के साथ–साथ विश्व की अन्य भाषाओं, साहित्यों, धर्मों और दर्शन के अध्ययन पर भी बल दिया है।

टैगोर के जीवन चरित्र से जन साधारण को अभिप्रेरणा मिलती है।

इस प्रकार टैगोर, अरविन्द, गाँधी, विवेकानन्द, राजा राममोहनराय, बालगंगाधर, नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस आदि आध्यात्मिक शक्तियों ने अपने जीवन चरित्र के माध्यम से विचारों के माधयम से राष्ट्र का निर्माण किया तथा भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने। इन ज्योति स्तम्भों के विचारों से सम्यक् ज्ञान, श्रद्धा, चिंतन मनन श्शक्ति और सदाचरण आत्मसात् करने का बल प्राप्त होता है तथा समस्या समाधान करने की प्रेरणा प्राप्त होती है अतः महापुरुषों का जीवन चरित्र मनुष्य के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है।

राष्ट्र, राष्ट्रीयता और स्वाधीनता का गौरव

साक्षी शर्मा
रिसर्च स्कॉलर

राष्ट्र एक राष्ट्रीयता है । जिसने अपने को एक राजनीतिक समूह के रूप में संगठित कर लिया है और जो स्वाधीन है।

– ब्राइस

सन 1947 भारत के लिए यह वह दौर था जहां आजादी के साथ–साथ विश्व में लोकतंत्र के हर समर्थक के लिए उत्सव का विषय था जहां विश्व पटल पर उभरते हुए राष्ट्र को पहले से चली आ रही अन्य देशों की राष्ट्रीयता की परिभाषा कोभारत भारत के प्राचीन जीवन मूल्य के समावेश के साथ–साथ आधुनिक युग की आकांक्षाओं की पूर्ति भी करनी थी।

जब भारत स्वाधीन हुआ तो अनेक अंतरराष्ट्रीय नेताओं और विचारकों ने हमारी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली की सफलता के विषय में आशंका व्यक्त की थी। उनकी इस आशंका के कई कारण भी थे। उन दिनों लोकतंत्र आर्थिक रूप से उन्नत राष्ट्रों तक ही सीमित था। विदेशी शासकों ने वर्षों तक भारत का शोषण किया था। इस कारण भारत के लोग गरीबी और अशिक्षा से जूझ रहे थे। लेकिन भारतवासियों ने उन लोगों की आशंकाओं को गलत साबित कर दिया।

पिछले 75 सप्ताह से हमारे देश में स्वाधीनता संग्राम के महान आदर्शों का स्मरण किया जा रहा है। 'आजादी का अमृत महोत्सव' मार्च 2021 में दांडी यात्रा की स्मृति को फिर से जीवंत रूप देकर शुरू किया गया। उस युगांतरकारी आंदोलन ने हमारे संघर्ष को विश्व–पटल पर स्थापित किया।

तो ऐसी बात जिसकी वजह से "राष्ट्र का गौरव बढता हो" अब वह चाहे संसति या धर्म हो साहित्यया विज्ञान में उन्नति हो कला, स्थापत्य की बात हो वहीं कह सकते हैं राष्ट्र राष्ट्रीयता और स्वाधीनता का गौरव।

थोड़ा गहराई में समझे तो राष्ट्र और राष्ट्रीयता क्या एक ही अर्थ रखते हैं या इनमें भी कोई अंतर है!

शुरुआत करते हैं राष्ट्र से, जब किसी समाज में सारे व्यक्ति किसी निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के अन्दर अपने पारस्परिक भेद–भावों को भुलाकर सामूहीकरण की भावना से प्रेरित होते हुए एकता के सूत्र में बन्ध जाते हैं तो उसे राष्ट्र के नाम से पुकारा जाता है।

गार्नर के अनुसार

राष्ट्र सांसतिक रूप से संगठित और एक समरूप है। यह सामाजिक समूह है जिसे अपने मनोवैज्ञानिक जीवन की एकता और अभिव्यक्ति का ज्ञान है और जो इसके प्रति चेतन और ढ़ हैं।

अब अगर हम बात करते हैं राष्ट्रीयता की तो इसकी कोई निश्चित परिभाषा नहीं है क्योंकि आरंभ में राष्ट्रीयता को जातीय वंश के नाम से संबोधित किया जाता था और वर्तमान में इसको मनुष्य की भावनाओं के नाम से भी जाना जाता है।

जान लेते हैं कि अलग–अलग विद्वानों ने राष्ट्रीयता के बारे में क्या कहा है।

जे. एच. रोज के अनुसार....

राष्ट्रीयता स्वयं की वह एकता है जो एक बार बन जाए। बन जाने के बाद कभी नहीं टूटती।

गिलक्राइस्ट ने राष्ट्रीयता के बारे में कहा है कि.....

राष्ट्रीयता एक आध्यात्मिक भावना है जिसकी उत्पत्ति उन लोगों से होती है जो साधारण तथा एक जाति के होते हैं। एक भूभाग पर रहते हैं तथा जिनका एक भाषा धर्म इतिहास है।

वहीं अंतर स्पष्ट करें तो राष्ट्र सांस्तिक अवधारणा को दर्शाता है, किंतु राष्ट्रीयता मानसिक अवधारणा के बारे में बताता है। राष्ट्र का आधार राष्ट्रीयता है। परंतु राष्ट्रीयता का आधार राष्ट्र नहीं है। राष्ट्र का स्वरूप आध्यात्मिक तथा सांस्तिक होता है जबकि राज्य का स्वरूप एक राजनीतिक ष्टिकोण वही मानसिक अवधारणा के बारे में बताता है।

देशवासियों द्वारा हासिल की गई सफलता के आधार पर 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण का संकल्प भी स्वाधीनता के गौरव का हिस्सा है।

'स्वदेशी समाज' शीर्षक से अपने ऐतिहासिक निबंध में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिखते हैं 'हमें सबसे पहले हम जो हैं वह बनना पड़ेगा।' यह अद्भुत संयोग ही है कि आज जब हमारा देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाने जा रहा है तब एक ऐसा कालखंड आया है, जब एक राष्ट्र के नाते भारत अपने 'स्व' के आधार पर अपनी एक नई पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है।

हर आयु वर्ग के नागरिक पूरे देश में आयोजित इस महोत्सव के कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। यह भव्य महोत्सव अब 'हर घर तिरंगा अभियान' के साथ आगे बढ़ रहा है। आज देश के कोने–कोने में हमारा तिरंगा शान से लहरा रहा है। स्वाधीनता आंदोलन के आदर्शों के प्रति इतने व्यापक स्तर पर लोगों में जागरूकता को देखकर हमारे स्वाधीनता सेनानी अवश्य प्रफुल्लित हुए होते।

मैं मानती हूं कि भारत की यह उपलब्धि केवल संयोग नहीं थी। सभ्यता के आरंभ में ही भारत–भूमि के संतों और महात्माओं ने सभी प्राणियों की समानता व एकता पर आधारित जीवन–ष्टि विकसित कर ली थी। महात्मा गांधी जैसे महानायकों के नेतृत्व में हुए स्वाधीनता संग्राम के दौरान हमारे प्राचीन जीवन–मूल्यों को आधुनिक युग में फिर से स्थापित किया गया। इसी कारण से हमारे लोकतंत्र में भारतीयता के तत्व दिखाई देते हैं।

एक राष्ट्र के लिए विशेष रूप से भारत जैसे प्राचीन देश के लंबे इतिहास में 75 वर्ष का समय बहुत छोटा प्रतीत होता है। लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर यह काल–खंड एक जीवन–यात्रा जैसा है। हमारे वरिष्ठ नागरिकों ने अपने जीवनकाल में अद्भुत परिवर्तन देखे हैं। वे गवाह हैं कि कैसे आजादी के बाद सभी पीढ़ियों ने कड़ी मेहनत की, विशाल चुनौतियों का सामना किया और स्वयं अपने भाग्य–विधाता बने। इस दौर में हमने जो कुछ सीखा है वह सब उपयोगी साबित होगा क्योंकि हम राष्ट्र की यात्रा में एक ऐतिहासिक पड़ाव की ओर आगे बढ़ रहे हैं। हम सब 2047 में स्वाधीनता के शताब्दी–उत्सव तक की 25 वर्ष की अवधि यानि भारत के अमृत–काल में प्रवेश कर रहे हैं।

अधिकांश लोकतान्त्रिक देशों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा था। लेकिन हमारे गणतंत्र की शुरुआत से ही भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया।

हमारा गौरवशाली स्वाधीनता संग्राम इस विशाल भारत–भूमि में बहादुरी के साथ संचालित होता रहा। अनेक वीर योद्धाओं तथा उनके संघर्षों विशेषकर किसानों और आदिवासी समुदाय के वीरों का योगदान एक लंबे समय तक सामूहिक स्मृति से बाहर रहा। पिछले वर्ष से हर 15 नवंबर को 'जन–जातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का सरकार का निर्णय स्वागत–योग्य है।

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व में मानव–जीवन और अर्थ–व्यवस्थाओं पर कठोर प्रहार किया है। जब दुनिया इस गंभीर संकट के आर्थिक परिणामों से जूझ रही थी तब भारत ने स्वयं को संभाला और अब पुनः तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा है। इस समय भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही प्रमुख अर्थ–व्यवस्थाओं में से एक है। लेकिन यह तो केवल शुरुआत ही है। दूरगामी परिणामों वाले सुधारों और नीतियों द्वारा इन परिवर्तनों की आधार–भूमि पहले से ही तैयार की जा रही थी।

आज देश में स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थ–व्यवस्था तथा इनके साथ जुड़े अन्य क्षेत्रों में जो अच्छे बदलाव दिखाई दे रहे हैं

उनके मूल में सुशासन पर विशेष बल दिए जाने की प्रमुख भूमिका है। जब 'राष्ट्र सर्वोपरि' की भावना से कार्य किया जाता है तो उसका प्रभाव प्रत्येक निर्णय एवं कार्य–क्षेत्र में दिखाई देता है। यह बदलाव विश्व समुदाय में भारत की प्रतिष्ठा में भी दिखाई दे रहा है।

भारत के नए आत्म–विश्वास का स्रोत देश के युवा किसान और सबसे बढ़कर देश की महिलाएं हैं। महिलाएं अनेक रूढ़ियों और बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ रही हैं।

आज हमारी पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या चौदह लाख से कहीं अधिक है। हमारे खिलाड़ी अन्य अंतर–राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। हमारे बहुत से विजेता समाज के वंचित वर्गों में से आते हैं।

जब हम स्वाधीनता दिवस मनाते हैं तो वास्तव में हम अपनी 'भारतीयता' का उत्सव मनाते हैं। हमारा भारत अनेक विविधताओं से भरा देश है। परंतु इस विविधता के साथ ही हम सभी में कुछ न कुछ ऐसा है जो एक समान है। यही समानता हम सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरोती है तथा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत'की भावना के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

वहीं देश में व्यक्तिगत स्तर के विकास को बढ़ाने के लिये भारत में राष्ट्रीय एकीकरण का बहुत महत्व है और ये इसे एक मजबूत देश बनाता है। पूरी तरह से लोगों को इसके प्रति जागरूक बनाने के लिये, 19 नवंबर से 25 नवंबर तक राष्ट्रीय एकता दिवस और राष्ट्रीय एकीकरण सप्ताह के रुप में भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी का जन्म दिवस 19 नवंबर को प्रतिवर्ष एक विशेष कार्यक्रम के रुप में मनाया जाता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ लोग विभिन्न धर्म क्षेत्र संसति परंपरा नस्ल जाति, रंग और पंथ के लोग एक साथ रहते हैं। एकता के द्वारा अलग–अलग धर्मों और संसति के लोग एक साथ रहते हैं, वहाँ पर कोई भी सामाजिक या विचारात्मक समस्या नहीं होगी।

एक स्वाधीन देश के रूप में भारत 75 साल पूरे कर रहा है। इस स्मृति दिवस को मनाने का उद्देश्य सामाजिक सद्भाव मानव सशक्तीकरण और एकता को बढ़ावा देना है। 15 अगस्त 1947 के दिन हमने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को काट दिया था। उस दिन हमने अपनी नियति को नया स्वरूप देने का निर्णय लिया था। उस शुभ–दिवस की वर्षगांठ मनाते हुए हम लोग सभी स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन करते हैं। उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ताकि हम सब एक स्वाधीन भारत में सांस ले सकें।

Role of National Service Scheme in Personalty Development

Mr. Akshay Kumar Tiwari
Faculty(Political Science) Govt. Girls College, Sehore
Ex. NSS Volunteer & Alumna Babulal Gaur Govt. PG College, Bhopal

Abstract
NATIONAL SERVICE SCHEME is that visionary initiative of Government of India that has successfully been working to bring about a silent revolution in nation. How the thought of national service, social responsibility can be carved in mind and thoughts of westernised youngsters of 21st century, is no more question now as National Service Scheme has emerged as the panacea to all the similar concerns. Aligning students of school and higher education on path of national service and making them sound by inducing thoughts of social service and in turn developing their personality through community service. This is how, NSS is preparing the new heroes for tomorrow's india and contributing immensely in constructive development of student's personality.
Inducing students with the joy of serving by Village adoption and conducting various Free Health Checkup Camps, Blood Donation Camps, literacy Programmes, Drug free, Voter awareness, Financial Literacy, Digital India and giving support to specially abled children etc are the few chiefly notable activities that NSS volunteers conduct in villages and benefit the rurals by addressing their certain needs. When a volunteer gets exposed to the ills of community life, a sense of responsibility and a sympathetic attitude develops and the will to work for same cause arises. This in turn ensures the development of Social Responsibility amingst volunteers. Similarly, when a NSS Volunteer participates in cleanliness drives and experiences the Shramdan, this develops the sense of respect for labour in them. Cultivating innovations, abiding and achieving sustainable development goals, prptecting environment, saving rooted customs, culture and heritage of nation is explicitly done under NSS which provides ample opportunities to students to get exposed and implicitly grooms their attitude, thought process, their vision and ultimately their overall Personality.
Hence , to concede, it will be no wrong to state that National Service Scheme is the panacea to address the Personality Development of students , build them as global citizen and ultimately to make this world the better place to livein.

NSS Introduction

The overall aim of National Service Scheme as envisaged earlier, is to give an extension dimension to the higher education system and orient the student youth to community service while they are studying in educational institution. The reason for the formulation of this objective is the general realization that the college and +2 level students have a tendency to get alienated from the village/slum masses which constitute the majority of the population of the country. The educated youth who are

expected to take the reins of administration in future are found to be unaware of the problems of the village/slum community and in certain cases are indifferent towards their needs and problems. Therefore it is necessary to arouse the social conscience of the students, and to provide them an opportunity to work with the people in the villages and slums. It is felt that their interaction with the common villagers and slum dwellers will expose them to the realities of life and bring about a change in their social perception.

Objectives:
The broad objectives of NSS are to:
(i) understand the community in which they work (ii) understand themselves in relation to their community; (iii) identify the needs and problems of the community and involve them in problem solving process; (iv) develop among themselves a sense of social and civic responsibility; (v) utilize their knowledge in finding practical solution to individual and community problems; (vi) develop competence required for group living and sharing of responsibilities; (vii) gain skills in mobilizing community participation; (viii) acquire leadership qualities and democratic attitude; (ix) develop capacity to meet emergencies and natural disasters and (x) practice national integration and social harmony**.**
The Motto of NSS
The motto or watchword of the National Service Scheme is : 'NOT ME BUT YOU'. This reflects the essence of democratic living and upholds the need for selfless service and appreciation of the other person's point of view and also to show consideration for fellow human beings. It underlines that the welfare of an individual is ultimately dependent on the welfare of society on the whole. Therefore, it should be the aim of the NSS to demonstrate this motto in its day-to-day programme.

The National Service Scheme was started to establish a meaningful linkage between the campus and the community. Mahatma Gandhi, the Father of the Nation, had recognized that the country could not progress in a desired direction until the student youth were motivated to work for the upliftment of the villages/community. For Gandhiji the villages, where majority of the population lived, represent the country i.e. India.

Therefore, for the national reconstruction and national resurgence it was deemed fit that the students and teachers should be properly sensitized and utilized for strengthening the Indian society as a whole with particular emphasis on rural community. Therefore, student youth, teachers and the community are considered the three basic components of the National Service Scheme.

Research Methodology
Type of Research The type of research that had been used in the study was

quantitative research and qualitative research both. The researcher aimed to gather an in- depth understanding of the effects of volunteering on the personality of an individual and the reasons for the same. The discipline investigates the 'why' of volunteering.

Objective
Primary Objective
● The main objective of this research was to analyze how the volunteerism impacts personality development amongst individuals and what future benefits can be availed out of it.

Secondary Objective
● The sub objective of research was to understand the influence on skills of volunteers engaged on different platforms and comparing it with those who are not engaged in such activities.

Operational Definition
● Conceptual variable Individual's inclination towards volunteering activities and platforms and personality development through it.

● Measured variable Comparison of self knowledge through skills, civic knowledge and psychological well being.

Hypothesis
H0 Volunteerism has no impact on skill enhancement and personality development.

H1 Individuals are positively influenced by volunteering activities with respect to personality development and skill enhancement.

How NSS helps in Personality Development -
NSS attempts to establish meaningful linkages between
a. University and Society
b. Campus and Community
c. College and Village
d. Knowledge and Action
e. Pen and Pickaxe
National service scheme volunteers have developed such a creative thoughts on society, where they serve and create awareness among the public.

- Understand the community in which they work
- Understand themselves in relation to their community
- Identify the needs and problems of the community and involve them in problem solving process.

- Develop among themselves a sense of social and civic responsibility
- Utilize their knowledge in finding practical solution to individual and community problems
- Develop competence required for group-living and sharing of responsibilities
- Gain skills in mobilizing community participation
- Acquire leadership qualities and democratic attitude
- Develop capacity to meet emergencies and natural disaster and
- Practice national integration and social harmony.

MAJOR THREE ACTIVITIES IN SPECIAL CAMPAIGN PROGRAMME-V:

a) Socio-Physical Activities

b) Intelligence- Activities

c) Psycho-Cultural Activities

A. Volunteer/ Personal benefits:

- Build self-knowledge as the basis of leadership to facilitate others through change
- Strengthen communication skills which are key to making an effective case for change
- Learn the theory and principles behind citizen-led and asset-based approaches and how to integrate these into your work
- Develop facilitation skills and tools to use in various community development situations
- Strengthen competencies to analyze how different world views influence development and social change
- Develop values and attitudes that nurture a culture of peace and non-violence
- Engage in an analysis of the inter-sectionalities between power, poverty, health, caste, gender equality and environmental sustainability
- Gain a greater understanding of the complexities and principals involved with multi-sector and multiple-actor collaboration and working in partnerships
- Explore local efforts to create, maintain, and strengthen citizen-led and community-driven development and grassroots campaigns for policy change
- Become connected with a growing network of peers from around the world working for development and social change.
- All volunteers shall work under the guidance of a group leader nominated by the NSS
- Programme Officer.
- They shall make themselves worthy of the confidence and co-operation of the group community leadership

They shall scrupulously avoid entering into any controversial issue

---

- They shall keep day-to-day record of their activities / experience in the diary and submit to the group leader / Programme Officer for periodic guidance
- It is obligatory on the part of every volunteer to wear the NSS BADGE while on work

B. Organizational Benefits:

- Gain insights into new thinking and innovations in development and social change practice

- Develop vision and leadership approaches which lead to innovation and social change
- Integrate new analysis and strategies into education and organizing for development and social change
- Enhance performance in areas such as gender equality, disability, human rights and the environment
- Contribute to campaigns for changes in social policy and practices
- Connect with regional and transnational networks working toward development and social change.

Case Study of Vision, Role & Works with special focus on Madhya Pradesh NSS

The vision that apart from the academic program, the students should connect with the society, understand its composition, structure and become a participant, this is the basis of the National Service Scheme. Today, more than one and a half lakh students in Madhya Pradesh are associated with this scheme, who are constantly contributing to the society. Today it can also be said with confidence that the National Service Scheme is the largest student organization of students in India.

Joining the National Service Scheme is not only the means to Personality development but is also effective in nation building. The people associated with NSS know this very well. The basic idea of ??this scheme was also here. Mahatma Gandhi had this opinion towards the students that after passing out from the institutions, they should join the society and participate in the social development. The country's first Prime Minister Pt. Jawaharlal Nehru also desired that after passing the graduation examination, every student should be given an opportunity to understand India by staying in villages for about 1 year. A serious discussion took place on this and it was decided that it is not practical for a student to serve in the village for one year, but he must be connected to the society in the village. This is the basic idea that is the basis of NSS in India. On the concept of campus-to-community outreach, NSS was implemented through 470 students from 2 universities, Indore and Sagar, from across the country as well as from the Gandhi centenary year (1969) . This seed was sown in Madhya Pradesh with only 470 students in 1969, today it is flourishing through traditional universities of higher education and more than one and a half lakh students have joined it. When this scheme was started, the Government of India did not have a very clear vision towards this scheme. In the beginning, some programs were decided to make the society understand the realities, but today all across the country, NSS students are seen standing with the society in every situation. Today it can also be said with confidence that the National Service Scheme is the youngest organization in India. On one hand, this scheme easily helps in creating awareness about the government schemes to the society & on the other hand, it is helpful in making the young generation a conscious and aware citizen.

Volunteers of NSS become capable enough to understand the difficulties and be active to solve the problems to every possible extent. It is also worth keeping in mind here that NSS is not only a scheme to connect the students with the society, but it is a

comprehensive education program. During the Corona period, when the entire country was under lockdown and people were imprisoned in their homes, NSS volunteers were on the ground on the call of the Honorable Prime Minister of the country. On the one hand, the volunteers were engaged in making the lockdown successful, on the other hand, from distributing food to the needy, making masks and making people aware, they were leaving no stone unturned. Even during this period, volunteers was working on his basic subjects like cooperation in medical system, plasma donation, cooperation in oxygen system and blood donation.
Swayamsevaks were standing together with the administration, voluntary organizations and with every section that were needy all across the country. The then Governor, Honorable Chief Minister, Union Minister and other prominent people's representatives have appreciated the work for this wonderful contribution of the volunteer. The original preparatory camps (Special Camps) of NSS which are organized in rural areas or backward remote slum areas are certainly successful in spreading the message of awareness to the residents. The campers not only do shramdaan here, but also associate themselves with social concern (with the 'goal' of education through social service through education), some teach them, and many other opportunities are also available to the students.
NSS through such works inculcates the sense of service to the needy, develops sympathetic attitude towards underprivileged section and consciousness for all the ills- evils taking plave in society. Team work and regular activitues build a sense of unity in them & makes students self-disciplined.

After continuity of NSS for more than 54 years to society, today i stand in a position to do an honest analysis of it. I feel that lakhs of youth associated with this scheme are contributing a lot in the development of the society. From the point of view of importance in the Personality Development of Students, the hold of this scheme is becoming deep daily as there is no such work that has not been done by volunteers and no such skill that NSS doesn't teaches. From thought process to Implementing giant projects, Intellect to Sympathy, from work efficiency to building advanced attitude and consciousness for societal change to being the change maker, every dimension and aspect of personality is touched and sharpened by National Service Scheme activities in students. So, it is clear how NSS builds the character and personality of a normal student & makes him the distinguished one with comprehensive attitude and innovation initiating capacity and what not.
Hence, the contribution of National Service scheme in Personality development is unmatched and beyond the measurables as it prepares the true asset for service of nation and helps in making this march of nation more loud.

Role of Technology for Development of Indian Farmer

Neelam Chopra [1] Gopal Rathor [2] and Shailendra Chourey[3]

[1]Department of Chemistry, Babulal Gaur Govt. PG College, BHEL, Bhopal

[2,3] Department of Quality Control, Saraswati Agrochemicals (India) Pvt. Ltd. Jammu

Introduction:

Agricultural development practices over a while have been perceived to exploit natural resources faster than they could be renewed. Exponential growth in the human population has resulted in demand for food and shelter, which the "natural" carrying capacity of the land is under pressure to provide. Natural imbalance is visible in pollution, soil degradation, wildlife population decline, and human-created alterations of flora and fauna. It is reasonable to assume that human population growth will continue and place greater demands on the agri-ecosystem. Thus, technology has and will continue to play a major role in agriculture and sustainable development going forward. Technology has a major role in farming and agriculture practices; and with the advent of digital technology, the scope has widened. Innovation in agriculture is leading an evolution in agricultural practices, thereby reducing losses and increasing efficiency. This is positively impacting farmers. The use of digital and analytic tools is driving continuous improvement in agriculture, and the trend is here to stay, resulting in improving crop yields and helping to increase the income of the farming community.

The role of modern technology is significant in agricultural development; and with the advent of digital technology, the scope has widened. Innovation is leading to an evolution in agricultural practices, reducing losses and increasing efficiency. Some new technologies in agriculture are mention below -

Mechanization of agriculture Manual labor and hand tools used in agriculture have limitations in terms of energy and output, especially in tropical environments. Resistance to agricultural mechanization, especially among smallholder farmers due to accessibility, cost, and maintenance issues, often acts as a detrimental factor. To reduce manual labor and make processes faster, combine harvesters are finding greater use. Indian farming is characterized by small landholdings, and the need is to partner with others to take advantage of modern machines. Agricultural mechanization has the potential to, directly and indirectly, affect yields through a reduction in post-harvest losses and an increase in harvest gains.

Climate/ weather prediction through artificial intelligence:

A major advance in agriculture is the use of artificial intelligence (AI). Modern equipment and tools based on AI enable data gathering and assist in precision farming and informed decision-making. Drones, remote sensors, and satellites gather 24/7 data on weather patterns in and around the fields, providing farmers with vital information on temperature, rainfall, soil, humidity, etc. However, AI finds slow acceptance in a country like India where marginal farming, fragmented landholdings, and other reasons act as impediments. But there is no doubt that technologies based on AI can bring precision to large-scale farming and lead to an exponential rise in productivity.

Resilient crops developed via the use of biotechnology:

Agriculture refers to a wide resource of methodologies that include traditional breeding methods, genetic engineering, and the development of microorganisms for agriculture. Generally speaking, genetic engineering uses the understanding of DNA to identify and work with genes to increase crop resistance to pests, and the development of high-yielding varieties also makes improvements to livestock. The spinoff of biotechnology in agriculture has resulted in all-around benefits for farmers and end consumers.

Agriculture Sensors Technology:

Communications technology has evolved rapidly in India and made smart farming a possibility. Sensors are now being used in agriculture to provide data to farmers to monitor and optimize crops given the environmental conditions and challenges. These sensors are based on wireless connectivity and find application in many areas such as determining soil composition and moisture content, nutrient detection, location for precision, airflow, etc. Sensors help farmers save on pesticides, and labor, and result in efficient fertilizer application. They allow farmers to maximize yields using minimal natural resources.

Monitor and Control Crop Irrigation Systems through Smartphones:

Mobile technology has also been playing a significant role in monitoring and controlling crop irrigation systems. With this modern technology, farmers can control their irrigation systems via smartphones and computers instead of driving to each field. Moisture sensors planted underground can provide information regarding the moisture levels present at certain depths in the soil.

Nanotechnology and Agriculture:

Nanotechnology is one of the most important tools in modern agriculture, and agri-food nanotechnology is anticipated to become a driving economic force in the near future. Agri-food themes focus on sustainability and protection of agriculturally produced foods, including crops for human consumption and animal feeding. Nanotechnology provides new

agrochemical agents and new delivery mechanisms to improve crop productivity, and it promises to reduce pesticide use. Nano urea is expected to revolutionize the production of quality crops, and here is how. As a substitute to conventional urea, nano urea liquid is a fertilizer based on nanotechnology that enhances crop growth by refilling plants' nitrogen levels. In addition to increasing the crop's yield and nutritional value, it improving the groundwater water quality, it helps maintain groundwater quality.

Drone Technology:

In recent years, drone technology has become increasingly popular in the agriculture sector. Drones offer farmers a range of benefits, including increased efficiency, improved yields, and reduced costs. However, there are concerns that farmers may be reluctant to adopt drone technology due to fears of job loss or a lack of knowledge and training. We can explore the benefits of drone technology in the agriculture sector and the challenges that may be holding farmers back from adopting this technology.

Benefits of drones in the agriculture sector-

Drones can be used for a wide range of tasks in the agriculture sector, including crop mapping, soil analysis, irrigation, and pest management. Here are some of the key benefits of using drones in agriculture:

- Improved efficiency:
- Enhanced crop yields:
- Reduced costs:
- Improved accuracy:

Drip irrigation technology:

Drip irrigation is the most efficient water and nutrient delivery system for growing crops. It delivers water and nutrients directly to the plant's roots zone, in the right amounts, at the right time, so each plant gets exactly what it needs, when it needs it, to grow optimally. Thanks to drip irrigation, farmers can produce higher yields while saving on water as well as fertilizers, energy and even crop protection products. Water and nutrients are delivered across the field in pipes called 'dripperlines' featuring smaller units known as 'drippers'. Each dripper emits drops containing water and fertilizers, resulting in the uniform application of water and nutrients direct to each plant's root zone, across an entire field. Here are some of the key benefits of using drip irrigation in agriculture:

- Higher consistent quality yields
- Huge water savings: no evaporation, no run off, no waste
- 100% land utilization - drip irrigates uniformly in any topography and soil type

- Energy savings: drip irrigation works on low pressure
- Efficient use of fertilizer and crop protection, with no leaching
- Less dependency on weather, greater stability and lower risks
- High availability of water and nutrients
- Doses of water and nutrients tailored to plant's development needs
- No saturation and good soil aeration
- Avoids high salinity caused by excessive fertilizer application
- No wetting of foliage that can result in fungal diseases

Plastic mulching for crop production:

Mulching is the process or practice of covering the soil/ground to make more favourable conditions for plant growth, development and efficient crop production. Mulch technical term means 'covering of soil'. While natural mulches such as leaf, straw, dead leaves and compost have been used for centuries, during the last 60 years the advent of synthetic materials has altered the methods and benefits of mulching. The research as well as field data available on effect of synthetic mulches make a vast volume of useful literature. When compared to other mulches plastic mulches are completely impermeable to water; it therefore prevents direct evaporation of moisture from the soil and thus limits the water losses and soil erosion over the surface. In this manner it plays a positive role in water conservation. The suppression of evaporation also has a supplementary effect; it prevents the rise of water containing salt, which is important in countries with high salt content water resources.

Advantages of plastic mulching-

- It is completely impermeable to water.
- It prevents the direct evaporation of moisture form the soil and thus limits the water losses and conserves moisture.
- By evaporation suppression, it prevents the rise of water containing salts.
- Mulch can facilitate fertilizer placement and reduce the loss of plant nutrient through leaching.
- Mulches can also provide a barrier to soil pathogens
- Opaque mulches prevent germination of annual weeds from receiving light
- Reflective mulches will repel certain insects
- Mulches maintain a warm temperature even during nighttime which enables seeds to germinate quickly and for young plants to rapidly establish a strong root growth system.
- Synthetic mulches play a major role in soil solarisation process.
- Mulches develop a microclimatic underside of the sheet, which is higher in carbondi-oxide

due to the higher level of microbial activity.

- Under mulch, the soil structure is maintained during cropping period
- Early germination almost 2-3 days.
- Better nodulation in crops like Groundnut.
- Less nematodes population.
- Water erosion is completely averted since soil is completely covered form bearing action of rain drops.
- When compared to organic mulches, it serves for a longer period.

वसुधैव कुटुम्बकम का आदर्श

डॉ. भुवनेश्वरी स्वामी
सहा.प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान), शास. गीतांजली कन्या (स्वशासी) महाविद्यालय, भोपाल

वसुधैव कुटुम्बकम का विचार इस भाव पर आधारित है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। परिवार में रहने वाले सभी मनुष्यों में भाईचारा, परस्पर जुड़ाव व अपनेपन की भावना होनी चाहिए। यह विचार मानवता में विश्वास करती है। किसी भी मानव के साथ बिना किसी भेदभाव के सभी के सम्मान गरिमा व प्रतिष्ठा पर आधारित विचार है। यह विचार इस ओर भी इंगित करता है कि दुनिया की बेहतरी के लिये हर व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है।

वसुधैव कुटुम्बकम का विचार कोई नवीन विचार नहीं, यह भारतीय सामाजिक दर्शन है, जो कि प्राचीनकाल से ही हमारे दर्शन का केन्द्र बिन्दु रहा है। यह विचार हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की समृद्ध परम्परा को दर्शाता है, जो मानवीय मूल्यों यथा शांति, एकता, सद्भाव, समानता व एकता में विश्वास रखती है। यह विचार मानवता का संदेश देता है। यह विचार बिना किसी भेदभाव के, एकता व भाईचारे का भी संदेश देता है।

वसुधैव कुटुम्बकम का शाब्दिक अर्थ है सम्पूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है। वसुधा यानि पृथ्वी, कुटुम्ब यानि परिवार अथ्रात पृथ्वी के सभी जीव व व्यक्ति के साथ परिवार भाव से रहना। भारत की संस्कृति प्रारम्भ से ही विश्व शांति व शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में विश्वास करती रही है। आज इस विचार के महत्व को विश्व ने भी समझा लिया है, क्योंकि आज दुनिया छोटी हो गयी है, आज हम विश्व को एक ग्लोबल विलेज के रूप में देखते हैं। विश्व शांति अवधारणा के बिना दुनिया के नष्ट होने का खतरा पैदा हो जाएगा।

वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा को स्वीकार कर ही हम एक बेहतर विश्व का निर्माण कर सकते हैं, जहाँ शांति होगी, सामंजस्य होगा, समानता होगी, सम्मान सहयोग व एकता होगी। इन सब में हर व्यक्ति (प्रत्येक व्यक्ति की) भूमिका महत्वपूर्ण है। यह मानवीय दृष्टिकोण से सभी को एकसूत्र में बाधने व सबको समदृष्टि से देखने पर जोर देती है। जिस प्रकार एक परिवार के सदस्यों में किसी बात को लेकर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन फिर भी एक हैं, उसी प्रकार यह भी एकता व भाईचारे का संदेश देती है। परिवार में सभी एक–दूसरे के सुख–दुःख के साथी होते हैं।

भारत सभी जाति व धर्म के लोगों की शरणस्थली रहा है, क्योंकि इस विचारधारा पर हमारा देश प्राचीनकाल से ही चला है। सभी जीवों में परस्पर निर्भरता पायी जाती है। सभी का अस्तित्व एक–दूसरे पर टिका हुआ हैं यह आपसी सहयोग, समन्वय व सहिष्णुता व विश्वशांति पर आधारित विचार है। यह अहिंसा पर जोर देती है तथा इस बात पर भी बल देती है कि सभी सद्भावनापूर्वक सहयोग के साथ प्रसन्नतापूर्वक जीवन–यापन करें।

भारत जब स्वतंत्र हुआ तत्पश्चात उसके द्वारा जो विदेश नीति अपनाई गई,उसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को शामिल किया गया। विश्व शांति को भारत की विदेश नीति का मूल मंत्र बनाया गया व हमने स्वतंत्रता प्राप्ति व उसके पश्चात भी अहिंसा का मार्ग अपनाया। भारत ने कभी भी पहले होकर किसी भी देश पर आक्रमण नहीं कया, बाध्य किये जाने पर उसका प्रत्युत्तर भारत द्वारा दिया गया है। भारत अपने पड़ोसी देशों की मदद करने के लिए हर समय तैयार रहता है, चाहे आर्थिक, सैनिक या खाद्यान्न की सहायता ही क्यों न हो। भारत ने तुरन्त मदद पहुँचाने का कार्य किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति प्रयासों में भारत ने पूरा–पूरा साथ दिया है। यहाँ तक कि श्रीलंका संकट के दौरान शांति सेना भेजना या वहाँ के अन्न संकट के दौरान खाद्यान्न सामग्री पहुँचाना आदि।

विश्व के शांतिपूर्ण विकास हेतु यह अवधारणा अतिआवश्यक है। जब सारा विश्व महामारी के दंश झेल रहा था, तब विश्व के सभी देश एक–दूसरे के सहायक बने जो वसुधैव कुटुम्बकम के महत्व को रेखांकित करता है। वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा का परिचय विश्व में देते हुए भारत द्वारा कोविड–19 महामारी के दौरान विश्व के कई देशों को इस महामारी से बचने हेतु भारत ने टीके उपलब्ध करवाये। यह भारत के सौहार्द्र व मानवीय मूल्यों को दर्शाता है।

सामाजिक विषमता व असमानता के दौर से जहाँ मानवीय मूल्यों का क्षरण हो गया है, ऐसे में इस अवधारणा का महत्व ओर भी अधिक बढ़ जाता है।

हमारे देश के मनीषियों ने वसुधैव कुटुम्बकम के महत्व को पहले ही जान व समझ लिया था कि दुनिया एक परिवार है, एक–दूसरे से अलग–अलग रहकर विकास सम्भव नहीं है। समावेशी विकास सबको साथ लेकर चलने में तभी मानव जाति का कल्याण सम्भव हो पाएगा। मानव जाति के उत्थान हेतु इससे अधिक उपयुक्त ओर कोई रास्ता नहीं है।

वसुधैव कुटुम्बकम

अतुल मिश्र
स्नातकोत्तर विद्यार्थी, द्वितीय सेमेस्टर, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी

वसुधैव कुटुम्बकम यानि की सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है। यह भारतीय संसति का मूल वाक्य है और कहीं न कहीं यही वाक्य यही दर्शन आज के तमाम वैश्विक समस्याओं का समाधान भी है।

आज के परिपेक्ष्य में इसकी प्रसांगिकता कहीं ज्यादा बढ़ गयी है। भारत में यह प्रचलन सभ्यता जितना पुराना है हमनें हमेशा से सबको अपना परिवार ही माना है लेकिन शायद इसको हमारी कमजोरी समझी गयी और फलस्वरूप हमपे अनेक आक्रमण हुए हम उन हजार वर्षों के संघर्ष को झेलते हुए आज भी अपनी अस्तित्व बचाने में कामयाब हो पाए हैं। अल्लामा इकबाल ने लिखा है कि

यूनान–ओ – मिस्र– ओ – रोमा सब मिट गए जहाँ से,
अब तक मगर है बाकी नामों निशाँ हमारा,
कुछ तो बात है की हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौर ऐ जमां हमारा।

हमेशा से हमने राष्ट्रवाद से बड़ा संसति एवम उसकी एकता को माना है लेकिन 15वीं शताब्दी के बाद से जब यूरोपीय शक्तियों ने दुनिया भर में अपने पैर फैलाने शुरू किए और दुनिया भर के देशों को अपना उपनिवेश बना लिया तभी से सभी देशों में उनके खिलाफ राष्ट्रवाद की भावना जागृत होने शुरू हो गयी जिसके परिणाम स्वरूप अपने राष्ट्र से प्रेम और शत्रु राष्ट्र से नफरत की भावना जागृत होना शुरू हो गयी। 1648 में हुए वेस्टफेलिया की संधि ने समूचे यूरोप को अलग अलग राष्ट्रों में बाँट दिया है और इसी को आधार बनाते हुए यूरोपियन शक्तियों ने समूचे विश्व को अलग अलग राष्ट्रों में बाँटकर उनके और उनके लोगों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी लोगों को अपने देश के प्रति प्रेम और शत्रु देश के प्रति नफरत की भावना जागृत होने लगी।

आज का विश्व कई ध्रुवों में बंटा हुआ है, कहीं धर्म के नाम पर हिंसा हो रही तो कहीं गृहयुद्ध कहीं प्रवासी संकट है तो कहीं देशों के बीच जंग। इन सब मसलों का एक ही हल है वसुधैव कुटुम्बकम क्योंकि ये सारे मसले इसलिए खड़े हुए हैं क्योंकि हमने अन्य इंसानों में इंसान को देखना छोड़ दिया है हम किसी को। काफिर, किसी को मुशरिक, किसी को काला, किसी को गोरा, किसी को अमेरिकन, किसी को रुस्सियन, किसी को चीनी, तो किसी को एशियन के रूप में देखते हैं। हमें उनमें इंसान दिखाई नहीं देता और फिर हम उन से कनेक्ट नहीं कर पाते और यह तमाम तरह के संघर्ष को जन्म देता है।

आज अगर सभी महाद्वीपों को देखे तो हमें कहीं भी शांति दिखाई नहीं देती। शायद क्रूरता और संघर्ष मनुष्यों का मूल चरित्र है और मानव विकास के अवस्था में भी हमें यह देखने को मिलता है। केन्या के जंगलों से निकलकर जहाँ जहाँ होमोसेपियंस गए वहाँ वहाँ इन्होंने सर्वनाश और तबाही मचा दी उन जगहों के मूलनिवासियों को खत्म कर दिया तभी जाके इनका अस्तित्व सम्भव हो पाया। आज अगर अफ्रीका महाद्वीप की बात करे तो नाइजर में गृहयुद्ध चल रहा कुछ गिने चुने देशों को छोड़ दें तो करीब करीब हर अफ्रीकी देश में आज सत्ता का संघर्ष अपने चरम पर है। लेकिन चूंकि वे गरीब देश हैं तो इन अमीर देशों और उनके द्वारा बनाई गई इस विश्व व्यवस्था को कोई फर्क नहीं पड़ता। वही दूसरी तरफ यूरोप में रशिया–यूक्रेन युद्ध अपने चरम पर है आधी शताब्दी के शांति के बाद एक बार फिर से यूरोप से युद्ध

की आहट आने लगी है। ऐसा लग रहा है मानों रशिया यूक्रैन युद्ध महायुद्ध का जन्म ले लेगा वहीं दूसरी तरफ अफ्रीका में मरते लोगों की किसी को कोई परवाह नहीं है। आधुनिकता औ रसभ्यता ने इतनी ऊँची दीवारें खड़ी कर दी हैं हम इंसानों के बीच ही। दक्षिणी अमेरिका के देश आज बदहाली में हैं एशिया में चीन का बढ़ता वर्चस्व खतरे की घन्टी बजा रहा है। इन सब चीज़ों को देखने के बाद हमें जरूरत पड़ती है उस एक ही वाक्य यानि की वसुधैव कुटुम्बकम की। आज हमें इंसानो के द्वारा बनाई गई इंसानों के बीच की दीवारों को गिराने की जरूरत है हमें पूरी सृष्टि में एक उस भगवान उस निर्माता को खोजने की जरूरत है जिसने इसका निर्माण किया। जिस दिन हम सृष्टि के प्रत्येक इकाई में उस परमात्मा का अंश देखने लगेंगे हम पाएंगे की हमारे बीच के ये हमारे द्वारा ही खड़े किए हुए दीवार भरभरा के गिर पड़ेंगे। हमें आचार्य शंकर के उस एकात्म विचार को अपनाने और उसको आत्मसात करने की आवश्यकता है। और यह तभी हो पायेगा जब सभी लोग सभी लोगों को एक परिवार के सदस्य के रूप में देखना शुरू करेंगे। जब दुनिया भर की सीमा रेखाएं टूटने लगेंगी और लोग एक होने लगेंगे जैसे की 1989 में बर्लिन की दीवारगिराते ही जर्मनी एक हो गया था।

वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को आज कई सारे देश अपना रहे है परंतु सत्ता और शक्ति सन्तुलन का सँघर्ष इसके मार्ग में एक बहुत बड़ा रोड़ा बना हुआ है जिससे तमात कोशिश और प्रयासों के बाद भी हम एक नहीं हो पा रहे हैं भारत भी भले ही वसुधैव कुटुम्बकम की बात करता हो लेकिन चीन हमारे लिए आज एक बड़ा दुश्मन के रूप में उभर रहा है तो उसका सामना करते समय हमें भी ये अवधारणा बेमानी लगने लगती है। तो जरूरत है एक वैश्विक वातावरण बनाने की जहाँ सब लोग शांतिपूर्वक एकदूसरे को अपने परिवार का एक हिस्सा मानकर रह सकें उसी में पूरे विश्व की भलाई है।

व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्वपूर्ण भूमिका

डॉ. समता जैन, प्राध्यापक, अर्थशास्त्र,
राष्ट्रीय सेवा योजना–कार्यक्रम अधिकारी (पुरुष इकाई)
बाबूलाल गौर स्नातकोत्तर शास. महाविद्यालय, भेल, भोपाल

प्रस्तावना

व्यक्तित्व विकास को किसी के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए किसी के बाहरी और आंतरिक स्वयं को बेहतर बनाने और संवारने की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानित, पॉलिश और परिष्त किया जा सकता है इस लेख में हम विस्तार से जानेंगे कि कैसे राष्ट्रीय सेवा योजना व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और युवाओं को सामाजिक सेवा के माध्यम से कैसे सिखाती है कि वे एक उत्तराधिकारी नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाएं।भारत एक विविध और समृद्ध समाज का देश है, जिसमें अनेक जातियां, धर्म, भाषाएँ, और संसतियाँ मिलती हैं। इस विविधता के बावजूद, भारत एक एकता की भावना के साथ एक समृद्ध और मजबूत राष्ट्र का सपना देखता है। इस सपने को हासिल करने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme, NSS) नामक एक महत्वपूर्ण सामाजिक सेवा योजना द्वारा युवाओं को समाजसेवा के माध्यम से उनके व्यक्तित्व विकास का अवसर प्रदान किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्र की युवाशक्ति के व्याक्तिवत्वत विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है. इसके गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित के कार्य करते है।

साक्षरता संबंधी कार्य, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सफाई आपातकालीन या प्रातिक आपदा के समय पीड़ित लोगों की सहायता आदि। विद्यार्थी जीवन से ही समाजपयोगी कार्यों में रत रहने से उनमें समाज सेवा या राष्ट्र सेवा के गुणों का विकास होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना का एकमात्र उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा देने में अनुभव प्रदान करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत सरकार द्वारा संचालित की जाने वाली एक महत्वपूर्ण सामाजिक सेवा योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को समाजसेवा के माध्यम से जोड़ना और उन्हें विभिन्न सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरुक करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना का संचालन भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में किया जाता है, और यहाँ पर युवाओं को सामाजिक सेवा के लिए आवंटित किया जाता है। राष्ट्रीॉय सेवा योजना देश के युवाओं में व्यगक्तिवत्वव विकास करने के लिए युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जाता है। यह हर साल 24 सितंबर को मनाया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थापना 24 सितंबर, सन् 1969 ई. को की गई थी। इस संगठन की स्थापना की बात आजादी पूर्व से दिवगंत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के समय से चल रही थी, जिसे अंतिम रूप 1969 ई. में दिया गया। इस दिन आयोजित गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित के कार्य करते है। यह एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है जहाँ युवाओं को सामाजिक सेवा के माध्यम से अपने व्यक्तिगत विकास और विभिन्न प्रकार की सामाजिक सेवा कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलता है, जैसे कि शिक्षा कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर, पर्यावरण संरक्षण, और बच्चों के प्रति शिक्षा कार्यक्रम। इसके साथ ही, NSS के तहत कई प्रकार के शिविर और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं, जिनमें युवाओं को विभिन्न कौशलों का सीखने और अपनाने का मौका मिलता है।

मित्र सिर्फ साथी नहीं !!

सारथी भी होना चाहिए !!

व्यक्तित्व विकास का सबसे बड़ा मित्र सेवा भाव है और वह भाव उत्पन्न करता है राष्ट्रीय सेवा योजना।

व्यक्तित्व एक व्यक्ति की व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान का माध्यम होता है, जो उनके समाज में भूमिकाओं, स्थितियों, और आवश्यकताओं को दर्शाता है। यहाँ तक कि व्यक्तित्व की विकास करने के लिए आवश्यक गुण और कौशलों की श्रेणियों में विभाजित किए जाते हैं जो व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण होते हैं। इस प्रकार, राष्ट्रीय सेवा योजनाएं व्यक्तित्व विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

व्यक्तित्व विकास के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों का विश्लेषण :

जिस समुदाय में काम कर रहे हैं, उसे समझना : राष्ट्रीय सेवा योजनाएं समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों में काम करने का अवसर प्रदान करती हैं। इसके माध्यम से युवा व्यक्तियों को समग्रता के साथ समग्र समाज की समझ की प्राप्ति होती है।

समुदाय की समस्याओं को जानना और उन्हें हल करने के लिए उन में शामिल होना चाहिए : योजनाएं समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने और उन्हें समाधान के दिशानिर्देश प्रदान करने का माध्यम बनती हैं। युवा सदस्यों को जनसामान्य की मदद करने और समस्याओं का समाधान करने का साहस प्राप्त होता है।

सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना का विकास करना : राष्ट्रीय सेवा योजनाएं युवा पीढ़ी को समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की महत्वपूर्णता को समझाती हैं। यहाँ तक कि वे नागरिक दायित्व के प्रति संवादनशील होते हैं और सामाजिक सुधारों में सहयोग करते हैं।

समूह स्तर पर जिम्मेदारियों को बांटने के लिए आवश्यक क्षमता का विकास करना : राष्ट्रीय सेवा योजनाएं सामूहिक सहयोग के माध्यम से युवा सदस्यों को समूह स्तर पर कार्य करने और जिम्मेदारियों को संवादनशीलता से बांटने की क्षमता प्रदान करती हैं।

आपातकाल और प्रातिक आपदाओं से निपटने के लिए उनको विकसित करना : राष्ट्रीय सेवा योजनाएं युवा सदस्यों को आपातकालीन परिस्थितियों और प्रातिक आपदाओं का सही तरीके से सामना करने के लिए तैयार करती हैं।

राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का अभ्यास करना : योजनाएं राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के मूल मूल्यों को समझाती हैं और युवा सदस्यों को इन मूल्यों का पालन करने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

नेतृत्व गुणों और लोकतांत्रिक ष्टिकोण को प्राप्त करना : युवा सदस्यों को नेतृत्व गुणों का विकास करने और लोकतांत्रिक मूल्यों और ष्टिकोण की प्राप्ति का माध्यम प्रदान करती हैं।

सामुदायिक भागेदारी को जुटाने के कौशल को प्राप्त करना : राष्ट्रीय सेवा योजनाएं सामुदायिक भागेदारी को बढ़ावा देती हैं और युवा सदस्यों को भागीदारी में शामिल होने के लिए कौशल प्रदान करती हैं।

बर्गेस के ष्टिकोण का परिप्रेक्ष्य–व्यक्तित्व विकास विचारधारा के अनुसार, व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सभी गुणों की समरेखा होती है जो उनकी समाज में भूमिकाओं और स्थितियों को अभिव्यक्त करते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजनाएं जिनका उद्देश्य श्मैं ही नहीं आप भीश है, यह सिखाती है कि लोकतांत्रिक सहयोग और दूसरों की सेवा पर निर्भरता व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण हिस्से है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कुछ कौशल जिसे व्यक्तित्व विकास में निपुणतासंभव है

आत्मविश्वास (Self&Confidence) : यह कौशल व्यक्ति को अपने आप में विश्वास करने में मदद करता है और उसकी सकारात्मक सोच और कार्रवाई को बढ़ावा देता है।

संचार (Communication) : यह कौशल व्यक्ति को अपने विचारों और विचारों को अच्छी तरह से प्रकट करने, अन्य लोगों के साथ सही तरीके से संवाद करने, और अफसोस के साथ जवाब देने में मदद करता है।

उद्देश्य / जुनून / ष्टि (Goal/Purpose/Passion/Vision) : यह आवश्यकता होती है क्योंकि यह किसी व्यक्ति को उनके जीवन के उद्देश्य और लक्ष्य को स्पष्ट रूप से समझने में मदद करता है, जिससे उनके प्रति आत्म–समर्पण बढ़ता है।

करियर / साक्षात्कार (Career/Profession) : यह कौशल व्यक्ति को उनके करियर या पेशेवर लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करता है और उन्हें अपने कौशलों और रुचियों के अनुसार अच्छा काम चुनने में सहायक होता है।

शक्तियाँ कमज़ोरियाँ (Strengths and Weaknesses) : यह कौशल व्यक्ति को उनकी शक्तियों को पहचानने और विकसित करने, साथ ही उनकी कमजोरियों पर काम करने के लिए मदद करता है।

परिवार / पालन–पोषण / रिश्ते (Family/Nurturing/Relationships) : यह कौशल व्यक्ति को परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों को बनाए रखने और उन्हें समर्थन और स्नेह प्रदान करने में मदद करता है।

प्रेरणा (Inspiration) : यह व्यक्ति को उनके आसपास के प्रेरणा स्रोतों को पहचानने और उनसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आत्म–समझ (Self & Awareness) : यह कौशल व्यक्ति को उनके आत्म के अवस्थिता, गुण, और मूल्यों को समझने में मदद करता है, जिससे उनके व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है।

मुखरता / रवैया (Charisma/Attitude) : यह व्यक्ति के व्यक्तिगत चरित्र और रवैये को प्रकट करने में मदद करता है, जो समाज में प्रभावी हो सकता है।

नेतृत्व (Leadership) : यह कौशल व्यक्ति को समूह का मार्गदर्शन करने में मदद करता है और उन्हें अन्यों को प्रेरित करने का योग्य बनाता है।

आशावाद (Optimism) : यह कौशल व्यक्ति को सकारात्मक ष्टिकोण में रहने और कठिनाइयों को सहने की क्षमता प्रदान करता है।

संगठन दक्षता (Organizational Skills) : यह कौशल व्यक्ति को कार्यों को संगठित रूप से प्रबंधित करने में मदद करता है और कार्य प्रवृत्तियों को समय पर पूरा करने की क्षमता प्रदान करता है।

कम्युनिकेशन स्किल्स (Communication Skills) : यह कौशल व्यक्ति को सही और प्रभावी तरीके से संवाद करने में मदद करता है, जिससे उनके व्यक्तिगत और पेशेवर रिश्तों को बढ़ावा मिलता है।

रिसर्च और एनालिटिकल स्किल्स (Research and Analytical Skills) : यह कौशल व्यक्ति को जानकारी का संग्रहण करने, विश्लेषण करने, और समस्याओं का समाधान निकालने में मदद करता है।

समस्या को सुलझाना (Problem Solving) : यह कौशल व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान निकालने में मदद करता है और उन्हें ताकद देता है कि वे आवश्यकता अनुसार कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं।

इंटीग्रिटी स्किल्स (Integrity Skills) : यह कौशल व्यक्ति को ईमानदारी, नैतिकता, और सत्यनिष्ठा की महत्वपूर्णता को समझने और अपनाने में मदद करता है।

लीडरशिप (Leadership) : यह कौशल व्यक्ति को उनकी समूह में नेतृत्व दिखाने में मदद करता है और उन्हें समृद्धि और सफलता की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

एक उदाहरण जो व्यक्तित्व विकास और राष्ट्रीय सेवा योजना के संदर्भ में उत्ष्टता की मिसाल प्रस्तुत करता है, वो है 'महात्मा गांधी'। महात्मा गांधी का व्यक्तित्व एक संत, राजनीतिक नेता, और समाज सुधारक के रूप में विकसित हुआ था, और उन्होंने राष्ट्रीय सेवा के माध्यम से समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गांधी ने 'सत्याग्रह' और 'अहिंसा' की मूलभूत बातों को अपनाया और उनके व्यक्तिगत विकास को समर्पित करके उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान आदर्श बने। उनका व्यक्तित्व उनके आदर्शों, संगठनात्मक योगदान,और नेतृत्व कौशल के कारण पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के संदर्भ में, महात्मा गांधी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्वयं को समाज सेवा में समर्पित किया और गाँधीजी ने 'सेवा' को एक महान धर्म मानकर अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में उसे अमल में लाया। उनके द्वारा आयोजित श्सत्याग्रहश आंदोलन ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ समाज में जागरूकता पैदा की और एक एकता भावना को मजबूत किया। इस रूप में, महात्मा गांधी ने अपने व्यक्तिगत विकास को सामाजिक सेवा के माध्यम से दिखाया और अपने आदर्शों के प्रति विश्वास रखते हुए वे एक नेतृत्व आदर्श बने, जो आज भी हमारे समाज में प्रेरणा स्रोत हैं। उनका उदाहरण हमें यह सिखाता है कि सेवा, नेतृत्व, और समाज सेवा के माध्यम से हम अपने व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ समाज और देश के विकास में भी योगदान कर सकते हैं।

भारतीय इतिहास में, कई ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों का उदाहरण है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व विकास और राष्ट्रीय सेवा के माध्यम से बड़ी प्रेरणा दी है। एक ऐसा उदाहरण है भगत सिंह, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व को एक महान राष्ट्रीय संगठन के सदस्य के रूप में विकसित किया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने।

राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका और व्यक्तित्व विकास–

राष्ट्रीय सेवा योजना–सामाजिक सेवा के माध्यम से व्यक्तित्व विकास रू राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत युवाओं को विभिन्न सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलता है जैसे कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर, पर्यावरण संरक्षण, आदि। इन सामाजिक कार्यों में भाग लेने से युवा सीखते हैं कि उनका समर्पण और सेवाभाव कैसे उनके व्यक्तिगत विकास में मदद कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्वपूर्ण संकल्प : 'सेवा मे आत्मा को पाइए, सामाजिक सेवा के माध्यम से समृद्धि की ओर बढ़ते जाइए ।'

'सेवापरमोधर्मः'

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के आदर्श –

लीडरशिप और संगठनात्मक कौशल : राष्ट्रीय सेवा योजना के मार्गदर्शकों के मार्गदर्शन में, युवा स्वयं को संगठित करने और एक टीम के साथ काम करने का अवसर प्राप्त करते हैं। इसके माध्यम से वे नेतृत्व कौशल विकसित करते हैं और सामाजिक संगठनों में भाग लेने की क्षमता प्राप्त करते हैं जिस से उनका व्यक्तिगत विकास होता है।

अँधेरा इतना बाहर नहीं है !!

जितना इंसान के मन के अंदर फैला हुआ है !!

सफलता में इतना मत डूब जाना !!

कि सफलता से कष्ट मिलने लगे !!

इन दोनों पहलुओं पर राष्ट्रीय सेवा योजना से वास्तविक व्यक्तित्व का विकास संभव होता है–

सामाजिक सद्भावना और सहयोगितारू राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से युवा विभिन्न जातियों, धर्मों, संस्तियों और क्षेत्रों से आने वाले लोगों के साथ मिलकर काम करते हैं। इससे उनकी सामाजिक सद्भावना, सहयोगिता और सामाजिक विविधता की समझ बढ़ती है, जो उनके व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

मानव जीवन में संचार कौशल : एक अध्ययन

मोहम्मद काशिफ तौफीक (सहायक प्राध्यापक)
चौधरी चरण सिंह पी.जी. कॉलेज, हेवरा, इटावा (उत्तर प्रदेश)

सारांश

संचार कौशल और मानव जीवन वर्तमान युग की आवश्यकता है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए उत्ष्ट वक्ता होना अपरिहार्य है। इसी प्रकार आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होकर आप सहज ही दूसरों के सामने स्वयं को दूसरों से बेहतर प्रस्तुत कर सकते हैं। शानदार संभाषण कला और दूसरों को प्रभावित करने वाले व्यक्तित्व से आप प्रभावशाली ढंग से अपनी बात दूसरे के समक्ष रखकर जीवन में सफल हो सकते हैं। वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का है, जिसमें हर कोई दूसरे से आगे निकलने की होड़ में जीत पाकर अपना उत्कर्ष करना चाहता है। नौकरियों हेतु साक्षात्कार में भी अच्छे वक्ता और आकर्षक व्यक्तित्व का होना, ये दो ऐसे गुण हैं, जिनसे आप सफल हो सकते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के एकीत स्नातक सह–पाठ्यक्रम में संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास जैसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय के प्रश्नपत्र को स्थान दिया गया है, जो प्रदेश के विद्यार्थियों को श्रेष्ठ वक्ता बनने तथा आकर्षक व्यक्तित्व धारण करने में सहायक सिद्ध होगा।

मनुष्य जन्म से एक सामाजिक प्राणी होता है तथा समाज में रहते हुए बेहतर सामंजस्य एवं व्यवहारिक गुणों का विकास करने हेतु वह अपने अंदर भाषाई दक्षता विकसित करने का प्रयास करता है। ये भाषायी दक्षता वह बेहतर संचार कौशलों के माध्यम से प्राप्त करता है जिसके लिए वह अपने भावों एवं विचारों का आदान–प्रदान करता है जो उसकी जन्मजात एवं स्वाभाविक प्रक्रिया का ही भाग होता है। संचार किसी भी समाज के लिए अति आवश्यक माना जाता है दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जो स्थान शरीर के लिए भोजन का है, वही समझ में संचार का है। क्योंकि मनुष्य का शारीरिक एवं मानसिक विकास पूरी तरह से इसी संचार प्रक्रिया से जुड़ा होता है प्रसिद्ध सामाजिक वैज्ञानिकों का इस संबंध में मानना है कि किसी भी परिवार, समूह, समुदाय तथा समाज में यदि एक दूसरे के मध्य वार्तालाप को बंद कर दिया जाए तो निश्चय ही सामाजिक बिखराव की प्रक्रिया आरंभ हो जाएगी तथा मानसिक वितियाँ स्वयं जन्म लेने लगेगी। अतः ऐसी स्थिति में किसी भी व्यक्ति का भाषाई ष्टि से सक्षम होना आवश्यक है तभी वह बेहतर संचार स्थापित कर सकता है।

संचार कौशल की व्याख्या करने से पूर्व संक्षेप में संचार के बारे में जान लेना आवश्यक होगा अर्थात संचार शब्द लैटिन भाषा के कम्यूनिस से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ जव पउचंबज या उंम बवउउवद होता है और सरल शब्दों में स्पष्ट किया जाए तो कह सकते हैं की मन के विचारों व भावों का आदान–प्रदान करना अथवा विचारों को सर्वमान्य बनाकर दूसरे के साथ आदान–प्रदान करना ही संचार है। जैसा कि न्यूमैन ने कहां है– ''दो या दो से अधिक व्यक्तियों के तथ्यों विचारों तथा भावनाओं का पारस्परिक आदान–प्रदान ही संचार है''।

संचार एक व्यापक शब्द है जिसके अंतर्गत बोलना, सोचना,सुनना, देखना, लिखना, पढ़ना, व्यवहार करना, विचार विमर्श, वाद–विवाद आदि सब आ जाता है। संचार की यह प्रक्रिया सिर्फ मनुष्य तक ही सीमित नहीं होती बल्कि इस सृष्टि में विद्यमान अन्य सभी प्राणी व जीव जन्तु भी किसी न किसी रूप में संचार करते हैं। संचार ही वह माध्यम है जिसके द्वारा जानकारी को सुव्यवस्थित ढंग से पहुंचाया जा सकता है इसके अतिरिक्त बेहतर प्रबंधन कौशल में भी संचार अपनी भूमिका का निर्वहन भली भांति करता है।

जहां तक संचार कौशल का प्रश्न है तो स्पष्टतः कह सकते हैं कि आम भाषा में किसी एक व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे

व्यक्ति से की गई बातचीत के तरीकों को ही संचार कौशल कहा जाता है। यह संचार कौशल सिर्फ बातचीत के द्वारा ही संभव नहीं है बल्कि बहुत से ऐसे माध्यम होते हैं जिनसे संचार कौशल को विकसित किया जा सकता है। संचार कौशल और भी प्रभावी ढंग से समझने हेतु संचार कौशलों के प्रकारों का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है जिन्हें हम निम्न रूपों में उल्लेखित कर सकते हैं–

1–मौखिक संचार– इस प्रणाली के अंतर्गत एक या एक से अधिक लोगों की बातों को संप्रेषण का रूप दिया जाता है इसका उपयोग अधिकतर समूहों तथा टेलीफोन के माध्यम से करते हैं।

2– लिखित संचार– इसके अंतर्गत अपनी बात को लिखित रूप से समझाने का प्रयास करते हुए किसी के भी व्यक्तित्व को प्रभावित किया जाता है। उदाहरणतः विज्ञापन सामग्री, प्रिंट मीडिया आदि इस तरह के संचार हेतु आवश्यक माने जाते हैं।

3– अमौखिक संचार– इसके अंतर्गत व्यक्ति अपने शारीरिक हाव–भाव के माध्यम से संचार को पूर्ण करने का प्रयास करता है।

उपर्युक्त संचार कौशल के प्रकार व्यक्ति के विचारों एवं रायों को अभिव्यक्त करने का एक प्रभावी मार्ग प्रदान करते हैं जिससे न केवल संचार की प्रक्रिया पूर्ण होती है बल्कि इससे व्यक्तित्व में आवश्यक गुणों का संचार भी हो जाता है। चूँकि संचार कौशल मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है अतः इसे और भी बेहतर बनाने के लिए व्यक्ति को सरल एवं मृदुल भाषी होना, व्यवस्थित संदेश प्रसारित करने की क्षमता, भेदभाव का अभाव, शारीरिक हाव– भाव, कुशल श्रोता, सकारात्मक सोच आदि का होना आवश्यक होता है। इन सभी से न केवल अच्छा एवं प्रभावी कौशल उत्पन्न होता है बल्कि संचार कौशल को और भी बेहतर बनाया जा सकता है। संचार कौशल व्यक्ति के लिए कितना आवश्यक है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह स्कूलों तथा विद्यालयों में एक अतिरिक्त विषय के रूप में पढ़ाया जाता है परंतु विद्यालयों में शिक्षण कार्य करा रहे अध्यापकों का यह कर्तव्य है कि वह इस महत्वपूर्ण विषय को व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन में उतारने का प्रयास करें। इसी को ष्टि में रखते हुए संचार कौशल के सात आवश्यक तत्वों सुनना, अनकहा संचार, स्पष्ट होना, संक्षिप्त होना, आत्मविश्वासी होना, व्यक्तित्व होने के नाते तथा धैर्य यह सभी संचार कौशल को प्रभावी बनाने का कार्य करते हैं तथा व्यक्ति का संपूर्ण संसार भी इन्ही कौशलों के माध्यम से होता है। प्रभावी रूप से संवाद करने के लिए सीखना एक कौशल है जो स्कूल पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए क्योंकि स्कूल ही वह स्थान है जहां पर बालक अपने भाषायी गुणों के द्वारा संवाद स्थापित करता है जो निश्चय ही संचार कौशल को विकसित करने का काम करता है।

अंततः सभी उपर्युक्त बिंदुओं पर चर्चा करने के पश्चात यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि संचार कौशल हमारी दिनचर्या में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रखता है। अर्थात चाहे व्यक्ति का व्यवसायिक भाग हो या उसका छात्र जीवन हो दोनों में ही संचार कौशल अपनी भूमिका का सही ढंग से निर्वहन करता है। उदाहरणतः कोई व्यक्ति अपने ऑफिस में खुद को एक लीडर की तरह पेश करता है तथा किसी भी समस्या को सही ढंग से दूसरों के समक्ष रख लेता है यह सब उसके प्रभावी संचार कौशल का ही भाग होता है, वहीं दूसरी ओर एक छात्र होनहार होने के बावजूद अपनी खराब संचार कौशल होने के कारण अन्य छात्रों से काफी पीछे रहा जाता है। अतः दोनों ही स्थिति में संचार कौशल का प्रभावी होना आवश्यक माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुलश्रेष्ठ, एस० पी०, शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

बिसारिया, पुनीत, संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास, प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली।

संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास

डॉ. अर्चना शर्मा, सहायक प्राध्यापक
बाबूलाल गौर शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल
शिवांगी शर्मा, विद्यार्थी, बी.ए., एल.एल.,बी.
जागरण लेक सिटी विश्वविद्यालय, भोपाल

संचार कौशल व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास और उसके विकास और उसके सफलता के लिए सहायक होता है संचार के माध्यम से दो या उससे अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है जिसमें एक दूसरे के प्रति कल्याण की भावना व आपसी सहयोग से विकास की योजना बनती है संचार मजबूत सामाजिक संबंधों की नींव डालता है।

व्यक्तित्व का तात्पर्य किसी व्यक्ति की विशेषताओं ,शैली,व्यवहार मानसिकता, दृष्टिकोण को समझने और दुनिया को देखने के अपने अनूठे तरीके से है।

आनुवांशिक कारक,पारिवारिक पृष्ठभूमि, विविध संस्कृतियाँ पर्यावरण वर्तमान परिस्थितियाँ किसी के व्यक्तित्व को बिखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं यह आपके व्यक्तित्व को दर्शाता है। आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की सभी सराहना और सम्मान करते हैं।

प्रभावी संचार कौशल किसी के व्यक्तित्व को निखारने में महत्ववूर्ण भूमिका निभाते हैं। संचार व्यक्तियों को स्वंय को सबसे विश्वसनीय तरीके से अभिव्यक्त करने में मदद करता है। आपके विचारों,भावनाओं और ज्ञान को सबसे वांछनीय तरीके से प्रसारित किया जाना चाहिए प्रभावी संचार इसमें आपकी मदद करते हैं।

एक व्यक्ति को अपने पहचान बनाने के लिए वास्तव में अच्छा बोलना चाहिए । सभी लोगों में उत्कृष्ट संचार कौशल नहीं होता है वे समय और अभ्यास के साथ इसे हासिल कर लेते हैं। अच्छे संचार कौशल वाले लोगों का व्यक्तित्व उन लोगों की तुलना में बेहतर और और प्रभावशाली होता है जिन्हें संचार करने में समस्या होती है क्योंकि दूसरों के साथ बातचीत करना उनके लिए कोई चुनौती नहीं है।

प्रभावी संचार कौशल वाले व्यक्ति आसपास के अन्य लोगों से आसानी से बातचीत कर सकते हैं चाहे वे उनके सभी कर्मचारी सहकर्मी परिवार आदि हों।

प्रभावी संचार कौशल व्यक्तियों के बीच बंधन को मजबूत करते हैं। यह अन्य लोगों के साथ पारस्परिक संबंधों को बेहतर बनाने के लिए भी कहा जाता है।

प्रभावी संचार कौशल के लिए शब्दों का सावधानी पूर्वक चयन आवश्यक है। आपको वास्तव में यह जानना होगा कि आप क्या बोल रहे हैं। आप कभी नहीं जानते कि किस बात से दूसरे व्यक्ति को ठेस पहुंच सकती है। किसी के साथ अभद्र व्यवहार करने के बारे में कभी भी न सोचें।

ढृढ़तापूर्वक बोलें ताकि दूसरा व्यक्ति समझ सके कि आप क्या संवाद करना चाहते हैं। आपके बोलने का अंदाज आपके व्यक्तित्व पर जबरदस्त प्रभाव डालता है। धीरे–धीरे बोलना हमेशा मदद करता है। क्योंकि ये आपको उचित शब्द ढूढ़ने में मदद करता है और विचारशीलता को भी दर्शाता है। दूसरे व्यक्ति को महत्व का एहसास कराने के लिए महत्वपूर्ण और प्रासंगिक शब्दों पर जोर दें।

आत्मविश्वास से बोलना एक प्रभावशाली और महान व्यक्ति की कुंजी है। दूसरों के साथ बातचीत करते समय घबराहट के लक्षण न दिखाऐं। तब तक घबराने का कोई मतलब नहीं है जब तक आप खुद इस बात को लेकर निश्चिंत न हो कि आप क्या बोल रहे हैं।दूसरे व्यक्ति के साथ उचित नेत्र संपर्क विकसित करें दूसरे व्यक्ति से बातचीत करते समय इधर–उधर न देखें।

अपनी बॉडी लेंग्वेज का ख्याल रखें,सही बॉडी लेंग्वेज से आत्मविश्वास झलता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व की और अच्छा बनाता है।

शब्दों का उच्चारण का विशेष ध्यान रखें। यदि आप इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि किसी विशेष शब्द के उच्चारण कैसे किया जाए तो अपने भाषण में उससे बचे शब्दों का गलत उच्चारण करने से दूसरों का बुरा प्रभाव पड़ता है।

वास्तव में आपको यह साबित करने के लिए नकली लहजे में बोलने की जरूरत नहीं है कि आपके पास उत्कृष्ट संचार कौशल है दूसरों की नकल करने से बचें एक व्यक्ति के पास बाकियों से अलग दिखने की अपनी शैली होनी चाहिए। स्पष्ट रूप से बोलना व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारता है और उसे दूसरों से अलग बनाता है।

व्यक्तित्व विकास महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको खुद को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। व्यक्तित्व विकास का लक्ष्य एक से अधिक सर्वांगीण ,आत्म–जागरूक व्यक्ति बनने में मदद करता है। यह आपके संचार कौशल को बेहतर बनाने और अपनी भावनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने का एक तरीका है।

व्यक्तित्व विकास में संचार कौशल और डिजिटल शिष्टाचार की उपयोगिता

डॉ. सुनीता त्रिपाठी, प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
शास. कन्या उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर

आप चाहें विद्यार्थी हो या एक सामान्य व्यक्ति या फिर किसी संस्थान में नौकरी करते हो, प्रत्येक स्थिति में आपका संचार कौशल उत्कृष्ट होना चाहिए। वरिष्ठों, सहकर्मियों और अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता आवश्यक है। डिजिटल युग में आपकों पता होना चाहिए कि व्यक्तिगत रूप से और साथ ही फोन, ईमेल और सोशल मीडिया के माध्यम से संदेशों को प्रभावी ढंग से कैसे संप्रेषित और प्राप्त किया जाए। ये संचार कौशल आपको आपके पूरे कैरियर में सफल होने में मदद करेंगे। प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम होना शायद सभी जीवन कौशलों में सबसे महत्वपूर्ण है। यह वह कौशल है जो हमें अन्य लोगों को जानकारी देने और हमें जो कहा जाता है उसे समझने में सक्षम बनाता है। संचार, अपने सरलतम रूप में, सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने का कार्य है। यह मौखिक रूप से (आवाज का उपयोग करके), लिखित रूप से (पुस्तकों, पत्रिकाओं, वेबसाइटों या ईमेल जैसे मुद्रित या डिजिटल मीडिया का उपयोग करके), दृश्य रूप में (लोगो, मानचित्र, चार्ट या ग्राफ का उपयोग करके) या गैर–मौखिक रूप से (बॉडी लैंग्वेज, इशारों का उपयोग करके, स्वर और आवाज की पिच) हो सकता है। व्यवहार में, यह अक्सर इनमें से कई का संयोजन होता है।

संचार कौशल में महारत हासिल करने के लिए जीवन भर का समय लग सकता है। वास्तव में कोई भी कभी भी उन पर पूर्ण महारत हासिल करने का दावा नहीं कर सकता है। हालांकि, कई चीजें है जो आप अपने संचार कौशल में सुधार करने के लिए काफी आसानी से कर सकते हैं और सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप प्रभावी ढंग से सूचना प्रसारित करने और प्राप्त करने में सक्षम हैं। संचार एक दोतरफा प्रक्रिया है। अर्थात् इसमें सूचना भेजना और प्राप्त करना दोनों शामिल हैं। यदि आप सूचना के 'प्रेषक' है, तो इसका मतलब है कि इसे स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना (चाहे लिखित रूप में या आमने–सामने), फिर अपने श्रोताओं की समझ की जाँच करने के लिए प्रश्न पूछना। फिर आपको उनके उत्तरों को भी सुनना चाहिए और यदि आवश्यक हो, तो आगे स्पष्ट करें।

यदि आप 'प्राप्तकर्ता' हैं, तो इसका मतलब है कि जानकारी को ध्यान से सुनना, फिर जाँचना कि आप समझ गए हैं। यह सनिश्चित करने के लिए आप प्रश्न पूछ सकते हैं। आपके व्यक्तिगत जीवन में सामाजिक जीवन में तथा व्यावसायिक जीवन में अच्छा संचार कौशल आपको दूसरों को समझने और समझाने में मदद करके आपके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है।

यहाँ कुछ विशिष्ट संचार कौशल दिए गए हैं जो अति आवश्यक है –

सुनना – एक अच्छा श्रोता होना एक अच्छा संचारक बनने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। कोई भी व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संवाद करना पसंद नहीं करता है जो केवल अपनी ही बात कहता है और दूसरे व्यक्ति को सुनने के लिए तैयार नहीं है। यदि आप एक अच्छे श्रोता नहीं हैं, तो यह समझना कठिन होगा कि आपसे क्या करने के लिए कहा जा रहा है। अच्छा श्रोता एक अच्छा वक्ता होता है।

सुनना संचार का एक अनिवार्य हिस्सा है और असर से अलग है। एक अच्छा और धैर्यवान श्रोता होने से आपको न केवल काम या घर पर कई समस्याओं को हल करने में मदद मिलती है, बल्कि दुनिया को दूसरे की आँखों से देखने में

भी मदद मिलती है, जिससे आपकी समझ खुलती है। सुनते समय, आपको जो कहा जा रहा है, उस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं, जो आपसे अधिक जानता है, तो एक बच्चे की तरह बनें और जितना हो सके उसकी बात ध्यान से सुनें। यदि आप अपने से कम ज्ञान वाले किसी व्यक्ति का सामना करते हैं, तो विनम्र रहें औश्र उसे अपने जैसा अच्छा या उससे भी बेहतर बनाने का प्रयास करें। एक अच्छा श्रोता हमेशा एक अच्छा वक्ता होता है।

अशाब्दिक संचार – अशाब्दिक संचार जैसे आपकी बॉडी लैग्वेज, आँखों का संपर्क, हाथ के हावभाव और आवाज के स्वर सभी उस संदेश को प्रभावी बनाते हैं जिसे आप व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। खुला रूख (हाथ खुले, पैर आराम से) और मित्रता का स्वर आपको स्वीकार्य दिखाई देगा और दूसरों को आपके साथ खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। बात करते समय अन्य लोगों के अशाब्दिक संकेतों पर भी ध्यान दें। अक्सर अशाब्दिक संकेत बताते हैं कि कोई व्यक्ति वास्तव में कैसा महसूस कर रहा है। उदाहरण के लिए, यदि वह व्यक्ति आपकी आँखों में नहीं देख रहा है, तो इसका मतलब है वह असहज हो सकता है या सच्चाई छिपा रहा है। इसी प्रकार आपको भी सामने वाले को आँखों में देखना चाहिए ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि आप उस पर और बातचीत पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। (हालाँकि) यह सुनिश्चित करें कि उस व्यक्ति को घूरें नहीं, जो उसे असहज कर सकता है।)

स्पष्टता और संक्षिप्तता – अच्छे संचार कौशल का अर्थ है पर्याप्त कहना ''न बहुत अधिक न बहुत कम''। आप जो कहना चाहते हैं उसे स्पष्ट और सीधे कहें, चाहे आप किसी से व्यक्तिगत रूप से बात कर रहे हो या फोन पर या ईमेल के माध्यम से। अपने संदेश को कम से कम शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास करें। यदि आप अपनी बात स्पष्टता से नहीं कहते हैं, तो आपका श्रोता या तो ध्यान नहीं देगा या समझ नहीं पायेगा कि आप क्या चाहते हैं ? अत्याधिक बात करने से आपका श्रोता भ्रमित हो सकता है।

आत्मविश्वास – दूसरों के साथ बातचीत करते समय आत्मविश्वास होना महत्वपूर्ण है। आत्मविश्वास यह प्रदर्शित करता है कि आप जो कह रहे हैं उस पर आप विश्वास करते है और आगे भी करेंगे। आत्मविश्वास से बात करना उतना ही सरल हो सकता है जितना कि आँख से संपर्क करना। अपनी बात आत्मविश्वास के साथ रखने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि आप कठोर भाषा और आक्रामक अशाब्दिक संचार का उपयोग करें। अपनी बातचीत को कदापि प्रश्नोत्तरी में न बदलने दें।

भावना नियंत्रण – संचार में, भावनाएँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निर्णय लेना आपके सोचने के तरीके से आपके महसूस करने के तरीके को अधिक प्रभावित करता है। भावनाओं द्वारा निर्देशित, आपका अशाब्दिक व्यवहार अन्य लोगों की आपके प्रति समझ को प्रभावित करता है। यदि आप अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं तो इस बात की पूरी सम्भावना रहती है कि सामने वाला आप पर नियंत्रण प्राप्त कर लें। इस परिस्थिति में आप अपनी आवश्यकताओं और अनुभवों को व्यक्त करने में सक्षम नहीं होंगे। इसके परिणामस्वरूप निराशा, गलतफहमी और संघर्ष हो सकता है।

खुले विचारों वाला – एक अच्छे संचारक को किसी भी बातचीत में लचीले, खुले दिमाग से प्रवेश करना चाहिए। दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को सुनने और समझने के लिए खुले रहें, न कि केवल अपना संदेश पहुँचाने के लिए। जिन लोगों से आप असहमत हैं, उनके साथ भी संवाद करने के इच्छुक होने से, आप अधिक ईमानदार और उत्पादक बातचीत करने में सक्षम होंगे।

सम्मान – यदि आप दूसरे व्यक्ति और उनके विचारों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं तो लोग आपके साथ संवाद

करने के लिए अधिक खुले होंगे। बातचीत के दौदान किसी व्यक्ति के नाम का उपयोग करना, आँख से संपर्क करना और जब कोई व्यक्ति बोलता है तो सक्रिय रूप से सुनना जैसी सरल क्रियाएँ व्यक्ति को सम्मान का अहसास कराती हैं। फोन पर बात करते समय ध्यान भटकाने से बचें और बातचीत पर ध्यान केंद्रित रखें। अपने संदेश को संपादित करने के लिए समय निकालकर ई–मेल के माध्यम से सम्मान व्यक्त करें। यदि आप एक अस्पष्ट लिखित, भ्रमित करने वाला ई–मेल के माध्यम से सम्मान व्यक्त करें। यदि आप एक अस्पष्ट लिखित, भ्रमित करने वाला ईमेल भेजते हैं, तो प्राप्तकर्ता यह सोचेगा कि आप उसके साथ अपने संचार के माध्यम से सोचने के लिए उसका पर्याप्त सम्मान नहीं करते हैं।

प्रतिक्रिया – बातचीत के दौरान उचित रूप से प्रतिक्रिया देने और प्राप्त करने में सक्षम होना एक महत्वपूर्ण संचार कौशल है। प्रबंधकों और पर्यवेक्षकों को लगातार कर्मचारियों को रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए। प्रतिक्रिया देने में प्रशंसा करना भी शामिल है। आपको दूसरों की प्रतिक्रिया को स्वीकार करने और प्रोत्साहित करने में भी सक्षम होना चाहिए। इसी तरह आपको दी गई प्रतिक्रिया को सुनें, यदि आप इस मुद्दे के बारे में अनिश्चित है तो स्पष्ट प्रश्न पूछें और प्रतिक्रिया को लागू करने का प्रयास करें।

सही माध्यम चुनना – संचार कौशल में यह जानना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि संचार के किस रूप/माध्यम का उपयोग किया जाए। कुछ गंभीर बातचीत (छँटनी, इस्तीफा, पदोन्नति, वेतन, कार्यभार, कार्यस्थल में परिवर्तन आदि) हमेशा व्यक्तिगत रूप से की जाती हैं। आपको उस व्यक्ति के बारे में भी सोचना चाहिए जिससे आप बात करना चाहते हैं। यदि वे बहुत व्यस्त व्यक्ति हैं तो आप ई–मेल के माध्यम से अपना संदेश भेज सकते हैं। लोग आपके संचार के विचारशील साधनों की सराहना करेंगे और आपके प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की अधिक संभावना होगी।

मित्रता – बातचीत के दौरान मित्रता का भाव और चेहरे पर मुस्कान आपको एक अच्छा संप्रेषक बनाते है। बातचीत के दौरान सामान्य रूप से पूछे गए कुछ व्यक्तिगत प्रश्नों (आप कैसे हैं, आशा है कि परिवार में सब बढ़िया हैं, आपका स्वास्थ्य कैसा है आदि) तथा गर्मजोशी से आप अपने सहकर्मियों और मित्रों के साथ खुले और ईमानदार संप्रेषक की छाप छोड़ सकते हैं।

कौशल समूह क्या है – कौशल समूह, किसी व्यक्ति के कौशल और क्षमताओं का एक संग्रह जिसे वह पेशेवर या रचनात्मक कार्यों में लागू कर सकता है। एक कौशल समूह किसी कार्य को करने के लिए आवश्यक क्षमता, ज्ञान, अनुभव और क्षमताओं के एक विशिष्ट क्षेत्र को संदर्भित करता है। कुछ लोग कौशल समूह को 'दक्षताएँ' या 'क्षमताएँ' भी कहते हैं। एक कौशल समूह या समुच्चय व्यक्ति के ज्ञान, व्यक्तिगत गुणों और तकनीकी क्षमताओं का संयोजन है जिसे उसने अपने जीवन और कार्य के माध्यम से विकसित किया है। एक कौशल समूह में एक नौकरी करने के लिए आवश्यक ज्ञान, योग्यता और अनुभव शामिल है।

व्यावहारिक कौशल – व्यावहारिक कौशल व्यक्तिपरक कौशल हैं जिन्हें मापना बहुत कठिन होता है। इसे 'लोगों के कौशल' या 'पारस्परिक कौशल' के रूप में भी जाना जाता है। किसी के व्यक्तित्व और दूसरों के साथ उसके काम करने की क्षमता को मापना और उससे संबंधित पूर्ण जानकारी होना कुछ मुश्किल है। व्यावहारिक कौशल में व्यक्तिगत गुण, व्यक्तिगत लक्षण और काम पर सफलता के लिए आवश्यक संचार क्षमताएँ शामिल हैं। व्यावहारिक कौशल यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति दूसरों के साथ अपने कार्य संबंधों में किस प्रकार बातचीत करता है ?

व्यावहारिक कौशल में निम्न कौशल शामिल हैं :– अनुकुलन क्षमता, संचार कौशल, समझौता, रचनात्मक सोच,

रचनात्मक सोच, निर्भरता, नेतृत्व, सुनना, कार्य नीति, टीम वर्क, सकारात्मकता, समय प्रबंधन, प्रेरणा, समस्या को सुलझाना, आत्मविश्वास

तकनीकी कौशल – तकनीकी कौशल उस कौशल समूह (H) का हिस्सा है जो नौकरी के लिए आवश्यक है। इनमें विशिष्ट कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल और किसी व्यक्ति को सफलतापूर्वक नौकरी करने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता शामिल है। तकनीकी कौशल मात्रात्मक और सिखाने योग्य है। इनमें विशिष्ट तकनीकी ज्ञान और नौकरी के लिए आवश्यक योग्यताएँ शामिल हैं। औपचारिक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से तकनीकी कौशल हासिल किए जाते हैं, जिसमें कॉलेज, शिक्षुता, अल्पकालिक प्रशिक्षण कक्षाएँ, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और प्रमाणन कार्यक्रम, साथ ही साथ नौकरी प्रशिक्षण शामिल हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

(1) डॉ. राकेश कुमार परमार, राम प्रसाद एण्ड संस, विभागाध्यक्ष, गणित एवं कम्प्यूटर
(2) डॉ. अमित कुमार सोनी, राम प्रसाद एण्ड संस, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान बाल विहार हमीदिया रोड, भोपाल
(3) डी. बी. के पाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
(4) योजना पत्रिका, माह नवम्बर 2018

डिजिटल शिष्टाचार

ज्योति, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान
बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल

सार :

डिजिटल युग के तेजी से विकसित हो रहे परिश्य में, 'डिजिटल शिष्टाचार' या 'डिजिटल नागरिकता' की अवधारणा ने पर्याप्त महत्व प्राप्त कर लिया है। जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाती है, न केवल इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है, बल्कि डिजिटल क्षेत्र में नेविगेट करते समय नैतिक मानकों और मूल्यों का पालन करना भी महत्वपूर्ण हो जाता है। डिजिटल शिष्टाचार में डिजिटल संसाधनों, ऑनलाइन संचार और प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों का उचित और जिम्मेदार उपयोग शामिल है। यह सार डिजिटल शिष्टाचार के सार पर प्रकाश डालता है, इसके मूल सिद्धांतों और आज के समाज में इसके कार्यान्वयन की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। इस अवधारणा में व्यक्तियों को ऑनलाइन गोपनीयता बनाए रखने, बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करने, ऑनलाइन बातचीत में सहानुभूति और सम्मान प्रदर्शित करने और प्रौद्योगिकी के संभावित नकारात्मक प्रभावों के बारे में सतर्क रहने के बारे में शिक्षित करना शामिल है।डिजिटल शिष्टाचार को अपनाकर, व्यक्ति सकारात्मक और रचनात्मक डिजिटल वातावरण बनाने में प्रभावी ढंग से योगदान दे सकते हैं। इस पेपर का उद्देश्य डिजिटल शिष्टाचार के बहुमुखी पहलुओं का पता लगाना है, प्रौद्योगिकी और मानव मूल्यों के बीच सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालना है। सारांश व्यक्तियों को डिजिटल युग में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल और जागरूकता से लैस करने के लिए विभिन्न शैक्षिक प्रणालियों और पहलों में डिजिटल शिष्टाचार शिक्षा को शामिल करने की तात्कालिकता को रेखांकित करता है।

महत्वपूर्ण शब्द : डिजिटल नागरिकता, डिजिटल शिष्टाचार, ऑनलाइन संचार, डिजिटल युग

परिचय :

'डिजिटल शिष्टाचार' एक यथार्थ विश्व में आधुनिक तकनीकी युग में जो आदर्शों और नैतिक मूल्यों का पालन करने की आवश्यकता होती है, वह बताता है। यह सिखाता है कि इंटरनेट, सोशल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेज आदि का सही तरीके से उपयोग कैसे किया जाए ताकि यह हमारे जीवन को बेहतर बना सके। डिजिटल शिष्टाचार का मुख्य उद्देश्य डिजिटल संसाधनों को सही तरीके से प्रयोग करने के नैतिक मानकों और मूल्यों का संरक्षण करना है। डिजिटल शिष्टाचार के अंतर्गत कुछ मुख्य बिंदुगत शामिल हो सकते हैंरू

1.डेटा नियंत्रण और गोपनीयता : डिजिटल शिष्टाचार उपयोगकर्ताओं को सूचना की सुरक्षा और गोपनीयता के महत्व के बारे में शिक्षा देता है।

2.आधारित सूचना : डिजिटल स्रोतों से जुड़ी सूचना की सत्यता और विश्वसनीयता की महत्वपूर्णता को बताता है।

3.व्यक्तिगत सुरक्षा : डिजिटल शिष्टाचार व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के बारे में शिक्षा देता है और सुरक्षा की महत्वपूर्णता को उजागर करता है।

4.सोशल मीडिया एतिकेट : सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग करने के नियमों और एतिकेट को सीखता है।

5.कॉपीराइट और प्लेजियरिज़म : ऑनलाइन संसाधनों का उचित उपयोग करने के महत्व को बताता है और नकलचीनी से बचाव के बारे में शिक्षा देता है।

6.डिजिटल संज्ञानता : डिजिटल संसाधनों का सही तरीके से प्रयोग करने की कला को सिखाता है, जैसे कि इंटरनेट पर सत्य से भिन्नता की पहचान करना।

7.ऑनलाइन सुरक्षा : बच्चों को ऑनलाइन में सुरक्षित रहने के तरीकों को सिखाना भी डिजिटल शिष्टाचार का हिस्सा हो सकता है।

8.बुरे प्रभाव से बचाव : डिजिटल मीडिया के बुरे प्रभावों से बचने के तरीकों को सिखाने में मदद कर सकता है।

डिजिटल शिष्टाचार का महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि यह हमें डिजिटल दुनिया में सही और गलत का विवेक देने में मदद करता है और साथ ही डिजिटल संसाधनों को जरूरतमंदों के लिए सही तरीके से प्रयोग करना है

डिजिटल युग में डिजिटल शिष्टाचार की आवश्यकता :

आधुनिक युग में तकनीकी विकास और डिजिटलीकरण के साथ ही डिजिटल संसाधनों का उपयोग हमारे जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेज, आदि ने हमारे जीवन को अनुवादित कर दिया है। इस नए डिजिटल संवाद मंच के साथ आने वाले नए चुनौतियों के साथ–साथ नैतिक और सामाजिक मुद्दों को भी सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में, 'डिजिटल शिष्टाचार' या 'डिजिटल नागरिकता' की आवश्यकता काफी महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल शिष्टाचार का मतलब है कि हम डिजिटल माध्यमों का सही तरीके से उपयोग करके नैतिकता और सामाजिक मूल्यों का पालन करें। यह सिखाता है कि व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा कैसे करें, ऑनलाइन बर्ताव में सम्मानभाव और सहानुभूति कैसे दिखाएं, और डिजिटल मीडिया के साथ सही तरीके से कैसे व्यवहार करें।

डिजिटल युग में डिजिटल शिष्टाचार की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि :

1.ऑनलाइन प्रवेश में नैतिक मूल्यों की रक्षा : इंटरनेट पर व्यक्तिगत जानकारी शेयर करते समय नैतिकता की रक्षा करना महत्वपूर्ण है।

2.डिजिटल संसाधनों के ठीक उपयोग की सिखावट : सही तरीके से डिजिटल संसाधनों का उपयोग करना स्थायी और सकारात्मक परिणाम देता है।

3.सोशल मीडिया के व्यवहार में सम्मानभाव : सोशल मीडिया पर दूसरों के साथ सही तरीके से व्यवहार करने की कला को सीखने से सम्मानभाव का पालन किया जा सकता है।

4.ऑनलाइन प्लेजियरिज़म से बचाव : अनुचित तरीके से किए गए साभार से बचाव के तरीकों की समझ सभी के लिए महत्वपूर्ण है।

5.व्यक्तिगत और पेशेवर विकास : डिजिटल शिष्टाचार सही दिशा में आगे बढ़ने की क्षमता को बढ़ावा देता है, जो व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के माध्यम से संभव होता है।

डिजिटल शिष्टाचार की आवश्यकता उन सभी के लिए है, चाहे वे बच्चे हों, वयस्क, पेशेवर, या शैक्षिक क्षेत्र में हों। यह व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों का सही तरीके से उपयोग करने की आदत को बढ़ावा देता है और एक सकारात्मक डिजिटल दुनिया की नींव रखता है।

डिजिटल युग का अर्थ :

'डिजिटल युग' एक ऐसा युग है जिसमें तकनीकी उन्नति और डिजिटल संसाधनों का अत्यधिक प्रयोग हो रहा

है। इस युग में, तकनीकी डिवाइसेज और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसे कि कंप्यूटर, स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक खबरें, सोशल मीडिया, आदि का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है।

इस युग में, लोग डिजिटल तरीकों से संचार करते हैं, विद्या प्राप्त करते हैं, व्यापार करते हैं, सामाजिक संवाद में शामिल होते हैं, और संवाद के साधनों का प्रयोग करते हैं। इसके साथ ही, सांख्यिकी, बिग डेटा, कंप्यूटेशनल विज्ञान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, और इनोवेशन के क्षेत्र में भी गहरी प्रगति हो रही है। डिजिटल युग ने समाज, व्यापार, शिक्षा, संवाद, रोज़गार, और विज्ञान में बदलाव लाया है। इसके साथ ही, यह नए चुनौतियों और समस्याओं को भी साथ लाता है, जैसे कि डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा, डिजिटल विभाजन, और तकनीकी ज्ञान की उपेक्षा। संक्षिप्त शब्दों में, षडिजिटल युगष एक ऐसा समय है जब तकनीकी उन्नति ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन लाया है और हम सभी को डिजिटल माध्यमों के सही तरीके से उपयोग की दिशा में मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

डिजिटल शिष्टाचार के विविध पक्ष :

डिजिटल शिष्टाचार के विभिन्न पक्षों को समझने से पहले, हमें डिजिटल शिष्टाचार का मतलब समझना महत्वपूर्ण है। डिजिटल शिष्टाचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता के मानकों को डिजिटल माध्यमों के उपयोग के संदर्भ में आवश्यकतानुसार पुनरावलोकन किया जाता है। इसके विविध पक्ष निम्नलिखित हो सकते हैं :

1.गोपनीयता का पक्ष : डिजिटल शिष्टाचार में व्यक्तिगत जानकारियों का सत्यापन करने के लिए अधिकतम प्रयास किया जाना चाहिए ताकि उपयोगकर्ता की गोपनीयता सुरक्षित रहे। इस पक्ष के अनुसार, सेंसिटिव जानकारियों का सुरक्षित और निजी रूप से उपयोग होना चाहिए और उपयोगकर्ता की सहमति के बिना इनका प्रयोग नहीं होना चाहिए।

2.व्यावसायिकता का पक्ष : डिजिटल शिष्टाचार को व्यावसायिक ष्टिकोण से देखने वाले लोग यह मानते हैं कि उपयोगकर्ताओं को उनकी पसंदों और आवश्यकताओं के आधार पर व्यक्तिगत अनुभव प्रदान किया जाना चाहिए। उनके अनुसार, यह मदद करता है कि उपयोगकर्ताएँ डिजिटल माध्यमों का सही तरीके से उपयोग कर सकें और उन्हें अधिक सकारात्मक अनुभव मिले।

3.सामाजिक उत्तरदायित्व का पक्ष : डिजिटल शिष्टाचार के इस पक्ष में, उपयोगकर्ताओं के पास सामाजिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे डिजिटल माध्यमों का सही तरीके से और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में उपयोग करें। उन्हें झूठी खबरों, अवैध साहित्य, और आतंकवादी गतिविधियों से दूर रहने की स्मृति रखनी चाहिए।

4.सृजनात्मकता का पक्ष : डिजिटल शिष्टाचार के इस पक्ष में, उपयोगकर्ताओं को यह प्रोत्साहित किया जाता है कि वे डिजिटल माध्यमों का सही तरीके से उपयोग करके सृजनात्मक और नवाचारी आवश्यकताओं का समाधान निकालें। यह उन्हें नए रूपों में सोचने और सीखने की प्रेरणा देता है।

5.व्यक्तिगतीकरण का पक्ष : डिजिटल शिष्टाचार के इस पक्ष में, व्यक्तिगतीकरण की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण माना जाता है। यह अनुशंसा करता है कि व्यक्तियों को उनकी पसंदों, रुचियों, और आवश्यकताओं के आधार पर डिजिटल सामग्री और सेवाओं का उपयोग करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

यहाँ पर उपरोक्त पक्षों के अलावा भी विभिन्न पक्ष हो सकते हैं, जो डिजिटल शिष्टाचार की विशेष पहलुओं को दर्शाते हैं।

डिजिटल शिष्टाचार और भारत :

भारत में डिजिटल शिष्टाचार का मुद्दा भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि डिजिटल माध्यमों का प्रयोग यहाँ के लोगों के जीवन के हर क्षेत्र में बदल रहा है। डिजिटल शिष्टाचार के इस कंटेक्स्ट में भारत में विभिन्न पहलुओं को देखा जा सकता है :

1.आधार की भूमिका : भारत में आधार(Aadhaar) जैसे डिजिटल पहचान प्रमाणित कागजात के रूप में प्रयोग हो रहे हैं। इससे लोगों के व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित तरीके से संग्रहित किया जा रहा है।

2.डिजिटल वित्तीय सेवाएं : भारत में डिजिटल वित्तीय सेवाओं का प्रयोग बढ़ रहा है, जैसे कि आधार–आधारित वित्तीय सेवाएं और डिजिटल पेमेंट प्लेटफ़ॉर्म।

3.शिक्षा में डिजिटल शिष्टाचार : भारत में शिक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल शिष्टाचार की आवश्यकता है। डिजिटल सामग्री, ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म, और शिक्षकों के ऑनलाइन शिक्षा में नैतिकता के मानकों का पालन इसमें महत्वपूर्ण है।

4.डिजिटल मीडिया की चुनौतियाँ : डिजिटल मीडिया के साथ, तत्वों जैसे कि फेक न्यूज़, आपत्तिजनक सामग्री, और ऑनलाइन विवादों का सामना करना पड़ रहा है। इसमें उपयोगकर्ताओं को सतर्क रहने और सत्यापन करने की आवश्यकता है।

5.डिजिटल सुरक्षा : डिजिटल शिष्टाचार के एक महत्वपूर्ण पहलु है डिजिटल सुरक्षा। उपयोगकर्ताओं को उनकी ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जागरुक करना और सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार प्रैक्टिस करना आवश्यक है।

6.डिजिटल शिक्षा : डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में भी नैतिक मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों, इंटरनेट के सही और गलत प्रयोग के बारे में शिक्षा दी जा सकती है।

7.ऑनलाइन सामाजिक मीडिया : भारत में ऑनलाइन सोशल मीडिया का प्रयोग भी बढ़ रहा है, जिसमें डिजिटल शिष्टाचार की आवश्यकता होती है। यहाँ पर भी सच्चाई और नैतिकता के मानकों का पालन करना आवश्यक है।

इन सभी पहलुओं के साथ, डिजिटल शिष्टाचार की महत्वपूर्ण भूमिका है ताकि भारत में डिजिटल माध्यमों का सही और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में उपयोग हो सके।

शोध में डिजिटल शिष्टाचार की भूमिका :

डिजिटल शिष्टाचार शोध के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध में डिजिटल शिष्टाचार की भूमिका निम्नलिखित तरीकों से दिख सकती है :

1.डेटा संग्रहण और व्यवस्थीकरण : डिजिटल शिष्टाचार का पालन करते हुए, शोधकर्ताओं को डेटा को संग्रहित करने, सुरक्षित रखने और सही ढंग से व्यवस्थीकरण करने की आवश्यकता होती है। डिजिटल डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता के मानकों का पालन करना महत्वपूर्ण है।

2.ऑनलाइन स्रोतों का सही उपयोग : शोधकर्ताओं को ऑनलाइन स्रोतों का सही तरीके से उपयोग करके नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है। यह स्रोत से जानकारी की पुष्टि करने और असलीता की जाँच करने में मदद करता है।

3.प्लैगियरिज्म की रोकथाम : डिजिटल शिष्टाचार का पालन करके शोधकर्ताओं को अपने काम में प्लैगियरिज्म से बचाने की आवश्यकता होती है। डिजिटल माध्यम से आसानी से कॉपी करने और पेस्ट करने की संभावना होती है,

लेकिन यह नैतिकता के खिलाफ होता है।

4.सोशल मीडिया और डिजिटल प्रेसेंस : शोधकर्ताओं के पास ऑनलाइन प्रेसेंस की भी जिम्मेदारी हो सकती है। सोशल मीडिया पर किए गए व्यक्तिगत पोस्ट और ट्वीट्स का भी नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में सावधानी से परीक्षण किया जाना चाहिए।

5.एथिकल रिसर्च प्रैक्टिसेस : शोधकर्ताओं को अपने शोध में नैतिकता और न्याय के मानकों का पालन करने के लिए एथिकल रिसर्च प्रैक्टिसेस का अनुसरण करना चाहिए। इसमें उन्हें डेटा कलेक्शन, प्रयोग, और विश्लेषण के दौरान नैतिकता का ख्याल रखने की सलाह दी जाती है।

6.संवाद और सहयोग : शोधकर्ताओं को डिजिटल माध्यमों के माध्यम से संवाद और सहयोग के नैतिकता के मानकों का पालन करके अन्य शोधकर्ताओं और संबंधित समुदायों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

इन सभी तरीकों से, डिजिटल शिष्टाचार शोधकर्ताओं को उच्च नैतिक मानकों के साथ उनके शोध कार्यों को सम्पन्न करने में मदद करता है, ताकि वे सामाजिक और नैतिक मूल्यों का पालन कर सकें।

डिजिटल शिष्टाचार को बनाये रखने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव :

डिजिटल शिष्टाचार को बनाए रखने हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं :

1.सचेत रहें : आपको डिजिटल माध्यमों का सही तरीके से उपयोग करते समय सचेत रहना चाहिए। विशेष रूप से, अज्ञात स्रोतों से आने वाली संदेशों को सतर्कता से परीक्षण करें और उन्हें सामर्थ्य दिखाने से पहले सत्यापित करें।

2.सुरक्षित पासवर्ड्स उपयोग करें : अपने ऑनलाइन खातों के लिए मजबूत और विशिष्ट पासवर्ड्स उपयोग करें और उन्हें नियमित रूप से बदलते रहें।

3.सावधानी से लिंक्स खोलें : एक अच्छी सामग्री की खोज में अचानक उपलब्ध लिंक्स को सावधानी से खोलें। ध्यान दें कि वे असली और सुरक्षित हों, और विशेषतः अगर वे आपके ऑनलाइन खातों की जानकारी मांग रहे हों तो उन्हें न दें।

4.सोशल मीडिया में सतर्क रहें : सोशल मीडिया पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी को सावधानी से साझा करें। अनधित और आपत्तिजनक सामग्री को सोशल मीडिया पर न पोस्ट करें और अनचाहे संदेशों को ब्लॉक करें।

5.एंटीवायरस और सिक्योरिटी सॉफ़्टवेयर का प्रयोग करें : आपके डिवाइसों में एंटीवायरस और सिक्योरिटी सॉफ़्टवेयर का इस्तेमाल करना आपकी ऑनलाइन सुरक्षा में मदद कर सकता है।

6.जागरूकता बढ़ाएं : आपके समुदाय में डिजिटल शिष्टाचार के महत्व को समझाने और लोगों को इसके बारे में जागरूक करने की कोशिश करें।

7.सोशल इंजीनियरिंग का बचाव करें : सोशल इंजीनियरिंग के प्रयासों से बचने के लिए, अगर कोई आपसे व्यक्तिगत जानकारी पूछता है तो उसकी पुष्टि करने के लिए विभिन्न स्रोतों से सत्यापन करें।

8.अपडेट रहें : अपने ऑपरेटिंग सिस्टम, सॉफ़्टवेयर, और एप्लिकेशन्स को नवीनतम रूप में रखें, क्योंकि नवीनतम अपडेट सुरक्षितता को बढ़ावा देते हैं।

9.सीखना और समझना : डिजिटल शिष्टाचार के मानकों को समझने के लिए आपको सीखने का तत्पर रहना चाहिए।

10.अच्छा नेटिकेट बरतें : डिजिटल शिष्टाचार का हिस्सा बनने के लिए आपको अच्छे नेटिकेट का पालन

करना चाहिए। आपके ऑनलाइन व्यवहार की सबसे बड़ी भूमिका होती है और यह आपके डिजिटल व्यक्तिगता को प्रतिष्ठान बनाता है। ये सुझाव डिजिटल शिष्टाचार को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं और आपके ऑनलाइन सुरक्षा को मजबूती से बढ़ावा दे सकते हैं।

सन्दर्भ :

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Etiquette_in_technology
2. https://www.managementstudyguide.com/internet-and-email-etiquettes.htm
3. https://www.jagran.com/bihar/siwan-14689650.html
4. https://circindia.org/project/spreading-digital-etiquette-in-the-era-of-digital-necessity/
5. https://www.studocu.com/in/document/kannur-university/ability-enhancement-course-i-personality-development-and-communication-skills/unit-iii-communication-skills-and-digital-etiquettes/30764406
6. https://dainik-b.in/orpEoep436
7. https://www.ipl.org/essay/Essay-On-Digital-Etiquette-PJ8CX86ZK5G
8. https://www.edtechreview.in/trends-insights/insights/what-is-digital-literacy-its-importance-and-challenges/
9. https://computerhindinotes.com/what-is-internet-etiquette/
10. https://harappa.education/harappa-diaries/what-is-netiquette-and-why-is-it-important/

मानवीय लक्ष्य की पहचान और निर्धारण के लिये – मानवीय दिशा का आकलन व परिणाम

डॉ. अभय वानखेड़े
मानवीय शिक्षा विशेषज्ञ व परियोजना निदेशक, आनंद शोध परियोजना
राज्य आनन्द संस्थान अध्ययन केन्द्र, मानव चेतना विकास केन्द्र, इंदौर (मध्यप्रदेश)

सदियों से मानव समाज ने अपने लक्ष्य को पहचानने के लिये जो प्रयास किये है वे दो प्रकार के चिंतन से प्रस्फुटित होते हुए दिखाई देते है। मानव लक्ष्य को पहचानने का पहला प्रयास आदर्शवाद के माध्यम से घटित हुआ जिसमें अच्छा मानव बनने का, ईश्वर को पाने का, प्रकृति को पूजने का, दुसरों की सहायता या सेवा को लक्ष्य के रूप में पहचाना गया। इसके मूल में यह मान्यता रही कि प्रत्येक मानव आत्मा का अंश है और इसे परमात्मा में विलिन होना है, मानव अपने कर्म को भोगने के लिये संसार में पैदा होता है। मानव लक्ष्य को पहचानने का दुसरा प्रयास भौतिकवाद के माध्यम से घटित हुआ जिसके मूल में सुविधा है, इस चिंतन से मानव ने भौतिक प्रगति, पदवान, रूपवान, बलवान और धनवान अर्थात संविधा संग्रह को ही लक्ष्य के रूप में पहचान पाना रहा। इसके मूल में यह मान्यता रही कि मानव केवल शरीर है, शरीर की समस्त इन्द्रियों को तृप्त करने से, सुविधाओं का अधिकतम उपयोग करने से सुख मिलता है। दोनों ही प्रयासों में मानव के तृप्तिपूर्वक जीने का प्रमाण नहीं मिलता है। दोनों ही विचारों से लक्ष्य निर्धारण कर अथक प्रयासों के उपरान्त भी मानव में भय, अविश्वास, ईर्ष्या, उपेक्षा और निराशा बढ़ी है। समाज में अन्याय, भ्रष्टाचार, शोषण, निष्क्रियता, कट्टरवाद और संघर्ष बढ़ा है। प्रकृति में प्रदुषण, असंतुलन, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान वृद्धि के विपरित परिणामों से सम्पूर्ण मानव जाति अपने अस्तित्व को बचायें रखने के लिये संघर्ष कर रही है, चन्द्रमा पर मानव के जीने, रहने की सम्भावना को तलाशा जा रहा है। उक्त परिस्थितियों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मानव ने अभी तक जितने भी लक्ष्य जीने को लेकर बनाये है वे सभी वांछित परिणामों को प्राप्त नहीं कर पायें।

इसके अगले दौर में यह भी मान्यता रही कि प्रत्येक मानव का लक्ष्य भिन्न भिन्न होगा, यहॉ भी मानव ने अपने लक्ष्य निर्धारण के लिये अपनी रूचियों को प्रमुखता दी, इन्द्रिय सुख, शरीर का हित और सामान में लाभ की मानसिकता से सभी को अपने अपने लक्ष्य बनाने की स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि एक ही घर में सभी सदस्यों के लक्ष्य भिन्न भिन्न हो गये, परिवारों के टूटने का आधार यहीं भ्रमित लक्ष्य निर्धारण की अधुरी शिक्षा रही।

प्रस्तुत शोध विगत 30 वर्ष पूर्व अनुसंधानित हुए अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन, सह अस्तित्ववाद पर आधारित है जो मानव के लक्ष्य निर्धारण की योग्यता के लिये मानवीय शिक्षा को प्रस्तुत किया हैं। जिसे 86 प्राध्यापकों / शिक्षकों, 40 महाविद्यालयीन विद्यार्थियों और 60 विद्यालयीन विद्यार्थियों के साथ किया गया। मानवीय शिक्षा में ज्ञान के स्वरूप को जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान को पहचाना गया है। जीवन ज्ञान : हम मानव, शरीर और जीवन का सह अस्तित्व है। इस तथ्य का साक्षात्कार होने से जीवन ज्ञान होना है। अस्तित्व दर्शन ज्ञान : अस्तित्व में सह अस्तित्व, विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम और जागृति नियम नित्य प्रभावी है। इस तथ्य का साक्षात्मकार को अस्तित्व दर्शन ज्ञान कहते हैं। मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान : मूल्य, नीति और चरित्र पूर्वक जीना ही मानवीय आचरण पूर्वक जीना होता है और इस तथ्य का साक्षात्कार को मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान कहते हैं।

अस्तित्व को जिस प्रकार हम समझते रहते है उसी अनुसार जीने के प्रयोजनों को, जीने के लक्ष्यों को, सफलता, असफलता को, व्यवस्था, अव्यवस्था को हम पहचानने का प्रयास करते तथा उसी अनुरूप शिक्षा एवं व्यवस्था को

प्रस्तावित करते है। इस शोध में वास्तविकता का, मानवीय शिक्षा का क्रमशः अध्ययन और अभ्यास किया गया, जिसमें प्रधानतः मैं क्या चाहता हूँ, क्या नहीं चाहता हूँ, का अभ्यास हुआ–

मैं क्या चाहता हूँ,	क्या नहीं चाहता हूँ,
पैसा, स्वतंत्रता / आजादी अपनापन, सम्मान, बढिया मोबाइल	परतंत्रता / गुलामी, प्रदुषण, झगड़ा, भय / डर, प्रतियोगिता, ईर्ष्या, अपमान .....

अभी मेरी चाहना ही स्पष्ट नहीं हैं। तो मैं जो चाहता हूँ उसे समझता हूँ या जो नहीं चाहता हूँ उसे। समझना वास्तविकता का ही होता है। क्या बनना, करना और क्या होना चाहते है –

बनना	पाना / करना	होना
टीचर	पैसा, सम्मान, सेवा	सुखी, समृद्ध
प्रोफेसर	ज्यादा पैसा, सम्मान, सेवा	सुखी, समृद्ध
इंजिनियर	ज्यादा पैसा, सम्मान, सेवा	सुखी, समृद्ध
डाक्टर	और ज्यादा पैसा, सम्मान, सेवा	सुखी, समृद्ध
कलेक्टर	और ज्यादा पैसा, सम्मान, सेवा	सुखी, समृद्ध

बनना लक्ष्य की दिशा में कार्यक्रम है, लक्ष्य नहीं हैं। मुख्यतः पाना ही प्रत्येक मानव का लक्ष्य है।

मूलतः हम अपनी चाहना को लक्ष्य, उद्देश्य या प्रयोजन के रूप में देख पाते है। सही समझ के आभाव में हम अपने बनने व करने को ही सबकुछ मान लेते है विश्लेषण करने पर पाते है कि जैसा बनना चाहते है वैसा ही बनने पर भी तृप्त नहीं होते है लगता है अभी भी कुछ पाना शेष है यह कुछ पाना ही होने के रूप में समझ मे आता है।

लक्ष्य को पहचानने का उपाय–

मानव के जीने की दिशा दो प्रकार से परिलक्षित होती हैः

1. जीव चेतना की दिशा –यह अमानवीय दिशा है,

2. मानव चेतना की दिशा – यह मानवीय दिशा है, जो क्रमशः देव मानवीयता व दिव्य मानवीयता की ओर अग्रसर होती है।

मानवीता की दिशा को पहचानने और समझने पर मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय और सह अस्तित्व को जानना बन पाता है, यह सार्वभोम और निरंतर है। हम सभी मानव इस प्रकार, मानवीय लक्ष्य के अर्थ में समान है। यह हर मानव के लिए हैं अतः यह सार्वभोम हैं जिसे विस्तृत रूप से समझकर जीया जा सकता हैः–

मानव में समाधान का अर्थ है कि उसका अपनी हर स्थिति / परिस्थिति में समाधान अर्थात उत्तर के साथ जीना। हम मानव क्यों जीयें और कैसे जीयें – यह मूल उत्तर हैं और जिसमें स्पष्टता होने से हम स्वयं में समाधान की स्थिति को प्राप्त होते हैं। एक और दृष्टिकाण से देखे तो हमें यह स्पष्ट होगा की हमारे हर प्रश्न में मूल में भी यह दो ही प्रश्न है – हम क्यों जीयें और हम कैसे जीयें। मूल उत्तर में स्पष्टता ही हमारे समाधान का केंद्र बिंदु हैं। स्पष्टता ही स्वयं में निश्चिय के रूप में होती है, जिसको हम स्वयं में विश्वास के रूप में अनुभव करते हैं। मानव समधानित होता है और मानव में चैतन्य शक्ति 'जीवन' में ही समाधान की स्थिति प्राप्त होती है।

'जीवन' में समाधान की स्थिति का मुख्य लक्षण – संशय से मुक्त होना और चित्त में निश्चितता है। समाधान की स्थिति में स्वयं में निश्चय या निश्चितता की वस्तु, निम्नलिखत है –

- ✓ मानवीय लक्ष्य का निश्चय (विवेक)
- ✓ मानवीय लक्ष्य की पूर्ति की दिशा का निश्चय (विज्ञान)
- ✓ व्यवहार में मानव संबंध का निश्चय (मानवीय व्यवहार)
- ✓ प्रकृति के साथ कार्य में मानव–प्रकृति के संबंध का निश्चय (मानवीय कार्य)
- ✓ व्यवस्था में भागीदारी में पांच आयाम का निश्चय (भागीदारी)
- ✓ परिवार से विश्व परिवार तक मानव मानव संबंध का निश्चय (अखंड समाज)
- ✓ परिवार व्यवस्था से लेकर विश्व परिवार व्यवस्था में मानव प्रकृति संबंध सहित भागीदारी का निश्चय (अखंड समाज सार्वभोम व्यवस्था)
- ✓ मानवीय परंपरा का निश्चय (मानवीय परंपरा)

मानव जीवन के इन तथ्यों में पूर्ण रूप से संशय मुक्त हो जाना या उपरोक्त वस्तु का सुनिश्चित हो जाना ही स्वयं में समाधान की स्थिति है। एक और दृष्टि से यह हमारे मूल प्रश्न – हम क्यों जीयें और हम कैसे जीयें के उत्तर हैं। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि यह सभी तथ्य, सार्वभोम अैर निरंतरता के अर्थ में है। सार्वभोम यहाँ, हर मानव/हर भूमि के रूप में और निरंतरता, काल की सीमा से मुक्त होने के अर्थ में है। ज्ञानपूर्वक सुनिश्चित होने के साथ, हम अपने संकल्प को मानवीय आचरण पूर्वक, अपने जीने में प्रमाणित करते है। मानवीय आचारण में हम मूल्य और नैतिकता सहित, चरित्र पूर्वक जीतें हैं और यह हमारे समाधान का प्रमाण होता है। यह अन्य मानव के लिए अनुकरणीय होता है और यह उनकी जिज्ञासा निर्मित होने में अत्यंत सहायक होता है। मानवीयता पूर्ण आचरण हमारे व्यवहार, कार्य और व्यवस्था में भागीदारी का आधार है। समाधान के साथ और मानवीय आचरण पूर्वक हम अपने जीने के बाकी तीनों स्तर पर समाधान को निरंतर प्रमाणित करने में तत्पर हो जाते हैं। इस प्रकार समाधान की स्थिति को प्राप्त होने के पश्चात, परिवार में समृद्धि, समाज में अभय और अस्तित्व में सह अस्तित्व को प्रमाणित करना हमारा लक्ष्य बना रहता है।

समाधान और मानवीय आचरण पूर्वक हम अपने परिवार व्यवस्था में जिम्मेदारी के साथ, अपने दायित्व और कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए, परिवार में समृद्धि को प्रमाणित करने का प्रयास कर रहे हैं। समाधान, समृद्धि को प्रमाणित करते हुए हम अखंड समाज में भागीदारी करने और समाज में अभयता को प्रमाणित करने कि दिशा में अग्रसर होते हैं। इसको हम 'समझ कर करने' का मार्गदर्शन भी कहते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम

डॉ. निखिल चौरसिया, सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र व समाजकार्य विभाग
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह
डॉ. गिरीश लांबा, अतिथि विद्वान, राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय महाविद्यालय, नरियावली, सागर

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई
परपीड़ा सम नहिं अधमाई'

आज वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व एक विश्वग्राम में परिवर्तित हो चुका है आधुनिककाल में मनुष्य ने अपने सुचारू रूप से चलाने के लिए विज्ञान एवं तकनीकी की सहायता से अनेक सुख सुविधा से परिपूर्ण असंख्य वस्तुओं का निर्माण किया। इन वस्तुओं के क्रय–विक्रय हेतु फिर उसे बाजार की आवश्यकता महसूस होने लगी। उसने अपनी व्यापारिक सीमितता को तोड़कर विश्व के अन्य देशों के बाजार पर अधिकार जमाकर वैश्विकरण का नारा बुलंद किया। इस प्रकार सारा विश्व बाजार में परिवर्तित हो गया। पाश्चात्य देशों से आयी यह परिकल्पना सम्पूर्ण राष्ट्र, समाज तथा पारिवारिक व्यवस्था तक को प्रभावित करने लगी है। इसीलिए कहा जाता है कि वैश्वीकरण अब चिंता और चिंतन का विषय बनता चला जा रहा है। कुछ भी हो लेकिन यह वास्तव है की वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणामों का सामना समस्त मानव जाति को करना ही पड़ेगा।

वैश्वीकरण के मूल में व्यापारिक भाव है, इसलिए आज मनुष्य प्रतिदिन अधिक व्यावहारिक बनता चला जा रहा है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की ओर प्रेम, स्नेह, आदर और सहिष्णुता से देखने के बजाय उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देख रहा है। त्याग, उदारता, सहभाव, परोपकार, प्रेम आदि मानवीय जीवन मूल्यों को नष्ट कर वह पूरी तरह से अर्थ केन्द्रित मानसिकता का शिकार बनता जा रहा है। उसके आचरण में आए व्यावहारिकता के कारण वह प्रतिदिन मूल्यहीन और संवेदनाविहीन बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में विश्वबंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी संकल्पनाओं को पुनर्जीवित कर उसके महत्व को प्रतिपादित करना अधिक अनिवार्य बन जाता है। अतः यहाँ पर मैंने वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संतों द्वारा स्थापित वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विश्वशांति में किस प्रकार प्रासंगिक एवं सहायक बन सकती है, इसे समझने का प्रयास किया है।

आरंभ में विश्वबंधुत्व का अर्थ समझना बेहतर होगा। विश्वबंधुत्व का अर्थ है सारे विश्व के मानवों में बंधुत्व का भाव या सबको भाई समझने का भाव। जिसे हम ठेठ भाषा में 'भाईचारा' कहते हैं। विश्वबंधुत्व शब्द से ही मिलता–जुलता शब्द वसुधैव कुटुम्बकम है। जिसमें समूचे संसार को ही एक परिवार के रूप में देखा गया है। मराठी संत ज्ञानेश्वर के शब्दों में कहें तो 'हे विश्व ची माझे घर' अर्थात यह आखिल ब्रह्माण्ड ही हमारा परिवार है, यह भाव है। विश्व शब्द संसार की समस्त गोचर वस्तुओं का सूचक है। विश्व यानी केवल मनुष्य जाति के रहने का स्थान नहीं है बल्कि इसमें पशु–पक्षी, पेड़–पौधे आदि सभी इकाईयां सम्मिलित है। अतः समस्त जीव–जगत के साथ बंधुत्व यानी भावात्मक एकता स्थापित करना, ओछी संकीर्णता को छोड़कर मनुष्य को मनुष्य की तरह देखकर उसके साथ सदवर्तन करना ही विश्वबंधुत्व या वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना उद्देश्य रहा है। यह वैचारिक तथा व्यावहारिक दोनों प्रकार का भाव है। हमारे विद्वान ऋषि मुनियों, संत महात्माओं ने अपने अनुभूतिजन्य आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर वसुधैव कुटुम्बकम की घोषणा की । उनका यह अत्यंत दूरदर्शी और व्यापक वैश्विक भाव है।

आजकल वैश्विक चिंतन पर बल दिया जा रहा है। कूप मंडूक प्रवृत्ति को लेकर मनुष्य अब जी नहीं सकता। यह तो सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। आज हम चंद मिनटों में विश्व के किसी भी कोने में संपर्क स्थापित कर सकते हैं। भौतिक रूप से विश्वमानव एक दूसरे के अत्यंत निकट पहुँच गया है लेकिन भावात्मक रूप से वह एक दूसरे के बहुत दूर जा चुका है। विश्वबंधुत्व के भाव ही हमें एक दूसरे से जोड़ सकते हैं। वैदिक से उपनिषद् काल और आधुनिककाल तक विश्वबंधुत्व या वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को कई विद्वानों ने अपनी पद्धति से समझने का प्रयास किया है। उपनिषद् कहता है कि हमें विश्वात्मा बनना है, हमें अपनी आत्मा को विश्वरूप में देखना चाहिए। क्योंकि समस्त अस्तित्व ब्रह्म ही है। 'सर्व खल्विदं ब्रह्मं' उस एक को जानने पर सब ज्ञात हो जाता है। 'एकेन विज्ञानेन सर्व विज्ञान भवति' हमारे चिंतकों, विचारकों द्वारा प्रतिपाद्य एकत्व मानव मूल्य एवं विश्व मानवतावाद पर प्रतिष्ठित है। उनकी यह धारणा है कि मनुष्य चाहे किसी भी देश–प्रदेश का हो वही सबसे श्रेष्ठ वस्तु है और वही विश्व का केन्द्र है।

यहाँ त्याग को त्याग के रूप में नहीं बल्कि भोग के रूप में समझा गया है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन उपनिषदों पर अपना मंतव्य प्रकट करते हुए लिखते हैं कि उपनिषदों के विचारकों के सम्मुख जो आदर्श था वह मनुष्य की चरममुक्ति, ज्ञान की पूर्णता और सत्य के साक्षात्कार का आदर्श था जिसमें रहस्यवाद की दिव्य दर्शन की धार्मिक कल्पना और दार्शनिक सत्य की अनवरत खोज दोनों को शांति मिलती है। डॉ. एन.पी. कुट्टन पिल्लै के मतानुसार भारतीय वेद, उपनिषद्, पुराण, गीता सब समन्वयात्मक धर्म को प्रश्रय देते हैं। रामायण और महाभारत तथा रामचरितमानस जैसे विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ भारतीय संस्कृति एवं धर्म के सर्वांगीण विकास के दिग्दर्शक विश्वकोष है। जाति–पाती रहित एकेश्वरवाद पर अधिष्ठित विश्वबंधुत्व एवं प्रेम पर अवस्थित एक मानव धर्म पर यहाँ बल दिया गया है। डॉ. धर्मपाल मैनीजी के अनुसार एकात्मभाव, दया, करूणा, सद्भाव, सदाचरण आदि गुण विश्वबंधुत्व के अनिवार्य तत्व हैं। कोई भी व्यक्ति जो चराचर को अपने सदृश मानता हो, जो सम्पूर्ण चराचर से मैत्री भाव स्थापित करने का इच्छुक हो वह विश्वबंधुत्व या वसुधैव कुटुम्बकम् की स्थापना का आग्रही होगा।

विश्वबंधुत्व की भावना से विश्व में समरसता उत्पन्न हो सकती है। संकीर्णता का विनाश हो सकता है और इस तरह विश्वशांति स्थापना में विश्वबंधुत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। युद्ध और संघर्ष करने का परिणाम विनाश कर लेना ही है। समरसता और विश्वबंधुत्व में ही मानव का हित है, यह विचार ही हमें दुनिया के आखिरी मनुष्य तक पहुँचाने होंगे तभी विश्व में शांति प्रस्थापित हो पायेगी। वैश्विक दृष्टि से समरसता यह भी एक चौतन्य तत्व है।

विश्वबंधुत्व सम्पूर्ण विश्व में समानता स्थापित करने का प्रयास है। प्रायः इसमें विविधता, जातीय विभिन्नता, साम्प्रदायिकता, धार्मिक भेद, वांशिक भेद आदि तत्व अवरोध बनते हैं। विश्व के समस्त महापुरूषों ने यही उपदेश दिया है कि सभी आत्माएँ एक समान हैं। उन्हें प्रेमपूर्वक आपस में मिल–जुलकर रहना चाहिए। भारत का संत साहित्य विश्वबंधुत्व का महान आदर्श उपस्थित करता है। संतों के विचारानुसार मानवी जीवनमूल्यों पर ही विश्वशांति की आधारशिला टिकी हुई है। इसीलिए संतों ने इन मूल्यों की वैश्विक प्रतिष्ठापना के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन विश्व के प्रति समर्पित कर दिया था।

विज्ञान को आधार बनाकर मनुष्य जितनी भौतिक प्रगति कर रहा है। उतनी ही संत साहित्य की प्रासंगिकता तथा उपादेयता बढ़ती ही जा रही है। वैज्ञानिक खोज के आधार पर विकसित तकनीकी पद्धति प्रतिदिन मूल्य विरहित मनुष्य को जन्म दे रही है। इस पद्धति में पले बढ़े मनुष्यों ने अपने आपको यंत्रवत, संवेदनाहीन बना डाला है। यही कारण है कि मनुष्य अनैतिक आचरण, भ्रष्टाचार, झूठ–फरेब तथा मानहानि के जाल में फंसता जा रहा है। इस आधार पर कह सकते है कि तकनीकी शिक्षा ने करोड़ों डॉक्टर, इंजिनियर तथा वैज्ञानिक तो निर्माण किए परंतु यह शिक्षा मानव को मानव बनाने में असमर्थ रही है। मनुष्य का सम्पूर्ण मनुष्यत्व प्रदान करने का सामर्थ्य संतो के विचारों में ही है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति शताब्दियों से वैश्विक समाज को मार्गदर्शन करता आ रहा है। उसकी प्रासंगिकता कम नहीं हुई है बल्कि आज के मूल्यहीनता के युग में वह और भी प्रासंगिक हो गया है। आज मनुष्य का सारे जीवन मूल्यों पर से विश्वास उठ गया है। स्वार्थ और संघर्ष युगधर्म बन गए हैं। रिश्ते–नाते सब महत्वहीन हो गए हैं। त्याग और परोपकार किताबी आदर्श बन कर रह गए हैं। इन स्थितियों में संतों की अमृतवाणी मानव को फिर से सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर अशांत पृथ्वी को विश्व शांति में परिवर्तित कर सकती है।

संदर्भ –

1. डॉ. धर्मपाल मैनी, मानवमूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोष, चतुर्थ खंड।
2. डॉ. सुनील कुलकर्णी, संत साहित्य आधुनिक अवधारणाएँ।
3. कमल नयन काबरा, भूमंडलीकरण के भंवर में भारत।
4. डॉ. आनंद यादव, सामाजिक समरसता साहित्य परिषद अध्यक्षीय भाषण।
5. समरसचौता नंदादीप, प्राचार्य तारो स्मृति ग्रंथ।

व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान

डॉ. प्रेरणा पंडित, सहा. प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
महारानी किशोरी मेमोरियल कन्या महाविद्यालय, होडल रूरल, पलवल (हरियाणा)

किसी भी देश के विकास में उसके युवा वर्ग की महती भूमिका होती है। युवा वर्ग राष्ट्र के भविष्य की दिशा निर्धारण में सशक्त निर्धारक तत्व होते हैं। महात्मा गाँधी जी ने स्वतन्त्र भारत के युवा वर्ग को राष्ट्र के भावी भविष्य का निर्माता मानकर उन्हें एक उत्तरदायी नागरिक बनाने के लिए समाज सेवा से जोड़ने का विचार व्यक्त किया था। गाँधी जी के इस स्वप्न को उनकी जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर 1969 में साकार रुप दिया गया। देश के तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री वी के आर वी राव जी ने राष्ट्रीय सेवा योजना की नींव रखी। देश के सैंतीस विश्वविद्यालयों में इसका प्रारम्भ किया था। राष्ट्रीय सेवा योजना का संचालन भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के अधीन है। युवाओं को राष्ट्र सेवा, समाज सेवा व राष्ट्र व समाज के प्रति कर्तव्य बोध कराने व समाज में जाग्रति लाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रति वर्ष विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यालय व महाविद्यालय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का अयोजन करती है। यहाँ भाग लेने वाले विद्याथी स्वयंसेवकों की भूमिका का निर्वहन करते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के अंर्तगत होने वाले कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए आवश्यक भूमिका का निर्वहन करते हैं।

मानसिक विकास राष्ट्रीय सेवा योजना में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती हैं। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न अवसरों पर अयोजित की जाने वाली प्रश्न प्रतियागिताऐं, वाद–विवाद प्रतियोगिताऐं, निबन्ध लेखन प्रतियोगिताऐं, स्लोगन लेखन व अन्य माध्यम विद्यार्थी का मानसिक विकास करते हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थी की समझ व कार्यक्षमता का विकास होता है एवं विद्यार्थी में स्वयं की बात बिना झिझक सभी के समक्ष रखने का साहस विकसित होता है। प्रतियोगिताऐं विद्यार्थी को प्रत्युत्पन्नमति बनाती हैं। उनमें नवीन ज्ञान सीखने का उत्साह उत्पन्न होता है। विद्यार्थी में राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों में भाग लेने से तर्क क्षमता, बुद्धिमत्ता, ज्ञान संचय, लेखन क्षमता, विचार शक्ति इत्यादि मानसिक गुण भी विकसित होते हैं। शिविर लगााने के अवसर पर या किसी कार्यक्रम में किसी समस्या के उत्पन्न होने पर उसका समाधान करने अथवा किसी वस्तु की कमी होने पर उस वस्तु के स्थान पर अन्य वस्तुओं को मिलाकर उपयोग करने जैसे त्वरित निर्णय क्षमता एवं रचनात्मक शक्ति का विकास भी राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से होता है। शिविर लगाना, उसकी व्यवस्था करने जैसे कार्य भी सेवा योजना के स्वयं सेवकों को करने होते हैं, जिसमें वह समय व परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेना सीखते हैं ।

सामाजिक विकास मानव सामाजिक प्राणी है अतः समाज का उत्थान व्यक्ति के निजी उत्थान से सम्बन्धित है। राष्ट्रीय सेवा योजना का एक प्रधान कार्य विद्यार्थियों में सामाजिक भावना का विकास करना है जो इसके आदर्ष वाक्य 'मैं नहीं लेकिन तुम' से प्रेरित है। राष्ट्रीय सेवा योजना में गाँव–गाँव जाकर जनजाग्रति अभियान चलाये जाते हैं। सरकारी योजनाओ का गाँव–गाँव जाकर प्रचार करना, सामाजिक समस्याओं पर विचार विमर्श आदि भी उनके कार्यक्षेत्र का भाग है । विद्यार्थी सामाजिक समस्याओं पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करते हैं, समाज सुधार का प्रयास उनके व्यक्तित्व को अत्यधिक सकारात्मक रुप प्रदान करता है। सामाजिक समस्याओं के विशय में ग्राम शिविर कार्यक्रमों में जागरुकता सभा का आयोजन, स्वच्छता, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला अधिकार आदि विषयों पर कार्यक्रमों का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों के द्वारा किया जाता है। विद्यार्थी समाज की वास्तविक स्थिति से परिचित होते हैं व यथासंभव समाज के उत्थान के लिए प्रयासरत रहते हैं । उन्हें समाज के संघर्ष व समस्याओं से सीधे ही जुड़ने का व अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है, इस संगठन के माध्यम से सामाजिक विकास में स्वयंसेवकों का सीधा योगदान होता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण के साथ–साथ समाज के उत्थान का उत्तरदायित्व भी विद्याथियों में विकसित करने में राष्ट्रीय सेवा योजना अत्यधिक योगदान देती है।

सांस्कृतिक विकास भारत में विभिन्न संस्कृतियों का समावेष है। प्रत्येक राज्य की संस्कृति कतिपय विशिष्टता लिए हुए है। राष्ट्रीय सेवा योजना में समय–समय पर विभिन्न स्थानों पर शिविर लगवाये जाते हैं । जिसमें विभिन्न राज्यों के स्वयंसेवक भाग लेते हैं । राष्ट्रीय सेवा योजना के मंच स्वयंसेवकों को सम्पूर्ण भारत की संस्कृति से पहचान कराता है।

इन सांस्कृतिक शिविरों में स्वयंसेवक विभिन्न राज्यों की संस्कृति से परिचित होते हैं, यह सांस्कृतिक आदान प्रदान सहनशीलता, समन्वय, राष्ट्र एकता व विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान एवं देश के प्रति गर्व की भावना विकसित करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभागी अपनी कला कौशल व प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं जिससे उनमें अत्मविश्वास की वृद्धि होती है साथ ही उनकी प्रतिभा को सम्मान भी प्राप्त होता है जो उन्हें सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है। विद्यालयी एवं महाविद्यालयी शिक्षा के अतिरिक्त इस प्रकार की गतिविधियाँ न केवल विद्यार्थी को नियमित शिक्षा की नीरसता को दूर करने में उपयोगी होती है वरन् उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायक सिद्ध होती हैं। इस प्रकार के होने वाले कार्यक्रमों से नवीन 'प्रतिभा खोज' व प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उचित अवसर भी प्रदान किया जाता है।

भावनात्मक विकास वर्तमान समाज उपभोक्तावादी समाज है। जिसमें मनुष्य अपनी अनंत इच्छाओं के साथ जीवन से संघर्ष कर रहा है। इन इच्छाओं का प्रभाव व्यक्ति पर इतना अधिक है कि वह राष्ट्र, समाज, परिवार व स्वयं से भी दूर होता जा रहा है। हेगेल, कार्ल मार्क्स, लुई आल्थ्युजर जैसे विचारकों ने अपनी रचनाओं में मानव में बढ़ते पराएपन अथवा अलगाव की समस्या का उल्लेख किया था। जिसका विकृत रुप हमें आज के समाज में देखने को मिलता है, जहाँ मनुष्य संवेदनाहीन होते जा रहे हैं। किसी परेशानी में फँसे व्यक्ति की सहायता करने की अपेक्षा 'सेल्फी' उनके अधिक महत्वपूर्ण हो रही है। वर्तमान परिस्थितियों में युवा पीढ़ी में संवेदनशीलता विकसित कर उत्तरदायित्वों की प्रति जागरुक करना भी एक दुरुह कार्य है। राष्ट्रीय सेवा योजना में स्वयंसेवक विभिन्न प्रकार से समाजसेवा के कार्यों में भाग लेते हैं। यहाँ समय–समय पर रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान, जागरुकता रैलियों का आयोजन किया जाता है। स्त्री स्वास्थ्य समस्याओं व सामाजिक कुप्रथाओं जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा के कारण उनकी दषा पर भी विभिन्न माध्यमों यथा नुक्कड. नाटक, सभा, ग्राम शिविर, रैली इत्यादि से समाज में जागरुकता के प्रयास किये जाते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा विकसित व्यक्ति का व्यक्ति से जुड़ाव उनमें परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना की वृद्धि करता है। यही भावनात्मकता विकास मनुष्य को एक श्रेष्ठ व आदर्श नागरिक बनाने में सहायक होता है। किसी भी देश की जनसंख्या उस राष्ट्र का एक प्रमुख तत्व होती है किन्तु वही जनसंख्या यदि संयमी, देशभक्त, अनुशासित, बुद्धिमान हो तब वह देश की प्रगति में सहायक होती है।

व्यवहारिक कौशल का विकास राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थी समूह में रहकर कार्य करना सीखते हैं। उनमें नेतृत्व क्षमता, खेल भावना, सहयोग व समन्वय की भावना का विकास होता है। समस्या समाधान की क्षमता, वाक् चातुर्य, वाक् कौशल, सूझबूझ आदि गुणों का विकास होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना, विद्यार्थी के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने में सहायक होती हे। यहाँ विद्यार्थी प्रतिदिन नवीन ज्ञान सीखता है। अतिथि व्याख्यान व विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यमों से उन्हें नवीन ज्ञान प्राप्त होता है व व्यवहारिक कौशल का विकास होता है।

राष्ट्रप्रेम की भावना राष्ट्रीय सेवा योजना अपने नाम के अनुरुप ही विद्यार्थी में देशप्रेम की भावना का विकास करती है। युवा वर्ग में अपने राष्ट्र के प्रति जिस समर्पण, सम्मान व प्रेम भावना विकसित करने की आवश्यकता होती है, वह राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से प्राप्त होती है। युवा वर्ग में अपने देश के विकास, राष्ट्र की संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना अवश्य होनी चाहिए। हमारी पहचान हमारी संस्कृति व हमारा राष्ट्र है। वास्तविकता में जो अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं वही तो वैश्विक संघर्ष में स्थिर खड़े हुए हैं और विजयी भी हुए हैं। एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण की कल्पना योग्य, राष्ट्रभक्त व निर्भीक युवा शक्ति के बिना सम्भव ही नहीं हो सकती है। राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का उत्तरदायित्व सुयोग्यउत्तराधिकारी ही पूर्णरुपेण सँभाल सकते हैं, इसके लिए हमें सशक्त युवा पीढ़ी को तैयार करना होगा। यही राष्ट्रीय सेवा योजना का निर्धारित लक्ष्य है।

निष्कर्ष राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा महात्मा गाँधी जी के उस विचार को साकार करने का प्रयास किया जाता है जिसमें वह राष्ट्र के उत्थान में युवा शक्ति की सक्रिय भूमिका की आकांक्षा करते हैं। केन्द्रीय मंत्रालय के द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय सेवा योजनाके निर्धारित किये जाने वाले कार्यक्रम का राज्य स्तर व विश्वविद्यालय स्तर पर अनुसरण किया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के सवयंसेवक आवश्यकता होने पर समय समय पर अपना योगदान देते हैं। इस संगठन के द्वारा ग्राम विकास के लिए गाँवों को गोद लिया जाता है, जो इस संगठन का अत्यधिक सफल कार्य है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के साथ– साथ राष्ट्र का उत्थान इस संगठन की महत्ता को प्रकट करता है।

व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान

डॉ. उमारतन यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
नीलम चौधरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
बुंदेलखण्ड महाविद्यालय,
झाँसी वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी (उत्तरप्रदेश)

कहते हैं किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसकी पहचान है यदि देखा जाए तो व्यक्तित्व रूप गुण अभिरुचि योग्यता व सामर्थ आदि का समुच्चय होता है प्रेयर व्यक्तित्व विकास मनोविज्ञान और बाल मनोविज्ञान का विषय माना जाता है मनोवैज्ञानिक कारकों में बौद्धिक क्षमताएं रुचिया चरित्र अभिप्रेरणा अभिवृत्तियां अधिगम आदि तत्वों का समावेश रहता है जो व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में अतुलनीय भूमिका का निर्वहन करते हैं व्यक्तित्व वह है जो हमें दूसरों से अलग बनाता है व्यक्तित्व व्यक्ति की जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग है हमारा व्यक्तित्व ही हमारी पहचान है और एनएसएस के अंतर्गत नोट में बट यू का लोगो युवाओं की गतिशीलता और प्रगतिशील ष्टिकोण का सूचक है राष्ट्रीय सेवा योजना का एकमात्र उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवाओं के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अनुभव प्रदान करना है ताकि वह समाज में अपने आप को डाल सके और अपना ही नहीं अपितु पूरे समाज का पूरे राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कर सके।

राष्ट्रीय सेवा योजना केंद्र सरकार की एक विस्तृत और कल्याणकारी योजना है। केंद्र सरकार, राज्य सरकार/ संघ शासित प्रदेश और विभिन्न शैक्षिक संस्थान इस कार्यक्रम के आधारभूत स्तंभ है ।स्कूल और कॉलेज में पढ़ने के साथ–साथ छात्र– छात्राओं के लिए महाविद्यालय स्तरीय अन्य विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। छात्रों के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान का होना ही आवश्यक नहीं है बल्कि उन्हें अन्य गतिविधियों ,क्रियाकलापों से भी परिचित होना चाहिए। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहां वे अपने व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों से परिचित होते हैं। यहां उन्हें समाज से जुड़ने का मौका मिलता है। छोटे–बड़े, ऊंच–नीच, जात–पात आदि के भेदभाव किए बिना एक मंच पर सब एकत्रित होते हैं जहां वे समाज से जुड़कर उसमें फैली विभिन्न बुराइयों कुरीतियों को अपने विभिन्न जागरुकता अभियानों के माध्यम से दूर करने का प्रयास करते हैं और राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान देते हैं।

भारत सरकार के युवा कल्याण मामले एवं खेल मंत्रालय द्वारा स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय में छात्र–छात्राओं में देश के प्रति राष्ट्र प्रेम,राष्ट्र भाव की अलख जलाने और निस्वार्थ भाव से सेवा करने की जिस योजना को संचालित किया है वह अत्यंत सराहनीय है। राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े सभी छात्र आज जिस प्रकार देश के कोने कोने में अपनी सेवाए प्रदान कर रहे हैं यह अत्यंत प्रशंसा का विषय है। इस संस्था से जुड़े समस्त विद्यार्थियों को स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाएं के नाम से संबोधित किया जाता है अर्थात वे स्वेच्छा से अपनी सेवा प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। विभिन्न सामुदायिक सेवाओं के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण में योगदान मिलता है ।राष्ट्रीय सेवा योजना के विचारों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों की छवि परिलक्षित होती है। राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं का एक स्वैच्छिक संघ है जहां शैक्षिक सामुदायिक सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र को विकसित किया जाता है । एन एस एस का आदर्श वाक्य 'मैं नहीं बल्कि आप' (नॉट मी बट यू)जिस भावना से ओत है उससे यही परिलक्षित होता है कि दूसरों की सेवा ही सर्वप्रथम है और इसी प्राथमिक उद्देश्य के साथ सन 1969 में एक शैक्षिक सामुदायिक सेवा के रूप में एन एस एस की स्थापना हुई ।सेवा के द्वारा ही समाज को संवारा जा सकता है उसमें शिक्षा की लौ जलाई जा सकती है। राष्ट्रीय सेवा योजना मे छात्रो के व्यक्तित्व को बेहतर बनाने, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने और सामाजिक उन्मूलन में योगदान देने के लिए विभिन्न सेवाओं का आयोजन किया जाता है।

तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉक्टर वी के आर वी राव के समय में 24 सितंबर 1969 को 37 विश्वविद्यालयों मे एनएसएस कार्यक्रम शुरु किया गया । एनएसएस के विभिन्न शिविर जो स्वयंसेवकों के व्यक्तित्व को निखारने के लिए आयोजित किए जाते हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

राष्ट्रीय एकता शिविर – यह शिविर पूर्णता आवासीय शिविर होता है। जिसकी अवधि 7 दिन की होती है ।

गणतंत्र दिवस परेड शिविर – यह 1 जनवरी से 31 जनवरी तक चलाया जाता है जो कि नई दिल्ली में आयोजित होता है और इस शिविर से चयनित शिविरार्थीको गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल होने का गौरव प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय युवा महोत्सव – राज्य सरकार के सहयोग से हर साल 12 से 16 जनवरी तक भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जाता है।

साहसिक कार्यों का आयोजन – प्रतिवर्ष 1500 स्वयंसेवक इस शिविर में प्रतिभाग करते हैं। यह देश के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र जैसे अरुणाचल प्रदेश व हिमालय क्षेत्र में आयोजित किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना की वैचारिक उन्मुखता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित है और समस्त युवा स्वामी विवेकानंद को अपना प्रेरणा पुरुष मानते हैं। यही कारण है की राष्ट्रीय सेवा योजना का ध्येयवाक्य स्वामी विवेकानंद जी से प्रेरणा लेते हुए श्मैं नहीं आपश के रूप में चुना गया। युवाओं को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के लिए प्रेरित करना ,विभिन्न आपातकालीन और प्रातिक आपदाओं से निपटने के लिए तैयार करना, समुदाय को जानना समझना और उसकी समस्याओं का समाधान करना, नेतृत्व क्षमता के गुणो को प्राप्त करना तथा सामुदायिक भागीदारी को एकत्रित करने का प्रयास करना आदि कुछ ऐसे राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है। स्वयंसेवकों के लिए 2 वर्ष की अवधि में कुल 240 घंटे की सामाजिक सेवा समर्पित करना अत्यंत आवश्यक है। प्रतिवर्ष 20 घंटे उन्मुखीकरण तथा 100 घंटे समाज सामुदायिक सेवा में देने पड़ते हैं। छात्र–छात्राओं को सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रेरित कर समाज सेवा का अवसर प्रदान करती है और उनके व्यक्तित्व को निखारने तथा भविष्य में उन्हें आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करती है ।भारत सरकार द्वारा शुरू की गई शानदार वैचारिक रूप से प्रेरित योजना है जो युवा छात्रों के व्यक्तित्व और चारित्रिक विकास मदद कर रही है यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू करने के लिए एक एडवाइजरी भी जारी की है जिसके अंतर्गत माइनर विषय के रूप में अब छात्र–छात्राएं इसे महाविद्यालय स्तर पर भी एक विषय के रूप में पढ़ सकेंगे।

पूरे विश्व में सह पाठयक्रम तथा पाठ्यतर गतिविधियां शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण भाग है। ऐसी गतिविधियां छात्र–छात्राओं में व्यक्तित्व निर्माण, चरित्र निर्माण तथा समुदाय चिंताओंके प्रति गतिशील बनती है। किसी देश की शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम में कम से कम आंशिक रूप से ही सामुदायिक निर्माण गतिविधियां शामिल होनी चाहिए,और राष्ट्रीय सेवा योजना उनमें से एक है। यह विद्यार्थियों को जमीनी स्तर पर लोगों से जुड़ने का मौका प्रदान करता है जिससे वह समाज की वास्तविक परेशानियों से परिचित होते हैं।

सेवा के माध्यम से शिक्षा राष्ट्रीय सेवा योजना इसी उद्देश्य के साथ लगातार कार्य करते हुए आगे बढ़ रहा है। स्वास्थ्य जागरूकता, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत, सड़क सुरक्षा अभियान, नशा मुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण तथा विभिन्न जागरूकता संबंधी मुद्दों पर नियमित गतिविधियां संचालित की जाती है। एनएस एस स्वयंसेवक कई परियोजनाओं को लेकर आगे बढ़ते हैं जो विभिन्न सामाजिक क्षेत्र के मुद्दों में व्यापक स्तर पर ध्यान केंद्रित करते हैं जैसे बुजुर्गों की देखभाल, वंचितों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, मरीजों से जुड़े स्वास्थ्य केंद्र, एड्स तथा कैंसर पीड़ित, सामाजिक उद्यमिता, बालिका स्वास्थ्य, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि ऐसे कई बहुउद्देशीय कार्यक्रम है जो एनएसएस के सौजन्य से संचालित कर समाज में एक जागरुक चेतना का प्रसार किया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक अपने लिए नहीं बल्कि समाज के लिए जीते हैं। एक बेहतर समाज के

निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। महाविद्यालय ,विश्वविद्यालय स्तर पर एनएसएस की गतिविधियां विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उत्तम विकास करती हैं और उनके व्यक्तित्व में साहस, ईमानदारी, कर्मठता, जिज्ञासा ,त्याग आदि की भावना को विकसित कर स्वयंसेवक की एक अलग ही पहचान बनती है। स्वयंसेवकों के व्यक्तित्व को निखारने एवं उन्हें भविष्य के प्रति कर्तव्य निष्ठा संवेदनशील नागरिक के रूप में संवारने में अपना अमूल्य योगदान एनएसएस के माध्यम से पहुंचाया जा रहा है। युवा समाज के गतिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । यदि अपने विद्यार्थी जीवन में उमंग ,उत्साह , स्फूर्ति और जोश का समावेशन करना है तो प्रत्येक विद्यार्थी को राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ना होगा ताकि वह अपने व्यक्तित्व को सकारात्मक सोच से उत्प्लावित कर सके।

अंततः हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय सेवा योजना से जिस ज्ञान और कौशल का विकास होता है उससे व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास संभव है। स्वामी विवेकानंद की यह पंक्तियां कि उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक कि तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य प्राप्त न हो जाए हम सब के लिए प्रेरक है।

व्यक्तित्व विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका

श्री मनोज राठौर, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
शासकीय महाविद्यालय, रेहटी

व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित विशेषताओं का योग हैं।विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की परिभाषा अपने–अपने ढंग से दी है, सबका व्यक्तित्व की परिभाषा के प्रति अपना–अपना ष्टिकोण है।

डैशियल के अनुसार – " व्यक्तित्व व्यक्ति के सभी व्यवहारों का वह समायोजित संकलन है, जो उसके सहयोगियों में स्पष्ट रूप से दिखलायी दे। "

एलपर्ट के अनुसार – " व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन मनोदैहिक अवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है, जिनके आधार पर व्यक्ति अपने परिवेश के साथ समायोजन स्थापित करता है। "

व्यक्तित्व विकास से तात्पर्य समय के साथ किसी के व्यक्तित्व को विकसित करने, निखारने और बदलने की प्रक्रिया से है।

व्यक्तित्व विकास में एकीत विशेषताओं का गतिशील निर्माण और विघटन शामिल है जो किसी व्यक्ति को पारस्परिक व्यवहार संबंधी लक्षणों के संदर्भ में अलग करता है। व्यक्तित्व विकास हमेशा बदलता रहता है और प्रासंगिक कारकों और जीवन–परिवर्तनकारी अनुभवों के अधीन होता है। व्यक्तित्व विकास भी विवरण में आयामी और प्रति में व्यक्तिपरक है। अर्थात व्यक्तित्व विकास को तीव्रता और परिवर्तन की डिग्री में भिन्न–भिन्न निरंतरता के रूप में देखा जा सकता है।

ऐसे कई कारक हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित या आकार देते हैं। ये कारक आंतरिक और बाह्य दोनों हो सकते हैं। व्यक्तित्व को आकार देने वाले आंतरिक कारक आनुवंशिक या वंशानुगत कारक, हार्मोन, भावनाएं और शरीर के शारीरिक कार्य हैं। बाहरी कारक, जो व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं, वे हैं पारिवारिक वातावरण, स्कूल का वातावरण, मित्र मंडली, जनसंचार माध्यम, तकनीकी विकास, धार्मिक और सांस्तिक मान्यताएँ।

आज की आधुनिक दुनिया में प्रौद्योगिकी अथवा तकनीकी विकास हमारे दैनिक जीवन का एक प्रमुख हिस्सा बन गई है। आमतौर पर लोग हर गतिविधि में तकनीकी का इस्तेमाल करते हैं। हम हमेशा बिना सोचे–समझे तकनीक के साथ जीते हैं। उदाहरण के लिए, हम सुबह खुद को जगाने के लिए अलार्म घड़ी का उपयोग करते हैं और आसानी से नींद पाने के लिए हम म्यूजिकप्लेयर में संगीत सुनते हैं। प्रौद्योगिकी का उपयोग करना आसान है और यह हमें अधिक सुविधाजनक बनाती है। अधिकांश लोग अपने जीवन में प्रौद्योगिकी पर भरोसा करते हैं। इस तरह तकनीकी हमारे जीवन के हर पहलू को तेजी से प्रभावित कर रही है। प्रौद्योगिकी हमारे व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रौद्योगिकी का व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अन्तर्जाल, सामाजिक माध्यम और मोबाइल एप्लिकेशन के आगमन के साथ, हमने बातचीत करने, सीखने और खुद को अभिव्यक्त करने के तरीके में बदलाव देखा है। उन्नत प्रौद्योगिकी के इस युग में, हमारे व्यक्तित्व हमारे आसपास की डिजिटल दुनिया से आकार लेते हैं और प्रभावित होते हैं।

प्रौद्योगिकी व्यक्तित्व को प्रभावित करने के तरीकों में से एक है सूचना की पहुंच के माध्यम से। अपने स्मार्टफ़ोन या कंप्यूटर पर बस कुछ टैप से, हम ढेर सारा ज्ञान और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह आसान पहुंच हमें अपने क्षितिज को व्यापक बनाने, नए विचारों का पता लगाने और एक अधिक सर्वांगीण व्यक्तित्व विकसित करने की अनुमति देती है। हम विभिन्न संस्तियों के बारे में जान सकते हैं, विभिन्न दृष्टिकोणों का पता लगा सकते हैं और दुनिया के बारे में अपनी समझ का विस्तार कर सकते हैं। विविध जानकारी के संपर्क से हमें अधिक खुले विचारों वाला, सहानुभूतिपूर्ण

और अनुकूलनीय व्यक्ति बनने में मदद मिलती है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने भी हमारे व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये प्लेटफ़ॉर्म आत्म–अभिव्यक्ति के लिए एक आउटलेट प्रदान करते हैं और हमें वैश्विक स्तर पर दूसरों से जुड़ने की अनुमति देते हैं। हम अपने विचार, राय और अनुभव साझा कर सकते हैं, एक डिजिटल पहचान बना सकते हैं जो दर्शाती है कि हम कौन हैं। दूसरों के साथ ऑनलाइन बातचीत के माध्यम से, हम संचार कौशल, सहानुभूति और विभिन्न ष्टिकोणों को समझने की क्षमता विकसित करते हैं। सोशल मीडिया सहयोग और टीम वर्क की सुविधा भी देता है, क्योंकि हम समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से जुड़ सकते हैं और सामान्य लक्ष्यों की दिशा में काम कर सकते हैं। यह समुदाय और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है, जो हमारे समग्र व्यक्तित्व विकास में योगदान देता है।

इसके अलावा, प्रौद्योगिकी व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए उपकरणों और अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है। ध्यान और सचेतन ऐप्स से लेकर भाषा सीखने के प्लेटफॉर्म तक, ये प्रौद्योगिकियां आत्म–चिंतन, आत्म–सुधार और कौशल वृद्धि के अवसर प्रदान करती हैं। हम इन उपकरणों का उपयोग भावनात्मक बुद्धिमत्ता, लचीलापन और अनुकूलनशीलता विकसित करने के लिए कर सकते हैं, जो सभी एक पूर्ण व्यक्तित्व में योगदान करते हैं। ये प्रौद्योगिकियां हमें अपने व्यक्तिगत विकास पर नियंत्रण रखने और खुद को बेहतर बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम करने के लिए सशक्त बनाती हैं।

हालाँकि, जब प्रौद्योगिकी के उपयोग की बात आती है तो संतुलन बनाना आवश्यक है। हालाँकि प्रौद्योगिकी अनेक लाभ प्रदान करती है, लेकिन इस पर अत्यधिक निर्भरता के नकारात्मक परिणाम भी हो सकते हैं। ऑनलाइन बहुत अधिक समय बिताने से सामाजिक अलगाव, आमने–सामने संचार कौशल में कमी और वास्तविक दुनिया के अनुभवों की कमी हो सकती है। हमारे ऑनलाइन और ऑफलाइन जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम सार्थक संबंध बनाए रखें और डिजिटल दायरे के बाहर व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में संलग्न हों।

व्यक्तित्व विकास में एकीत विशेषताओं का गतिशील निर्माण और विघटन शामिल है जो किसी व्यक्ति को पारस्परिक व्यवहार संबंधी लक्षणों के संदर्भ में अलग करता है। व्यक्तित्व विकास हमेशा बदलता रहता है और प्रासंगिक कारकों और जीवन–परिवर्तनकारी अनुभवों के अधीन होता है। व्यक्तित्व विकास भी विवरण में आयामी और प्रति में व्यक्तिपरक है। अर्थात व्यक्तित्व विकास को तीव्रता और परिवर्तन की डिग्री में भिन्न–भिन्न निरंतरता के रूप में देखा जा सकता है। यह प्रति में व्यक्तिपरक है क्योंकि इसकी संकल्पना अपेक्षित व्यवहार, आत्म–अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत विकास के सामाजिक मानदंडों में निहित है। व्यक्तित्व मनोविज्ञान में प्रमुख ष्टिकोण इंगित करता है कि व्यक्तित्व जल्दी उभरता है और व्यक्ति के जीवन काल में विकसित होता रहता है।

इसके अलावा, व्यक्तित्व विकास पर प्रौद्योगिकी के संभावित नकारात्मक प्रभावों के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया तुलना और आत्म–संदेह की संसति पैदा कर सकता है। सावधानीपूर्वक संकलित ऑनलाइन व्यक्तित्वों के लगातार संपर्क में रहने से अपर्याप्तता की भावनाएँ और स्वयं की वित भावना पैदा हो सकती है।

नई पीढ़ी के ऐप्स की शुरुआत लोगों के व्यक्तित्व विकास और उनके बुनियादी कौशल की उन्नति के लिए सबसे फायदेमंद मंच साबित हुई है। प्रतिष्ठित व्यक्तित्व खुद को उन्नत करने और अपने प्रदर्शन में वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए उन्नत तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। इंसान के लिए खुद को एक सुपरिभाषित तरीके से उन्नत और संवारना बुनियादी जरूरत है।

भारत के गौरवपूर्ण अतीत से स्वप्रेरणा प्राप्ति : व्यक्तित्व विकास का सेतु

डॉ. सुषमा जादौन, प्राध्यापक, हिन्दी
बाबूलाल गौर शासकीय पी.जी. कॉलेज, भेल, भोपाल

'व्यक्तित्व' शब्द का प्रयोग करते हुए आंतरिक और बाहरी गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति का स्वरूप आकार लेने लगता है। अच्छाई, सच्चाई, सहायता, नैतिकता, सर्वधर्म समभाव, आत्मविश्वास जैसे गुण आंतरिक हैं और आकर्षक रंग रूप बाहरी गुण हैं। दोनों के समन्वित मेल से एक प्रभावी व्यक्तित्व का निर्माण होता है। श्री नारायण प्रसाद जैन ने अपनी पुस्तक ज्ञानगंगा में लिखा है – ''हर मनुष्य इसलिए है कि उसका अपना चरित्र हो; अद्वितीय बने और वह करे जो कोई और नहीं कर सकता।''1

इस कथन के साथ उन्होंने किसी पाश्चात्य विद्वान का नाम दिया है। व्यक्तित्व का विशिष्ट अर्थ यह है– जो दूसरों से अलग हो। विशिष्ट हो।

भारत का गौरवपूर्ण अतीत

एक राष्ट्र के रूप में भारत का शीश सदा स्वाभिमान से ऊँचा रहा है। ऐतिहासिक गाथाएँ, वीरों का शौर्य, कालजयी साहित्य, आध्यात्मिक गौरव, संगीत, कला, संस्कृति का वैविध्य और वैशिष्टय ने हमारे राष्ट्र को विश्व में सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कर रखा है। हमारी सांस्कृतिक एकता, गंगाजमुनी संस्कृति, समन्वित दृष्टि का आदर पूरे संसार में होता रहा है। भारत के साहित्यिक ज्ञान–भंडार और श्रेष्ठतम रचनाओं का अतीत भी हमें गर्व से भर देता है। वेद, रामायण, महाभारत, उपनिषद, ब्राह्मण–ग्रंथ, पुराण, बौद्ध और जैन धर्म की उपदेशात्मक कथाओं ने हर भारतीय को प्रभावित किया है। सम्पूर्ण विश्व में गीता–ज्ञान को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। यह गौरवशाली अतीत हमारे भारतीय होने को गर्व से भर देता है। इससे स्वप्रेरणा लेकर हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। हीनभावना, नैराश्य, रणछोड़ जैसे भावों की यहाँ सदैव निंदा की गई है। हमारा अतीत हमें सदा आत्मविश्वासी, कर्त्तव्य–निष्ठ और कर्मठ व्यक्ति बनने की प्रेरणा देता है।

हमारी सामजिक व्यवस्था का आधार भी व्यावहारिक है।

सबसे पहले तो कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की सहज, स्वीकार्य व्यवस्था थी। बाद में 16 संस्कारों के माध्यम से हर व्यक्ति का सामाजीकरण किया जाने लगा। यह सामाजीकरण ही व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। इसी समाज में परिवार एक संस्था है। भारत के संयुक्त परिवार हमारे अतीत का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। एकल परिवार की टूटन से बिखरा व्यक्ति सामने आता है, जबकि संयुक्त परिवार हमें जोड़ते हैं। सामाजिक व्यवस्था में हमारे देश में प्रचलित धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की अवधारणा वैज्ञानिक है। नये आयामों के द्वार खोलती है। इसमें माता–पिता गुरु का ऋण और पूर्वजों के श्राद्ध का आयोजन शमिल हैं। आश्रम व्यवस्था भारत की सबसे बड़ी समाज व्यवस्था है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम के माध्यम से व्यक्ति का परिवार के प्रति जुड़ाव, लगाव और विरक्ति की सर्वस्वीकृत व्यवस्था है, जिसे हम विस्मृत कर चुके हैं। युवा, भारत की इस गौरवशाली परम्परा से भी स्वप्रेरणा लेकर अपने व्यक्तित्व में सकारात्मकता ला सकते हैं।

भारत का औषधीय, चिकित्सा और खगोलीय ज्ञान का अतीत

हमारे युवा यह बात नहीं जानते कि भारतीय ऋषि सुश्रुत शल्यचिकित्सा के लिए जाने जाते हैं। भारत की हल्दी, तुलसी, नीम और हर वनस्पति के गुण को आज विश्व ने स्वीकारा है। आयुर्वेद, योग का लोहा पूरे विश्व ने मान लिया है। भारत का गौरवपूर्ण अतीत हमें यह प्रेरणा देता है कि शास्त्र ज्ञान में हम किसी से कम नहीं है। भारत के औषधीय ज्ञान की स्वीकार्यता निरन्तर बढ़ती जा रही है। खगोलीय ज्ञान की समृद्धि हमें चमत्कृत करती है। बिना

दूरबीन और तकनीकी उपकरण के सूर्य की दूरी, चाँद का परिक्रमा पथ, गुरु ग्रह का सबसे विशाल होना, शनि के कई मून का ज्ञान भारत के ऋषि मुनियों को था। आर्यभट्ट के सिद्धान्त, धरती, सौरमंडल, आकाश गंगाओं के साथ–साथ अनंत ब्रह्माण्ड का सिद्धान्त भी गौरवूपर्ण गाथा कहता है। आज फिजिक्स के प्रोफेसर भी यह मान गए हैं कि भारत ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं। हमारा गौरवपूर्ण अतीत व्यक्तित्व के विकास का आधार है। 'भारतीयता' शब्द ही हमारे व्यक्तित्व को एक सबल आधार प्रदान करता है।

हमारा साहित्यिक गौरवपूर्ण अतीत

1. यूनान मिस्र रोमां सब मिट गए जहाँ से
2. फिर भी रहा है बाकी, नामो निशां हमारा2

इकबाल का गीत 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' हमारे गौरवपूर्ण अतीत की पूर्ण अभिव्यक्ति करता है। साहित्यिक दृष्टि से भारत ''ज्ञान का अपार भंडार, हिंद महासागर से भी गहरा, भारत के भौगोलिक विस्तार से भी व्यापक, हिमालय के शिखरों से भी ऊँचा ओर ब्रहम की कल्पना से भी अधिक सूक्ष्म.....।''3 पूरे विश्व में भारत के सांस्कृतिक गौरव को पहुँचाने वाली कृतियाँ रामायण, महाभारत, की सरल कहानी, यृद्ध की विभीषिका, सत्य घटना जन–जन तक पहुँच चुकी हैं। हमें इन कृतियों को कपोल कल्पित नहीं मानना चाहिए। भारत के सांस्कृतिक, साहित्यिक वैभव में हमारा चिन्तन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज भी श्लाघनीय है। अनुवाद के माध्यम से भारत का कालजयी साहित्य पूरे विश्व में पहुँच चुका है और हमारा युवा इनके रचनात्मक अवदान से अपरिचित है। जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान मेक्समूलर ने देवनागरी को विश्व की सबसे प्राचीन एवं वैज्ञानिक लिपि कहा है। विश्व ने भी संस्कृत को सबसे प्राचीन भाषा मान लिया है। हम भी अपने साहित्यिक अतीत से स्वप्ररेणा लेकर सद्गुणों का विकास कर सकते हैं।

हमारा ऐतिहासिक गौरव

सिंधु घाटी सभ्यता, मौर्य साम्राज्य, गुप्तकाल, बौद्ध धर्म, जैन धर्म से पूर्व भी भारत की एक गौरवशाली ऐतिहासिक यात्रा रही है जिसमें समानता, बंधुत्व और अभिव्यक्ति की 'स्वतंत्रता विद्यमान है। सुवर्णा खंडकाव्य की ये पँक्तियाँ देखिए–

वह वीरवेश में दुर्ग द्वार पर, पहले पहल दिखी
ज्योंनभ में उड़ने को सतृष्ण ओजस्वी स्वर्ण शिखी
स्वर्णांशुक का उष्णीश, छरहरा छर्रा मणियों का
ज्यों किरण चढ़े सोपान, पुंज प्रातः हिमकनियों का।4

सहित्यकार श्री नरेश मेहता की कृति 'सुवर्णा' काल्पनिक होते हुए भी तत्कालीन ऐतिहासिक छवि को प्रकट करने में सक्षम है। वीर वेश में युवती, सिर पर पगड़ी पहने हमें भारतीय नारियों के ओजपूर्ण व्यक्तित्व की झाँकी दिखाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गए संघर्ष के समय स्त्री, पुरुषों का समान बलिदान हमें राष्ट्र के प्रति भक्ति का संदेश देता है।

शिवाजी, राणाप्रताप, लक्ष्मी बाई, मंगल पांडे का नाम लेते हुए युवाओं के भीतर जोश की एक लहर जनम लेती है। यह भारत का गौरवपूर्ण अतीत ही है जिससे युवा स्वप्रेरणा प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व में देश भक्ति वीरता की भावना उत्पन्न कर सकते हैं।

भारत की आध्यात्मिक चिंतन–धारा

वेदों से प्रांरभ हुई यह गौरवपूर्ण चिंतन–धारा एक ईश्वर, जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग, नर्क की अवधारणा, पुनर्जन्म के सिद्धान्त को आज तक भारतीय मानस में विद्यमान है। जो पिण्ड में है, वहीं ब्रह्माण्ड में है। कर्म के सिद्धान्त की नयी–नयी व्याख्याएं की जा रही है। अनेक ऋषि, मुनियों, साधु–संतों ने इस आध्यात्मिक धारा को आगे

बढ़ाया है। ''राम भारत की आस्था हैं – रोम–रोम में बसने वाले राम को कभी भारतीय चेतना से विस्मृत नहीं किया जा सकेगा..... भारत को राम से विलग कर देखना भारत की पहचान पर प्रहार करना है, भारत राम है, राम भारत है।''5

युवा मन भारत के अतीत को जब तक नहीं जानता तब तक सवालों से जूझता है। मार्ग में भटकता है। मन, चिन्त, हृदय, चेतना, अवचेतन, साक्षी, द्रष्टा, भोक्ता जैसे शब्द पर्यायवाची लग रहे हैं। भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन धारा का आज विश्व में बड़ा आदर है। हम इसे अंधविश्वास मानकर भूल जाना चाहते हैं। यह अंधविश्वास नहीं है। आज श्री रविशंकर, श्री जगद्गुरु अपनी वाणी से समृद्ध कर रहे है। युवाओं को भी इसमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

भारत की सांस्कृतिक विरासत

हमारी विरासत अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और गौरवमयी है। मन को स्वाभिमान से परिपूर्ण करती है

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।

संसार भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।6

हर भारतीय की यही कामना है कि हम अपने राष्ट्र के गौरव में वृद्धि करें। अपने कर्त्तव्य का सदा पालन करें।

मैथिलीशरण गुप्त की ये पँक्तियाँ संस्कृति के प्रति हमारी दृढ़ आस्था को प्रकट करती हैं। संस्कृति का अर्थ किसी भी राष्ट्र या समाज के लोगों का रहन–सहन, विचारधारा, कला, साहित्य और चिन्तन परंपरा से है। यह सांस्कृतिक वैभव हमें अन्य राष्ट्रों की तुलना में अधिक समृद्ध, अधिक ज्ञानवान, अधिक संपन्न प्रतीत होता है। हमारी संस्कृति में आततायी को दण्ड देने की गाथा भी है तो मुगलों के साम्राज्य को आत्मसात् करने की धैर्यपूर्ण सहमति भी। भारत कभी भी आक्रांता नहीं बना। सांस्कृतिक विविधता के बाद भी हमारे देश के ग्रामों तक एकता विद्यमान हैं। चारों धाम की यात्रा हर भारतीय के मन की आस है, यह अतीत का गौरव, शंकराचार्य की दूरदर्शी सोच का परिणाम है। आज भी हम 'एकता में अनेकता हिन्दी' की विशेषता जैसे सूत्र वाक्यों से अपने स्वाभिमान को अनुभव कर सकते है।

गौरवपूर्ण अतीत से स्वप्रेरणा

मनुष्य केवल हाड़ माँस का पुतला नहीं है। वह अपनी चारित्रिक विशेषताओं पारिवारिक जीवन मूल्य और सुदीर्घ भारतीय परम्परा से पोषित प्राणी है। उसके व्यक्तित्व में आंतरिक और बाहरी गुणों का समन्वय हमारी विरासत की स्वप्रेरणा है। आज हर भारतीय को अपने देश की विविधता पर गर्व है। धार्मिक, वैचारिक भिन्नता के बाद भी, हमें अपने विचारों की प्रस्तुति का अधिकार है। आज के युवा पाश्चात्य जगत की चकाचौंध से प्रभावित हैं। उन्हें भारत में अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, कूपमंडूकता और कट्टरता के दर्शन होते हैं। भारत के नैतिक मूल्य, श्लील, अश्लील का भेद उन्हें बंधन मालूम होते हैं। लेकिन यदि हम अतीत की ओर दृष्टि डालें तो भारत की वैचारिक स्वतंत्रता और आधुनिकत चिंतन का अनुभव कर सकेंगे। ''जहाँ हृदय में निर्भयता है और मस्तक अन्याय के सामने नहीं सुकता। जहाँ ज्ञान का मूल्य नहीं लगता, जहाँ विवेक निर्मलधारा पुरातन रूढ़ियों के मरुस्थल में सूखकर लुप्त नहीं हो गयी।..... प्रभु उस दिव्य स्वतंत्रता के प्रकाश में मेरा देश जाग्रत हो।''7

व्यक्तित्व विकास का सेतु हमारा अतीत है।

हमारा अतीत, हमारा गौरव और स्वाभिमान है। अंग्रेजों की गुलामी और उससे भी पहले की पराधीनता के कारण हम अपने गौरव को विस्मृत कर बैठे। धार्मिक कट्टरता, संकुचित दृष्टिकोण, शोषण, अन्याय और आतंकी गतिविधियों के कारण युवा व्यक्तित्व कुंठित–सा हो गया है। बेरोजगारी, बढ़ती महँगाई, प्रतिस्पर्धा, अपराध जैसे दृश्यों ने युवाओं को अपनी जड़ों से काट दिया है।

ऐसे अंधकार पूर्ण वातावरण को चीरकर, बाहर आकर अपने व्यक्तित्व को नया आयाम देना हमारा कर्त्तव्य है। और इस दिशा में हमारा अतीत मार्गदर्शक सिद्ध होगा। बालकृष्ण शर्मा नवीन कहते हैं–

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है

मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।8

हमारे देश का इतिहास गौरवपूर्ण है। संस्कृति महान है। साहित्य प्रभावी है। जीवन–दृष्टि पूर्ण और वैज्ञानिक है। हमारी भोजनन–पद्धति ईश्वर के प्रति विश्वास, सभी का समान– आदर, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, वृद्धों का सम्मान ऐसे परम्परागत विचार हैं जिन्हें अपनाकर हम अपने व्यक्तित्व को नया आकार दे सकते हैं। हमारा अतीत हमारे व्यक्तित्व विकास का सेतु है।

निष्कर्ष

व्यक्ति के जीवन में धन, शिक्षा परिवार, समाज के साथ–साथ नैतिक मूल्यों और आदर्शों का महत्त्वूपर्ण स्थान रहा है। किसी भी व्यक्ति का चरित्र उसके संस्कारों, आचरण, आंतरिक गुणों पर निर्भर है।

राष्ट्र के रूप में भारत का गौरवशाली अतीत है। धर्म, संस्कृति, इतिहास, साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, न्याय, प्रशासन जैसे विषय में एक गंभीर चिंतन–धारा हमारे राष्ट्र की प्राण–धारा बनी हुई है। 'भारतीय' कहते ही गौरव की भावना हमारे अन्तर्मन तक प्रवाहित होने लगती है। भारत का गौरवपूर्ण अतीत व्यक्तित्व निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है। हमारी ज्ञान परम्परा, गणितीय ज्ञान, वैज्ञानिक चिंतन को अंधविश्वास कहने की भूल अब समाप्त हो चुकी है। युवाओं को भी अपने व्यक्तित्व में दृढ़ता, चारित्रिक गुण, मानवीयता, कर्त्तव्य–निष्ठा जैसे गुणों को प्रवाहित करने के लिए अपने गौरवपूर्ण अतीत से स्वप्रेरित होकर अपना व्यक्तितव का विकास करना होगा।

संदर्भ सूची

1. ज्ञानगंगा– नारायण प्रसाद जैन पृष्ठ– 218 भारतीय ज्ञान पीठ, नयी दिल्ली
2. इकबाल की कविता का अंश।
3. भारतीय साहित्य– डॉ नगेन्द्र भूमिका से उद्धृत।
4. सुवर्णा खंडकाव्यः श्री नरेश मेहता
5. मैथिलीशरण गुप्त की पँक्तियाँ :स्मृति के आधार पर
6. साहित्य में भारतीयता के मायने : यशवंत कोठारी टैगोर की पंक्तियाँ उद्धृत साक्षात्कार अंक 490, पृष्ठ 29
7. विरह तप जब फले तब राम आते हैं डॉ गरिमा संजय दुबे उद्धृत साक्षात्कार संयुक्त अंक 508 पृष्ठ 44
8. बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता, स्मृति के आधार पर

राजनीतिक परिदृश्य और व्यक्तित्व निर्माण

श्री दीपेश गौर, राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय महाविद्यालय, सुल्तानपुर

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। जिसमें आकर्षक व्यक्तित्व के निर्माण की होड़ सी लगी हुई है। मगर हम जब चारों ओर के परिश्य पर एक सरसरी नजर डालते हैं तो सभी का रुझान केवल बाहरी आवरण को निखारने की ओर है। हम जब भारतीय संसति के इतिहास की ओर नजर डालते हैं तो मनुष्य न केवल शरीर है बल्कि उसके भीतर एक दिव्य आत्मा का पुंज भी है।

युवा हमारे देश की बहुमूल्य संपत्ति हैं। स्वामी विवेकानंद ने युवा वर्ग को चखित्र निर्माण के पांच सूत्र दिए – आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्म संयम, आत्म ज्ञान और आत्म त्याग । इन पांच सूत्रों का अनुशीलन कर युवा वर्ग से एक उच्च राजनीतिक व्यक्तित्व को गड़ा जा सकता है। वर्तमान पीढ़ी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जीवन शैली, नैतिक मूल्य एवं आदर्श में बदलाव आ रहा है। आज की युवा पीढ़ी विकास एवं आर्थिक उन्यन के बोझ तले इतनी अधिक दब गई है कि वह अपने पारंपरिक आधारभूत उच्च आदरों से समझौता तक करने में हिचकिया नहीं रही है। बदलाव के इस दौर में व्यक्तित्व निर्माण की अति आवश्यकता है। जो एक नई राजनीति का सूत्रपात कर सके। और यह राष्ट्र विकास के लिए आवश्यक तत्व है।

लोकतंत्र एक ऐसे सामाजिक संगठन का निर्माण करता है जिसमें प्रत्येक नर – नारी दूसरों के साथ सहयोग करते हुए अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर एक सामान्य सुलभ जीवन का निर्वहन कर सकते हैं।

भारतीय व्यक्तित्व सिद्धांत और पश्चिमी व्यक्तित्व सिद्धांतों के ष्टिकोण एक दूसरे से पूर्णतः अलग हैं। दोनों की अपनी अपनी मौलिक विशेषताएं हैं। इनकी स्वतंत्र उपयोगिता है। इसी कारण आज भी ये एक दूसरे के पूरक बन रहे हैं। व्यक्तित्व को उन्नत करने में भारतीय मनोविज्ञान की प्रमुख देन योग विद्या और ध्यान का बहुत उपयोग बढ़ा है। ध्यान एवं योग के परिणामों में मापन व प्रमाणीकरण में पश्चिमी मनोविज्ञान की प्रमुख देन व्यक्तित्व मापन की विधियों का बहुत उपयोग हो रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति में अनेक गुण होते हैं। कुछ विशेष गुण, विशेषताएं भी होती हैं जो दूसरे व्यक्ति में नहीं होती हैं। इन गुणों और विशेषताओं के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्ति के समस्त गुणों का संगठन व्यक्ति का व्यक्तित्व कहलाता है। जनसाधारण में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाहम और व्यक्त रूप से लिया जाता है। मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी समस्त गुणों की समिष्टि है। दर्शनशास्त्र में व्यक्ति का आंतरिक तत्व जीवात्मा माना जाता है। व्यक्तित्व एक स्थिर अवस्था न होकर परिवर्तनशील समिष्टी है। परिवेश के प्रभाव से उसमें बदलाव भी आता रहता है। व्यक्तित्व विशेष लक्षणों का योग न होकर व्यक्ति के व्यवहार की समग्रता है। व्यक्ति के आचार – विचार, व्यवहार, क्रियाएं और विभिन्न गतिविधियों में व्यक्ति का व्यक्तित्व झलकता है। आंतरिक परिवेश या बाह्म वातावरण के साथ तालमेल बैठाने और उनसे संयोजन के लिए व्यक्ति अपना समस्त व्यवहार करता है। वास्तव में आम जनता की भाषा में व्यक्तित्व का अर्थ होता है जनप्रिय गुणों की अभिव्यक्ति अर्थात वह व्यक्ति उदार होता है, आकर्षक दिखता है, दूसरे लोगों के साथ आसानी से घुल मिल जाता है एवं अपने भावों की अभिव्यक्ति अच्छे ढंग से कर लेता है। सामाजिक रूप में वांछित ढंग से अभिव्यक्ति करता है। शिष्ट व्यवहार करता है, सच्चा एवं निष्कपट है तथा दूसरों के साथ सद्भाव दिखाता है। ऐसे व्यक्ति को उत्तम व्यक्तित्व वाला समझा जाता है। यह लोकप्रिय परिभाषा है। इसे पाश्चात्य विचारक ऑलपोर्ट ने जैव सामाजिक परिभाषा की संज्ञा दी है।

एक व्यक्तित्व के निर्माण में सैद्धांतिक पक्ष के साथ–साथ व्यावहारिक पक्ष भी अति महत्वपूर्ण है। मनुष्य के जन्म काल

से लेकर उसके जीवन काल की समस्त परिस्थितियां उसके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती हैं। व्यक्तित्व के विकास में उसका परिवार, शिक्षा, मित्र, सामाजिक, सांसतिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का विशेष योगदान होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के दैहिक, बौद्धिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भावनात्मक एवं मानसिक विकास भी शिक्षा के माध्यम से बहुत अच्छे ढंग से हो सकता है। इससे हमारे राष्ट्रीय क्षेत्र का विकास संभव हो सकेगा।

व्यक्तित्व विकास गहन अध्ययन का विषय है। जिसमें मनुष्य के जन्म काल से लेकर मृत्यु तक के विभिन्न कॉल खंडों का प्रभाव पड़ता है। हम आदिकाल से आधुनिक काल तक अगर देखे तो हर काल में विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ और उनके व्यक्तिव निर्माण में उस समाज की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

भारतीय इतिहास एवं ज्ञान परंपरा में भौतिकवादी जगत की अपेक्षा आध्यात्मिकता पर अधिक जोर दिया गया है। इसका उदाहरण हमें प्राचीन धार्मिक ग्रंथों, वेद, उपनिषद, सांख्य, योग, जैन पिटक एवं बौद्ध पिटक में देखने को मिलता है। इन सभी ग्रंथों में मानव शरीर की अपेक्षा आंतरिक विकास पर अधिक जोर दिया गया है। भारतीय राजनीतिक परिपेक्ष में अगर हम देखें तो रामायण और महाभारत काल में राजा के व्यक्तित्व निर्माण हेतु गुरुकुल परंपरा का प्रचलन था, जिसमें राजकुमारों को बाल्यकाल से ही गुरु के आश्रम भेज दिया जाता था और गुरु के द्वार उन्हें शासन कला, शस्त्र विद्या, युद्ध कौशल के साथ–साथ नैतिकता, अध्यात्म एवं दर्शन आदि की भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। जिससे एक योग्य और आदर्श शासक का निर्माण हो सके जो प्रजा के लिए प्रेरणा सोत हो।

राजनीति शास्त्र के जनक कहे जाने वाले अरस्तु और उनके गुरु प्लेटो जैसे पाश्चात्य विचारकों ने भी राजनैतिक व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य का शासन एक दार्शनिक के हाथों में सौंपा। इस दार्शनिक शासक को एक लंबी शिक्षा पद्धति से होकर गुजरना पड़ता था। शासक वर्ग इमानदारी पूर्वक अपने कर्तव्य का पालन कर सकें इसलिए उसने परिवार एवं संपत्ति के साम्यवाद का तर्क दिया। समाज में न्याय व्यवस्था स्थापित करने के लिए उसने व्यक्ति को आत्मा के अनुसार कार्य करने की बात कही। अरस्तु ने राज्य को एक पूर्ण और नैतिक संस्था माना। इन विचारकों ने राज्य को व्यक्ति का ही वृहद रूप माना है और एक नैतिक राज्य के निर्माण के लिए व्यक्तियों का नैतिक और उच्च चरित्र वाला होना आवश्यक है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इन विचारकों ने भी राजनीति के क्षेत्र में नैतिकता और आदर्श व्यक्तित्व की बात कही।

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गाँधी, नेहरू, सरदार पटेल, अंबेडकर, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल आदि अनेक ऐसे राजनीतिक व्यक्तित्व रहे हैं जो आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। महात्मा गांधी ने व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर अधिक जोर दिया। गांधीजी ने स्वाधीनता आंदोलन में अहिंसा को अपना हथियार बनाया। इनके व्यक्तित्व ने न केवल भारतवासियों को अपितु समस्त संसार को प्रभावित किया। गांधीजी के व्यक्तित्व से बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक स्त्री एवं पुरुष शहर से लेकर गांव तक सभी वर्ग प्रभावित था। यह उनके व्यक्तित्व का ही प्रभाव था जिसके कारण प्रत्येक वर्ग उनके साथ स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ गया।

सरदार पटेल ने भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने देशी रियासतों का भारत में विलय कर इस अखंड भारत का निर्माण किया। अंबेडकर एक दलित परिवार में पैदा होकर भी एक ऐसे प्रखर व्यक्तित्व के रूप में सामने आए जिससे उन्होंने अछूतों को उनका हक दिलाया। वह भारत के प्रथम विधि मंत्री बने और संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिससे उन्हें आज भारतीय संविधान के निर्माता के रूप में याद किया जाता है। वहीं दूसरी ओर भगतसिंह, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, लाला हरदयाल, चापेकर बंधु जैसे अनेक क्रांतिकारी वीरों ने इस धरती पर जन्म दिया। यह सभी आज भी हमारे युवा वर्ग को आंदोलित एवं ऊर्जा प्रदान करते हैं। स्वतंत्रता

पश्चात नेहरू, इंदिरा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री एवं अटल बिहारी वाजपयी ऐसे राजनेता रहे जिन्होंने राजनीति के माध्यम से अपने प्रभावी राजनीतिक व्यक्तित्व का निर्माण किया। इन राजनेताओं ने विषम परिस्थितियों में भी अपनी उच्च कोटि की निर्णय क्षमता का परिचय देते हुए भारत के विकास में अपना योगदान दिया और भारत को विश्व पटल पर एक सुढ़ राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दिया।

राजनीति में युवा वर्ग की विशेष उपादेयता है। युवा उत्साह और ऊर्जा से भरा होता है और अपने इन्हीं गुणों के कारण वह राजनीति में भी गति और गरिमा ला सकता है। किंतु यह तभी संभव है जब इस युवा वर्ग की ऊर्जा को एक सही दिशा मिले और इसके लिए हमें प्रारंभ से ही उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए प्रयासरत रहना होगा। राजनीति की गतिशीलता के लिए यह जरूरी है कि इसमें युवा वर्ग की भागीदारी बढ़े। राजनीति में युवा वर्ग की सक्रियता गुणात्मक बदलाव लाती है। आशा और स्कूर्ति का संचार करती है। युवा सोशल मीडिया के जरिए देश की राजनीति के प्रति अपनी राय जाहिर कर रहे हैं। देश के राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणियां कर रहे हैं और पिछड़ी सोच रखने वाले बड़बोले राजनेताओं को सोच समझकर बोलने पर भी मजबूर कर रहे हैं। युवा जिस भी दल की ओर अपना रूझान प्रदर्शित करेंगे, निश्चित ही उस दल को फायदा पहुंचेगा।

वर्तमान समय में राजनीति में युवाओं की सहभागिता बढ़ती जा रही है। प्रमुख राजनीतिक दलों ने भी युवाओं की शक्ति को पहचाना है। इन युवाओं को राजनीति में लाने हेतु छात्रसंगठन के माध्यम से प्रेरित एवं प्रशिक्षित किया जाता है। युवा राष्ट्रीय विघटन, अस्थिरता, राष्ट्रीय व सामाजिक विसंगतियों तथा अलगाववाद आदि के खिलाफ मुखर होकर जहां एक सकारात्मक व. सृजनात्मक सोच को विस्तार देते हैं वहीं राज्य के लोककल्याणकारी स्वरूप एवं जनहितकारी व्यवस्था प्रदान करने में भी सराहनीय भूमिका निभाते हैं। ऐसा करते हुए वे राष्ट्र निर्माण की बाधाओं को दूर करते हैं।

व्यक्तित्व निर्माण के माध्यम से जब हम राजनीतिक परिश्य की ओर ष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं कि राजनीतिक सक्रियता का अर्थ केवल चुनाव लड़ना नहीं है अपितु उसके माध्यम से सामाजिक विषयों पर जागरूक होना तथा समाज एवं राजनीति के सिद्धांतों में होते हुए विघटन को रोकने के लिए प्रयासरत होना है। युवाओं के व्यक्तित्व को निखारने के लिए इतिहास के व्यक्तित्व प्रेरणा स्रोत हैं। हमें एक ऐसे सामाजिक पारिवारिक परिवेश का निर्माण करना होगा जिससे राजनीतिक व्यक्तित्व निखर कर सामने आए। उनकी ऊर्जा, योग्यता, संवेदनशीलता, राष्ट्र प्रेम निश्चित ही देश के राजनीतिक परिश्य की विश्व पटल पर अपनी अलग पहचान बनाएगा।

संदर्भ सूची

1. स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा, संस्ति और समाज।
2. डॉ. ओम नागपाल, भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास।
3. एस. सी. शर्मा, एवं ए.के. सिंह, भारत का इतिहास एम. एम. एफ. वराणसी।
4. कमलेश भारद्वाज, भारतीय संस्ति के मूल आधार।
5. रोमा रोलां : स्वामी विवेकानन्द की जीवनी

भारतीय महापुरुषों के प्रेरणाप्रद विचार

श्री प्रेमांशु सिंह, शोध विद्यार्थी
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

भूमिका –

महापुरुषों के जीवन चरित्र हमारे समाज में एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं जिनसे हम प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।

''खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप खुद को दूसरों की सेवा में खो दें।''

–महात्मा गाँधी

ये महापुरुष अपने अद्वितीय और महान कार्यों से हमें न सिर्फ आत्म–समर्पण की दिशा में प्रेरित करते हैं बल्कि उनके जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों से भरपूर उदाहरण से हमें आत्म–संघर्ष को पार करने की प्रेरणा भी मिलती है।

भारतीय संस्कृति और इतिहास में महापुरुषों की कई उदाहरण हैं जिनसे हम प्रेरित हो सकते हैं। महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष ने अपने अहिंसा और सत्य के प्रति अद्वितीय समर्पण दिखाया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक अद्वितीय तरीके से नेतृत्व किया और आम आदमी के साथ जुड़कर स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लिया। उनकी आत्मयंत्रण और आत्म–समर्पण की भावना हमें आत्म–नियंत्रण की महत्वपूर्णता सिखाती है। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे युवा महापुरुष ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन की आहुति दी। उनका संघर्ष और बलिदान हमें देश के प्रति आपने कर्तव्य के प्रति पूरी आस्था और निष्ठा से बांधने की प्रेरणा प्रदान करता है। साहित्य, कला, और संसति में भी महापुरुषों का महत्वपूर्ण योगदान है। रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी कविता, कहानियाँ, और नाटकों के माध्यम से जनसामान्य के दिलों में जागरूकता पैदा की। उनकी भावनाओं और विचारों से हमें जीवन को सही दिशा में देखने की कला सिखाई जाती है।

भारतीय विज्ञान में भी महापुरुषों के उदाहरण हैं, जैसे आर्यभट्ट और चाणक्य। आर्यभट्ट ने गणित और खगोलशास्त्र में अपनी महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी विचारधारा हमें अन्वेषण की भावना प्रदान करती है। चाणक्य का जीवन एक प्रेरणास्त्रोत है, जिन्होंने अपने नीति–नियमों के माध्यम से मौर्य साम्राज्य की स्थापना की और उन्होंने दिखाया कि सामर्थ्य और विश्वास से हम किसी भी मुश्किल को पार कर सकते हैं। विज्ञान और तकनीकी में भारतीय महापुरुषों के योगदान भी हैं, जैसे ऐ. पी. जे. अब्दुल कलाम ने भारत को मिसाइल तकनीक में महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

भारतीय राजनीति में सरदार वल्लभभाई पटेल और पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे महापुरुषों का सहयोग देश के एकता और विकास के प्रति उनके आदर्शों को प्रोत्साहित करता है। उनके नेतृत्व में भारतीय संघटना और स्वतंत्रता संग्राम में नेतृत्व का महत्वपूर्ण योगदान था। भारतीय राजनीति में महापुरुषों के सहयोग से हमें यह सिखने को मिलता है कि नेतृत्व, सामर्थ्य, और आदर्शों के प्रति आदरणीय मानवीय गुणों का महत्व क्या होता है। उनके उदाहरण से हमें देश की सेवा में अपना सर्वोत्तम प्रयास करने की प्रेरणा मिलती है और हम भारतीय समाज को समृद्धि और सामाजिक समानता की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं।

भारत के महापुरुषों ने अपने अद्वितीय विचारों के माध्यम से समाज को प्रेरित किया और उन्नति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कुछ महापुरुषों के विचारों का उल्लेखहै–

1. महात्मा गाँधीः– ''आदर्श नहीं, जीवन ही आदर्श है'' – गाँधी जी ने यह सिखाया कि अच्छे जीवन का ही सबसे बड़ा प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने सत्य और अहिंसा के माध्यम से आत्मा की शुद्धता की महत्वपूर्णता बताई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने दिखाया कि शांतिपूर्ण और अहिंसात्मक आंदोलन से भी बड़े परिवर्तन किए जा

सकते हैं। उनका सहयोग लोगों की आवश्यकताओं के साथ–साथ उनकी भावनाओं को समझकर किया गया, जिससे समाज में एकता और सद्भावना की भावना बढ़ी।

गौतम बुद्ध के बाद, महात्मा गाँधी भारतीय इतिहास में सबसे महान थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से वापस आने के बाद, 1 अगस्त 1920 को पहला राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह प्रारंभ किया और आजादी के संघर्ष में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। इस सत्याग्रह के माध्यम से, उन्होंने अनगिनत अशिक्षित किसानों और उत्साही बुद्धिजीवियों को प्रेरित किया कि वे उनके विश्वास का अनुसरण करें कि भयरहित आत्मसंयम के कारण एक साल बाद देश को या तो ब्रिटिश आतंक से मुक्ति मिलेगी या फिर स्वराज। यद्यपि यह सब उत्ष्टता से नहीं हुआ हो सकता, गाँधी ने सत्य और अहिंसा में अपने आत्मविश्वास को कभी हिलने नहीं दिया। उन्हें विश्वास था कि ईश्वर और प्रेम ही वे दो शक्तियाँ हैं जो मिलकर दुनिया को हिला सकती हैं। तात्पर्य धोती में बुने सर्वथा सादगीपूर्ण 'महान आत्मा' से था, जिन्होंने पहले सत्याग्रह के ढाई दशक के बाद, ''करेंगे या मरेंगे'' इस शक्तिशाली मंत्र के माध्यम से आखिरकार दुनिया में तबके सबसे प्रबल साम्राज्य को दक्षिण एशिया को त्यागने के लिए मजबूर कर दिया। महात्मा गाँधी देश के महान नेताओं में एकमात्र थे जिन्होंने देश के विभाजन को नकारते हुए उसका स्थानीयीकरण किया। उन्होंने इसे भारत माता के शरीर को काटने के समान माना।

2. स्वामी विवेकानंदः– ''उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य न प्राप्त हो जाए'' –इस सूत्र वाक्य ने युवाओं को साहस और स्वावलंबन की महत्वपूर्णता को समझाया।

3. डॉ. बी. आर. अंबेडकरः– ''समाज में समानता का आदर करो, न कि दरिद्रता का'' – डॉ. अंबेडकर ने न्याय और समानता की महत्वपूर्णता को बताया और दलितों के अधिकारों की रक्षा की। भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने भारतीय समाज में समाजिक समानता और न्याय की महत्वपूर्णता को प्रमोट किया। उन्होंने संविधान की रचना करके समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को समानता के अधिकार दिए। उनका सहयोग भारतीय राजनीति में विशेषतः सामाजिक न्याय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण था।

4. रवींद्रनाथ टैगोरः– ''जीवन में विजय पाने के लिए कोशिश करो, न कि सफलता के लिए'' – टैगोर ने सतत प्रयास की महत्वपूर्णता को समझाया और आत्म–समर्पण की भावना को प्रोत्साहित किया।

5. चाणक्यः– ''आपत्ति में भी स्थिर और आत्मविश्वासपूर्ण रहो'' – चाणक्य ने युद्ध और राजनीति में आत्म–नियंत्रण की महत्वपूर्णता को सिखाया।

6. सरदार वल्लभभाई पटेलः– ''एकता में ही शक्ति है'' – पटेल ने भारतीय संघटना की महत्वपूर्णता को प्रमोट किया और देश को एकता के माध्यम से विकास की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया। सरदार पटेल ने भारतीय संघटना को एकत्र किया और देश को एक अखंडता में विभाजन से बचाया। उनका योगदान भारतीय सामाज में एकता और भारतीय संघटना की महत्वपूर्णता को स्पष्ट करता है।

7. पंडित जवाहरलाल नेहरूः– नेहरू जी ने स्वतंत्रता के बाद भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने शिक्षा, विज्ञान, और तकनीकी में नवाचार प्रोत्साहित किए और नवयुवाओं को प्रेरित किया।

8. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलामः– भारत के पूर्व राष्ट्रपति के रूप में अब्दुल कलाम जी ने विज्ञान और तकनीकी में अपने योगदान से देश को गरिमा प्रदान की। उन्होंने युवाओं को विज्ञान में प्रेरित किया और भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मार्गदर्शन किया।

9. माता अमृतानंदमयीः–ने धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में अपने योगदान से लाखों लोगों की जिन्दगी में सकारात्मक परिवर्तन किए। उन्होंने मानवता के लिए सेवा के माध्यम से देश को एक नया दिशा मिलाया।

10. डॉ. वर्णा राजेंद्रनः—ने नारी और बालकों के अधिकारों की रक्षा के लिए अपने योगदान से महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए।

निष्कर्ष –

ये महापुरुष और उनके विचार हमें सामाजिक न्याय, समानता, समर्पण, और आत्म—संघर्ष की महत्वपूर्णता को सिखाते हैं। उनके उदाहरण से हम यह सीख सकते हैं कि समाज और देश के लिए सच्चे मानवीय मूल्यों के साथ योगदान करना कितना महत्वपूर्ण है।स्वतंत्रता के बाद नवयुग में भारतीय महापुरुषों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने योगदान से देश के विकास और सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके योगदान से नवयुग में भारतीय समाज में सुधार हुआ और देश को आगे बढ़ने की दिशा में मार्गदर्शन मिला।

इस प्रकार, महापुरुषों के जीवन चरित्र हमें आत्म—समर्पण, संघर्ष, सामर्थ्य और सहनशीलता की महत्वपूर्णता को सिखाते हैं। उनके उदाहरण से हम यह सीख सकते हैं कि समाज और देश के लिए अपने योगदान को निष्ठा और उत्साह से कैसे प्रदान करें। इन महापुरुषों की प्रेरणा से हम अपने जीवन को उन्नति और सफलता की दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। भारतीय राजनीति में महापुरुषों का सहयोग एक महत्वपूर्ण और आवश्यक अंश है। ये महापुरुष अपने दूरदर्शिता, नेतृत्व, और योगदान के साथ राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लक्ष्य निर्धारण : सफलता के मूल मंत्र

श्री योगेश धाकड़, सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बरेली

प्रस्तावना– लक्ष्य निधारण के बिना जीवन में सफलता की कल्पना भी नही की जा सकती। प्रत्येक व्यक्ति को यदि लक्ष्य को प्राप्त करना है तो सबसे पहले अपने लक्ष्य का चुनाव सावधानीपूर्वक एवं सही समय पर करना होगा। क्योकि बिना लक्ष्य निर्धारण के प्रत्येक व्यक्ति को समझ ही नही आयेगा कि व्यक्ति को अपने जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करनी है । इसलिए ये आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता को पहचान कर एक उचित लक्ष्य का चुनाव करें इसके पश्चात उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दृढ़ संकल्प करे। साथ ही तीव्र इच्छा शक्ति के साथ व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। लक्ष्य के चुनाव के पश्चात लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक उचित योजना भी होना अति आवश्यक है ता क लक्ष्य निर्धारण के लिए एक सही दिशा मिल सके। वैसे तो जीवन में हर व्यक्ति सफलता प्राप्त करना चाहता है लेकिन सफलता कैसे प्राप्त करनी है इसका ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को नही होता । जीवन में कोई भी सफलता अर्जित करने के लिए सबसे पहला कदम आपके द्वारा लक्ष्य निर्धारण करना है क्योकि एक बार जब लक्ष्य का निर्धारण हो जाता है तो आप उन्हे प्राप्त करने का प्रयास शुरु कर देते है । और साथ ही लक्ष्य प्राप्ति के लिए अपना ध्यान उन प्रयासों पर बहतर तरीके से केन्द्रित कर पाते है ।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. जीवन में योग्यतानुसार लक्ष्य का निर्धारण करना
2. लक्ष्य निर्धारण के बाद लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक उचित योजना बनाना

शब्द कुंजीः– लक्ष्य निर्धारण, लक्ष्य निर्धारण की योजना, दृढ़ संकल्प

शोध प्रविधिः– प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के लिए लक्ष्य का चुनाव, दृढ़ संकल्प, लक्ष्य निर्धारण की योजना, अनुशासन का चुनाव कर शोध अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है । साथ ही अवलोकन एवं विश्लेषण कर निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास किया गया है।

विश्लेषणः– प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण निम्नानुसार है –

1. अपने लक्ष्य को चुने :– व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करना है तो पहले अपने लक्ष्य को चुनना होगा। क्योकि लक्ष्य को तय किए बिना व्यक्ति को समझ ही नही आयेगा कि आप को अपने जीवन में क्या करना है । इसलिए अपनी योग्यता अनुसार आप सबसे पहले अपने लक्ष्य को चुनिए उसके बाद उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सही से प्रयास कीजिए ।

2. दृढ़ संकल्प लेंः– सर्वप्रथम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प लें । क्योकि तीव्र इच्छा शक्ति के साथ ही व्यक्ति किसी भी हालात में अपने लक्ष्य को पाकर ही रहेगा ।

योजना बनायेः– एक बार व्यक्ति अपने लक्ष्य को चुन लिया तो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उस हिसाब से योजना भी करना बेहद जरुरी है । क्योकि एक उचित योजना होने पर ही आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक सही दिशा मिल जायेगी।

अनुशासन में रहेंः– लक्ष्य प्राप्ति करने के लिए आवश्यक है कि अनुशासन में रहकर प्रत्येक दिन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें।

समय सीमा निर्धारित करेंः– व्यक्ति जब अपने लक्ष्य को समय सीमा में बांध देता है तो उस लक्ष्य के प्रति ज्यादा सतर्क होकर काम करता है । क्योकि लक्ष्य प्राप्ति के लिए निर्धारण के प्रति उस पर दबाव होता है। इसलिए व्यक्ति ाक

जो कोई भी लक्ष्य हो उसको एक निश्चित समय दो और उस समय सीमा में ही उस लक्ष्य प्राप्ती की कोशिश करो।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि व्यक्ति अपने लक्ष्य को चुनकर उचित योजना बनाकर अपने अंदर उस लक्ष्य को पाने की तीव्र इच्छा रखकर दृढ़ संकल्प लेकर, आलस्य और कामचोरी से बचकर, समय–समय पर उचित मार्गदर्शन लेकर, अपनी गलतियों से सीखकर, अपने समय का सही उपयोग करके, लक्ष्य निर्धारण की उचित योजना बनाकर लक्ष्य की प्राप्ती के लिये प्रयास करना चाहिये । ताकि सफलता प्राप्त की जा सके।

लक्ष्य प्राप्ति के लिये प्रयास करते समय आपसे कुछ गलतिया आवश्यक रुप से होगी पर व्यक्ति को अपनी गलतियाँ को दोबारा नहीं दोहराना है वल्कि व्यक्ति को अपनी गलतियों को सुधारकर और उससे सीख लेकर आगे बढ़ना है । गलती होने पर उदास होना, दुखी होना, निराश होना, ये सभी चीजें व्यक्ति की शत्रु हैं निराशा से दूर होकर लक्ष्य निर्धारण की सफलता प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।

उदहरण के लिए एक नाव जब समंदर से निकलती है तो उस नाव को कहा पहुंचना है यह नाव चलाने वाला सुनिश्चित करता है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अगर उस नाव की कोई मंजिल ही तय न हो तो क्या होगा? परिणाम स्वरुप जरुर वह नाव समंदर में कहीं भटक जायेगी। बिल्कुल इसी तरह हमारा जीवन है । व्यक्ति को अपने लक्ष्य निर्धारण के महत्व को समझना चाहिए और अपनी योजना पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। तभी हम इस जीवन रुपी नाव को अपनी मंजिल तक पहुंचाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 Google Search

व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम – एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र मोहन यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई, जालौन (उत्तरप्रदेश)

एरिकसन (1950) का मानना है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक पूरे जीवनकाल में व्यक्तित्व को ढाला जाता है। इस अवधि को उसके द्वारा आठ चरणों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक चरण में भावनात्मक संकट, व्यक्ति की विशेष संस्कृति और समाज के साथ उसकी बातचीत से प्रभावित होने की अपनी विशिष्ट विशेषताएं होती हैं, जिसका वह एक हिस्सा है।

1. मौखिक चरण

यह अवस्था शून्य से डेढ़ साल तक फैलती है। इस अवधि के दौरान मुंह शरीर का संवेदनशील क्षेत्र और बच्चे के लिए खुशी और आनंद का मुख्य स्रोत है। माँ द्वारा शिशु की देखभाल कैसे की जाती है, इससे शिशु को भरोसा होता है या उसके आसपास की दुनिया (माँ द्वारा प्रतिनिधित्व) का अविश्वास होता है। यदि उसकी इच्छाएँ अक्सर संतुष्ट होती हैं, तो वह विश्वास विकसित करता है और मानता है कि दुनिया उसकी देखभाल करेगी।

लगातार असंतोष के मामले में, अविश्वास शिशु को यह विश्वास दिलाने के लिए विकसित करता है कि उसके आस–पास के लोगों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है, उस पर भरोसा किया जा सकता है, और वह जो चाहता है, उसे खो देता है। पहले छह महीने (चूसने की अवधि) के बाद, शेष एक वर्ष (काटने की अवधि) दांतों के फटने और कम होने के कारण बच्चे और माँ के लिए काफी मुश्किल होता है। यदि ठीक से संभाला जाता है, तो शिशु का भरोसा मजबूत हो जाता है और वह आशावाद और आशा का एक अंतर्निर्मित और आजीवन वसंत विकसित करता है।

उन लोगों को, जिनके पास एक अप्रिय (परित्यक्त, अप्रकाशित और अनियंत्रित) बचपन था, को माता–पिता को बोझ के रूप में खोजने की संभावना है और यह आश्रित, असहाय, अपमानजनक व्यवहार, और गुस्से के प्रकोप यानी मौखिक चरित्र को व्यक्त कर सकता है। ऐसे लोगों के लिए, कैसवर्कर माता–पिता की तरह होता है, जो क्लाइंट को उसके क्रोध और अविश्वास को मौखिक रूप से समझने में मदद करता है और बाद में भावनात्मक समर्थन और सुरक्षात्मक सेवाएं प्रदान करता है।

कैसवर्कर को शुरुआती मां और बच्चे के रिश्ते द्वारा बनाए गए अवपके (अविश्वास) को भरना है। कैसवर्कर खुद को एक भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, और, इस संबंध के उप–उत्पाद के रूप में ग्राहक खुद पर और दूसरों पर, उसके आसपास भरोसा करना शुरू कर देता है।

ध्यान रखा जाना चाहिए कि ग्राहक कैसवर्कर के हाथों से वंचित महसूस नहीं करता है जो खुद को क्लाइंट के लिए एक मदरिंग व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। यह स्पष्ट किया जा सकता है कि विश्वास या अविश्वास (मौखिक चरण का कार्य) मौखिक चरण के दौरान माँ–बच्चे के संबंध पर पूरी तरह से निर्भर नहीं है। यह जीवन के बाद के वर्षों में भी क्लाइंट के अनुभवों के अनुसार संशोधित, प्रबलित या खराब होता रहता है।

2. गुदा चरण

मौखिक चरण के काटने की अवधि के अंत में, बच्चा अपने दम पर चलने, बात करने और खाने में सक्षम है। वह अपने पास मौजूद किसी चीज को बनाए या जारी रख सकता है। यह आंत्र और मूत्राशय समारोह का भी सच है। वह या तो अपनी आंत्र और मूत्राशय की सामग्री को बनाए रख सकता है या छोड़ सकता है।

अब, बच्चा नहीं खुशी के लिए मुंह के क्षेत्र पर निर्भर करता है। वह अब आंत्र और मूत्राशय (गुदा क्षेत्र) के कामकाज से खुशी प्राप्त करता है, जो माता–पिता द्वारा शौचालय प्रशिक्षण के कारण चिंता में प्रवेश करता है। बच्चे को सिखाया

जाता है कि मूत्र कहाँ से पास करना चाहिए और शौच आदि के लिए कहाँ जाना चाहिए।

मूत्राशय और आंत्र नियंत्रण के इस प्रशिक्षण में, बच्चे को स्वायत्तता, या शर्म और संदेह विकसित हो सकता है। गुदा का कार्य स्वायत्तता विकसित करना है। यदि माता–पिता बिना किसी अतिउत्पाद के सहायक होते हैं और अगर बच्चे को कुछ स्वतंत्रता के साथ काम करने की अनुमति दी जाती है, तो वह तीन साल की उम्र तक अपनी स्वायत्तता में कुछ विश्वास हासिल करता है और घृणा पर सहयोग, इच्छाशक्ति पर सहयोग, और दमन पर आत्म–अभिव्यक्ति पसंद करता है।

स्वायत्तता, इस प्रकार, शर्म और संदेह पर हावी हो जाती है और आत्मविश्वास का विकास होता है कि वह अपने कार्यों को नियंत्रित कर सकता है, और यह भी, कुछ हद तक, उसके आसपास के लोगों को। इसके विपरीत, यदि बच्चे शौचालय के लिए प्रशिक्षण के दौरान अपने मल और मूत्राशय के कामकाज पर नियंत्रण करते हैं, तो माता–पिता गुस्से में, मूर्ख और शर्मिंदा महसूस कर सकते हैं। संस्कारों का अवलोकन बच्चे को स्वीति प्रदान करता है और माता–पिता को उचित तरीके से प्रशिक्षित करने में मदद करता है।

बच्चों (अपने हिस्से में अधिक अविश्वास और संदेह के साथ) जब वयस्कों को किसी के जीवन के एक अंतर्निहित हिस्से के रूप में विफलताओं और अपूर्णता को स्वीकार करने में मदद की आवश्यकता हो सकती है। ग्राहक को स्वीकार करने के रूप में वह है, कैसवर्कर आत्म–घृणा और पूर्णतावाद की अपनी भावना को कम कर सकता है। अधिक मांग वाले वयस्कों या जो जिम्मेदारी संभालने के लिए कहा जाता है, वे गुस्से में नखरे व्यक्त करते हैं, उनके आवेगपूर्ण कार्यों को नियंत्रित करने में मदद करने की आवश्यकता हो सकती है।

जब वे नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं, तो उन्हें पुरस्त किया जाना चाहिए और व्यायाम करने पर अपनी स्वायत्तता और स्वतंत्रता को मजबूत करना चाहिए। स्वायत्तता और स्वतंत्रता आवेगी त्यों से पूरी तरह से अलग हैं क्योंकि इनमें तर्कसंगतता शामिल है और भावनात्मकता नहीं है।

3. जननांग (ओडिपल) स्टेज

इस अवधि के लिए कार्य विकसित करना और पहल को मजबूत करना है, जिसमें विफल बच्चे को अपराध की एक मजबूत भावना विकसित होती है। यह अवधि जीवन के 3 से 6 वें वर्ष तक फैलती है, अर्थात, पूर्व–विद्यालय अवधि। वह अब गतिविधि शुरू करने में सक्षम है, दोनों बौद्धिक और साथ ही साथ मोटर भी। यह पहल कितनी दूर है यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चे को कितनी शारीरिक आजादी दी गई है और उसकी जिज्ञासा कितनी संतुष्ट है। यदि उसे अपने व्यवहार या अपने हितों के बारे में बुरा महसूस करने के लिए प्रेरित किया जाता है, तो वह अपनी आत्म–शुरुआत की गतिविधियों के बारे में अपराध की भावना के साथ बढ़ सकता है।

एरिकसन (1950) का मानना है कि बच्चा घर में पहली पहल तब करता है जब वह विपरीत लिंग के अपने माता–पिता में भावुक रुचि व्यक्त करता है। माता–पिता अंततः उसे / उसे निराश करते हैं। उन्हें एक ही सेक्स माता–पिता के साथ बच्चे की पहचान करने में मदद करने की कोशिश करनी चाहिए, उदाहरण के लिए, लड़की को पिता के साथ माँ और बेटे के साथ पहचान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इस पहल के अलावा, बच्चा माता–पिता के स्नेह के लिए भाई–बहनों की दौड़ में स्वयं के लिए स्थान बनाने का भी प्रयास करता है। वह जो चाहता है और जो करने के लिए कहा जाता है, उसमें अंतर देखता है। यह बच्चे की विस्तारित इच्छाओं और प्रतिबंधों के पैतृक सेट के बीच एक स्पष्ट–कट विभाजन में समाप्त होता है। वह धीरे–धीरे 'इन मूल्यों (प्रतिबंधों, यानी, डॉनट्स) को आत्म–दंड में बदल देता है'।

धीरे–धीरे और धीरे–धीरे, वह संघर्ष से अधिक पहल निकालता है और खुशी से बढ़ता है अगर उसकी पहल को उचित और पर्याप्त सुदृढीकरण मिलता है। कैसवर्कर परिवार में और साथ ही अन्य स्थितियों में पहल करने के लिए

अपराध की भावनाओं से बोझिल ग्राहकों को प्रोत्साहित करता है, और पहल करने की अपनी क्षमता को मजबूत करने के लिए अपने सामाजिक वातावरण के साथ काम करता है।

4. विलंबता चरण

यह चरण 6 से 11 वर्ष तक की अवधि को कवर करता है, अर्थात, स्कूल की आयु। बच्चा तर्कसंगत रूप से तर्क कर सकता है और उन उपकरणों का उपयोग कर सकता है जो वयस्क उपयोग करते हैं। यौन रुचियां और जिज्ञासा (जननांग काल में आम) युवावस्था तक दब जाती है। अगर उन्हें प्रोत्साहित किया जाए और अवसर दिया जाए, तो वे वयस्क सामग्री के प्रदर्शन और उपयोग करने की क्षमता में विश्वास हासिल करते हैं। इससे उसके अंदर उद्योग की भावना पैदा होती है।

वयस्क सामग्री का उपयोग करने में असमर्थ होने पर, वह हीन भावनाओं का विकास करता है। ऐसे बच्चों में साथियों के साथ समस्याएं पैदा हो सकती हैं। उन्हें सहपाठियों के साथ बातचीत करने और दूसरों पर कम निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

यदि बच्चे को जननांग अवधि (अपराध के स्थान पर पहल) के कार्य में महारत हासिल है, तो वह विलंबता (हीनता के स्थान पर उद्योग) के कार्यों में महारत हासिल करने में सक्षम होगा, बशर्ते उसे सौंपा गया और उसे सौंपे गए दायित्वों को निष्पादित करने में मदद मिले। ।

5. किशोरावस्था चरण

इस अवधि को अशांति की अवधि के रूप में माना जाता है, आमतौर पर 12–13 साल से शुरू होता है और 18–19 साल तक बढ़ सकता है। किशोरावस्था, बचपन से परिपक्वता तक की इस संक्रमणकालीन प्रक्रिया के दौरान, वयस्क और कभी–कभी एक बच्चे की तरह व्यवहार करते हैं। माता–पिता भी एक वयस्क व्यक्ति की अपनी नई भूमिका में उन्हें स्वीकार करने की अपनी महत्वाकांक्षा दिखाते हैं।

यह चरण पहले की अवधि की सभी मनोवैज्ञानिक–सामाजिक विशेषताओं को प्रदर्शित करता है और केवल अंत की ओर, इन सभी को किशोरों के लिए एक नई भूमिका (पहचान) के रूप में हल किया जाता है। व्यक्तिगत पहचान विकसित करने के लिए, वह कुछ नायक का प्रशंसक बन जाता है, कुछ विचारधाराओं का पालन करना शुरू कर देता है, और विपरीत लिंग के साथ अपनी किस्मत आजमाता है।

इस अवस्था में अनिर्णय और भ्रम की स्थिति असामान्य नहीं है। एक गलत व्यक्ति के साथ की पहचान उसके लिए समस्याएं खड़ी करेगी। इस युग का कार्य पहचान को विकसित करना है, अर्थात, मूल्य, ताकत, कौशल, विभिन्न भूमिकाएं, सीमाएं, आदि, जिसे विफल करने से उसकी पहचान अलग हो जाती है और वह यह जानने में विफल रहता है कि विभिन्न स्थितियों में कैसे व्यवहार किया जाए। उसे शारीरिक, भावनात्मक दबाव के साथ–साथ माता–पिता, साथियों, आदि के दबाव से निपटने के लिए मदद करने की आवश्यकता है।

समूह–कार्य समस्या–किशोरों के साथ अधिक सहायक है। अपनी भूमिका के बारे में भ्रम दिखाते समय, उन्हें समूह के नेता का अनुकरण करने या समूह कार्यकर्ता के साथ पहचान करने में मदद की जा सकती है। इस उम्र की जरूरतों और समस्याओं के बारे में पर्याप्त रूप से शिक्षित होने पर माता–पिता किशोरों को ठीक से संभाल सकते हैं।

इसी तरह, युवा वयस्कता, वयस्कता और वृद्धावस्था के लिए कार्य अंतरंगता बनाम अलगाव, उदारता बनाम ठहराव और अहंकार–अखंडता बनाम निराशा हैं। ये मनो–विश्लेषणात्मक अवधारणाएँ व्यक्तियों के व्यवहार को समझने में सहायक होती हैं। इनके अलावा, प्रत्येक चरण के लिए कुछ अन्य विद्वानों द्वारा वर्णित कुछ अन्य कार्य हैं जो उनके अनुसार एक सामान्य मानव विकास के लिए प्राप्त किए जाने हैं।

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण : एक व्यापक विश्लेषण

डॉ. भावना ठाकुर, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

शासकीय एम.एल.बी. कन्या पी.जी. स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

संक्षिप्तः

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण मानव विकास और आत्म–साक्षरता के अविभाज्य पहलु हैं। यह शोध पत्र इन धाराओं की बहुमुखी प्रति में उतरता है, जो उनकी परिभाषाओं, प्रभावशील कारकों, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों, और समकालिक प्रभावों की खोज करता है। एक गहरी विश्लेषण के माध्यम से, यह पेपर उन जटिल तात्त्विक, पर्यावरणिक, और व्यक्तिगत प्रक्रियाओं की साझा एकत्रित करने में अवश्यकता की रौशनी डालने का प्रयास करता है, जो व्यक्तित्व और चरित्र को आकार देने में एक्सपरियेंस और नैतिक मूल्य बनते हैं, जो उनके कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं।

1. परिचयः

व्यक्तित्व विकास से तात्त्विक प्रति के तत्वों, व्यवहारों और गुणों का विकास होता है, जिनका विकास समय के साथ होता है। चरित्र निर्माण, दूसरी ओर, किसी के नैतिक निर्णयों और कार्यों का मार्गदर्शन करने वाले गुणों, मूल्यों, और नैतिक सिद्धांतों के संरचनन का संबंध रखता है। दोनों धाराएँ परस्पर जुड़ी होती हैं, आपसी प्रभाव डालती हैं और व्यक्ति की कुल पहचान में योगदान करती हैं।

2. व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण पर प्रभाव डालने वाले कारकः

1. जैनेटिक्स और जैविक कारकः

जैनेटिक प्रवृत्तियाँ व्यक्तित्व के किसी भी पहलु को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, जैसे कि स्वभाव और आत्मनिर्भर प्रवृत्तियों। उदाहरण के लिए,जन्म से अलग हुए दोनों भाई बहनों पर की गई अनुसंधान से प्रतिगत कारक अंतर्निहित प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हैं, जैसे कि आंतर्मुखता/बहिर्मुखता और भावनात्मक स्थिरता की प्रवृत्तियों में।

2. पर्यावरणीय कारकः

व्यक्तित्व और चरित्र पर प्रभाव डालने वाली जगह जिसमें व्यक्ति बढ़ता है, उसका पर्यावरण उनके व्यक्तित्व और चरित्र पर गहरा प्रभाव डालता है। परिवारिक गतिविधियाँ, आर्थिक स्थिति, संस्कृति, और शैक्षिक अनुभव, सभी इस विकास में योगदान करते हैं। ऐतिहासिक डेटा दिखाता है कि समाजिक मानक और सांस्कृतिक प्रथाएँ विभिन्न युगों में चरित्र निर्माण का मार्गदर्शन किया है। उदाहरणार्थ,मध्ययुगीन यूरोप में शिवरक्षा की आदर्श नीतियों ने राजपूतों के चरित्र को आकार दिया।

3. व्यक्तिगत अनुभव और जीवन की घटनाएँः

जीवन की घटनाएँ, सकारात्मक और नकारात्मक, किसी के व्यक्तित्व और चरित्र को आकार दे सकती हैं। आपातकालीन अनुभव संघर्षशीलता और सहानुभूति के विकास का कारण बन सकते हैं, जबकि सफलताएँ आत्म–विश्वास को बढ़ा सकती हैं। उदाहरण के लिए, महान व्यक्तित्वों जैसे अब्राहम लिंकन और नेल्सन मंडेला के जीवन अनुभव द्वारा बलिदान में अद्वितीयता के परिवर्तनशील शक्ति को दिखाते हैं।

4. सामाजिक इंटरैक्शन और संबंधः

सहपीरों, मेंटरों, और रोल मॉडल्स के साथ इंटरैक्शन व्यक्तियों को खुद को और उनके चारों ओर की दुनिया को कैसे देखते हैं, इसे प्रभावित करते हैं। दोस्ती, मेंटरशिप, और समुदाय सहभागीता दयालुता, सहयोग, और दानशीलता को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं, जो चरित्र निर्माण में योगदान करते हैं।

3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः

1. प्राचीन दार्शनिक दृष्टिकोणः

प्राचीन यूनानी दार्शनिक जैसे अरिस्टॉटल ने चरित्र निर्माण में गुण की महत्वपूर्णता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि दिलासा और ईमानदारी जैसे गुणों का अभ्यास करना सुखी जीवन और गुणमय चरित्र की ओर ले जाता है। उदाहरणार्थ, अरिस्टॉटल की सोने की माप की शिक्षाएँ चरित्र गुणों में संतुलन की महत्वपूर्णता को दिखाती है।

2. धार्मिक और नैतिक शिक्षाएँः

धार्मिक और नैतिक शिक्षाएँ इतिहास में चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरणार्थ, यहूदी और ईसाई धर्म में दस आदेश उनके व्यवहार और चरित्र का मार्गदर्शन करने वाली नैतिक ढांचा प्रदान करते हैं। उसी प्रकार, इस्लाम धर्म में पाँच स्तंभ नैतिक आचरण और चरित्र निर्माण के लिए एक मूल बनते हैं।

3. औद्योगिक क्रांति और समकालीनताः

औद्योगिक क्रांति ने समाज पर प्रभाव डालकर चरित्र निर्माण को प्रभावित किया। समाजों को आधुनिक बनाने के साथ–साथ, ऐसी गुणों की महत्वपूर्णता बढ़ गई जैसे अनुशासन, समय पर पहुँचने की क्षमता, और मेहनत, जो व्यक्तियों के चरित्र के विकास को प्रभावित करते हैं।

4. समकालीन दृष्टिकोणः

1. शिक्षात्मक संस्थान और चरित्र शिक्षाः

समकालीन शिक्षात्मक संस्थान शिक्षा के साथ–साथ चरित्र शिक्षा की महत्वपूर्णता को मानते हैं। जो भीड़ जैसे स्वाभाविक गुणों की परिपूर्णता, ईमानदारी, और जिम्मेदारी जैसी गुणों को पोषण करने के लिए कार्यक्रम बनाए जाते हैं, जो व्यक्तित्व विकास में मदद करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं।

2. मीडिया और प्रौद्योगिकी का प्रभावः

डिजिटल युग ने व्यक्तित्व विकास के लिए नए चुनौतियों और अवसरों को पेश किया है। ऑनलाइन इंटरैक्शन, सोशल मीडिया, और डिजिटल प्लेटफॉर्म व्यक्तियों के आत्म और दूसरों की प्रतिष्ठा को आकार देते हैं, चरित्र निर्माण पर प्रभाव डालते हैं।

5. केस अध्ययन

1. स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद, भारतीय संत, योगी और धार्मिक विचारक थे, जिनका जीवन एक महान उदाहरण है जो व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण की महत्वपूर्णता को प्रकट करता है। उनका जीवन एक सतत आत्म–समर्पण, दृढ़ निर्णय और नैतिक मूलभूतताओं की प्रतिष्ठा की दिशा में था।

स्वामी विवेकानंद का जन्म १२ जनवरी, १८६३ को हुआ था। उन्होंने युवा व्यक्ति को जागरूक करने और सही मार्ग पर चलने के लिए एक शक्तिशाली संदेश दिया। उनकी प्रेरणास्त्रोत उनके शिक्षक रामकृष्ण परमहंस थे, जिन्होंने उन्हें मानवता की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने की दिशा में प्रेरित किया।

स्वामी विवेकानंद का व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण उनके आत्म–समर्पण, संघटनशीलता, और संवाद क्षमता में प्रकट होता है। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में साहस और निर्णय की आदर्श प्रस्तावना प्रदान की। उनकी ब्रह्मचर्य और संयम की प्रथा भारतीय संसति की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिसने उन्हें अपने विचारों और क्रियाओं की मान्यता दिलाई।स्वामी विवेकानंद का चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण कौशल उनकी संवाद क्षमता में था। उन्होंने अपने भाषणों और विचारों के माध्यम से लोगों को जागरुक किया और उन्हें आत्म–समर्पण और समर्पण की महत्वपूर्णता का अहसास दिलाया।

स्वामी विवेकानंद का जीवन एक उदाहरण है कि कैसे व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण एक व्यक्ति को उच्चतम स्तर पर पहुँचा सकते हैं। उनका जीवन दिखाता है कि सही मार्ग पर चलने, सतत प्रयास करने, और नैतिक मूलभूतताओं का पालन करने से किसी भी व्यक्ति अपने आप को सशक्त और सफल बना सकता है।

क्रियात्मक विचारः

स्वामी विवेकानंद के जीवन से हमें यह सीखने को मिलता है कि सही मार्ग पर चलने, सच्चे मूल्यों का पालन करने, और आत्म–समर्पण से ही व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण संभव होते हैं। वे दिखाते हैं कि शिक्षा, संघटनशीलता, और संवाद क्षमता मानव व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण होते हैं। उनके उदाहरण से हम यह समझ सकते हैं कि अपने मार्ग पर दृढ़ रहकर, अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों का सामना करके, और अपने आत्मविश्वास को बनाए रखकर किसी भी परिस्थिति में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

2.डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण के विचार को समझने के लिए, हम डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के जीवन का एक मामला अध्ययन कर सकते हैं, जिन्होंने अपने महान व्यक्तित्व और अद्वितीय चरित्र से दुनिया को प्रेरित किया।

परिचयः

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम भारतीय वैज्ञानिक, शिक्षक, और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के पूर्व अध्यक्ष और भारतीय गणराज्य के 11वें राष्ट्रपति थे। उन्होंने विज्ञान, शिक्षा, और तकनीकी उन्नति के क्षेत्र में अपने योगदान से भारतीय समाज को सशक्त बनाने का सपना देखा और उसे हासिल किया।

व्यक्तित्व विकास के पहलुः

डॉ. कलाम का व्यक्तित्व उनके मूलभूत मूल्यों, नैतिकता, और आत्म–संयम पर आधारित था। उन्होंने अपनी जीवनशैली में सीखे हुए मूल्यों का पालन किया और यह दुनियाभर में उनके कार्यों में प्रकट होता है। वे आदर्शपरक रहे हैं क्योंकि उन्होंने कभी अपने मूल मूल्यों से भटकने की अनुमति नहीं दी।

नैतिक उत्ष्टताः

डॉ. कलाम का नैतिक उत्ष्टता में गहराई से निहित था। उन्होंने सदैव ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, और जिम्मेदारी का पालन किया। उनकी उदाहरणात्मक नैतिकता ने उन्हें भारतीय समाज के बीच एक आदर्श बना दिया जिनकी मान्यता हर कोने में होती थी।

संघर्ष के मोमेंट्सः

डॉ. कलाम के जीवन में ऐसे कई संघर्ष के मोमेंट्स थे जो उनके व्यक्तित्व और चरित्र को प्रकट करते हैं। उन्होंने संघर्षों का सामना किया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और सहानुभूति, संघर्षशीलता, और दृढ़ संकल्प के साथ समस्याओं का समाधान निकाला।

समय प्रबंधन और स्वाधीनताः

डॉ. कलाम का अत्यधिक समय प्रबंधन कौशल उनकी उच्चतम गुणवत्ता की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने हमेशा यह सिखाया कि समय का मूल्य होता है और हमें उसका सही तरीके से प्रबंधन करना चाहिए।

सकारात्मक सोचः

डॉ. कलाम की सकारात्मक सोच ने उन्हें उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद की। उन्होंने नकारात्मकता को दूर रखकर सकारात्मकता के साथ काम किया, जो उन्हें आगे बढ़ने में मदद करता है।

निष्कर्ष :

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की जीवनी दिखाती है कि व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण का मार्ग सदैव

ईमानदारी, मूल्यों का पालन, और सकारात्मक सोच का होता है। उनकी उद्देश्यवादी दृष्टिकोण, सत्यनिष्ठा, और आत्म–संयम ने उन्हें अद्वितीय चरित्र की प्राप्ति में मदद की और उन्हें दुनिया के सामने प्रेरित किया।

इस मामला अध्ययन से हम देखते हैं कि डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने अपने व्यक्तित्व के माध्यम से अनगिनत लोगों को प्रेरित किया है और उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनके जीवन में उनकी नैतिकता, समर्पण, और आत्म–निष्ठा की मिसाल देने के लिए कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं, जिनसे हम यह सिख सकते हैं कि चरित्र कैसे व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है और कैसे हम उसे सकारात्मकता और समृद्धि के लिए उपयोग कर सकते हैं।

6. प्रभाव और भविष्य की दिशाएँः

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण की समझ व्यक्तिगत विकास, शिक्षा, और समाजिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। जैनेटिक, पर्यावरणिक, और व्यक्तिगत कारकों के संयोजन को मानने से, व्यक्तियों को सकारात्मक गुणों और मूल्यों का निर्माण करने की दिशा में काम करने की क्षमता होती है। शिक्षात्मक संस्थान उन्हें सहायक गुणों को निर्माण करने के लिए व्यापारिक सीख के साथ–साथ समकालीन चरित्र शिक्षा के कार्यक्रम प्रदान कर सकते हैं, जो उन्हें आधुनिक दुनिया की चुनौतियों को नैतिक ईमानदारी के साथ पार करने में सहायता कर सकते हैं।

7. निष्कर्षः

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण मानव पहचान और व्यवहार के महत्वपूर्ण पहलु हैं, जिन्हें जीने और स्वयं को सच्चाई से जोड़ने की कल्पना किया जा सकता है। प्राचीन दृष्टिकोणों से लेकर आधुनिक परिप्रेक्ष्यों तक, यह शोध पत्र उन विभिन्न कारकों और प्रभावों की खोज में प्रकट होने वाले विचारों और प्रभावों को प्रकट करने के लिए उदाहरणों के माध्यम से जागरूकता प्रदान करने का प्रयास किया है। प्रातिक और पर्यावरणिक दोनों के महत्व को मानकर, व्यक्तियों को आत्म–खोज और जागरुक चरित्र विकास की यात्रा पर निकलने के लिए और समाज में सकारात्मक योगदान करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

व्यक्तित्व विकासः अपने व्यक्तित्व को सजाएं (https://www.typingbaba.com/2021/04/personality-development-essay-in-hindi.html)

चरित्र निर्माण के महत्वपूर्ण सिद्धांत (https://www.typingbaba.com/2021/06/character-formation-essay-in-hindi.html)

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माणः महत्व और प्रक्रिया (https://www.typingbaba.com/2021/08/personality-development-and-character-formation-essay-in-hindi.html)

"Swami Vivekananda: Life and Teachings." Vedanta Society of Southern California. https://vedanta.org/what-is-vedanta/swami-vivekananda/

"Swami Vivekananda's Quotes on Education." SuccessCDs Education. https://www.successcds.net/Thoughts/swami-vivekananda-quotes-on-education.html

"Biography of Dr. A.P.J. Abdul Kalam." Biography Online. https://www.biographyonline.net/scientists/dr-apj-abdul-kalam.html

"Dr. APJ Abdul Kalam: A Lifelong Learner." The Better India. https://www.thebetterindia.com/267984/quotes-by-apj-abdul-kalam-on-education-and-lifelong-learning/

व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान

श्री अनुराग रोकड़े, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

शोध सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में भारत सरकार, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा 24 सितंबर 1969 को प्रारंभ की गई राष्ट्रीय सेवा योजना (रा.से.यो.) (NSS-National Service Scheme) के महत्व को रेखांकित करते हुये, इस योजना से ग्रामीण विकास, समाज सेवा तथा जागरूकता फैलाने संबंधी क्रियाकलापों पर प्रकाश डाला गया है। NSS से जुड़ा छात्र किस प्रकार अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करता है, सरकार की योजनाओं को धरातल स्तर पर स्पष्ट करता है, जन–जन को इनसे अवगत कराता है, समाज को सामाजिक कुरीतियों से जागरूक करता है, स्वयं से पहले संगठन को रखता है और इन सबसे किस प्रकार वह स्वयं के चरित्र का निर्माण व व्यक्तित्व विकास करता है, का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

21 वीं सदी के समावेशी ग्रामीण विकास के अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, आर्थिक व मानव विकास को रेखांकित करते हुय NSS योजना की प्रासंगिकता को प्रस्तुत किया है। इससे छात्रों के मन–मस्तिष्क में क्या परिवर्तन हुये, समाज में क्या परिवर्तन हुये, क्या–क्या चुनौतियॉ रही और आगे भी रहेगी, इन चुनौतियों को कैसे दूर करना है?आदि का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

Keyword :- राष्ट्रीय सेवा योजना, मानव विकास, व्यक्तित्व विकास, NSS स्वयंसेवक, ग्रामीण स्तर पर NSS का महत्व, नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व, समाज सेवा व सामाजिक सुदृढ़ीकरण, नशामुक्ति, दहेज प्रथा, सामाजिक कुरीति उन्मूलन आदि।

प्रस्तावना – भारत सरकार द्वारा महात्मा गांधीजी के जन्म शताब्दी वर्ष 24 सितंबर 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की शुरूआत की गई। इस योजना का उद्देश्य स्वैच्छिक समुदाय सेवा के माध्यम से युवा छात्रो में सामाजिक दायित्व, अनुशासन, समाजसेवा भावना का विकास करना है। वर्ष 1969 में इसे भारत के 37 विश्वविद्यालयों में प्रारंभ किया गया था जिसमें लगभग 40000 स्वयंसेवकों को सम्मिलित किया गया था। योजना के प्रारंभ में गतिविधियों पर होने वाले व्यय की व्यवस्था केन्द्र सरकार एवं राज्य शासन द्वारा 7:5 के अनुपात में की जाती थी। वर्ष 2016 से यह पूर्ण रूप से केन्द्र अनुदानित योजना की गई है।[1]

किसी देश के निर्माण में वहाँ की युवा आबादी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आज हमारे देश में 65 प्रतिशत जनसंख्या युवा है। यह जनसंख्या भारत का वर्तमान है और इसे जिस प्रकार से ढाला जायेगा, उसी प्रकार का भविष्य ये निर्मित करेंगे। यदि आज इस युवा आबादी को समाजसेवा, दायित्व भावना, अनुशासन, मेहनत से आत्मसात किया जायेगा तो ये भविष्य में एक श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को मूर्त रूप दे सकेंगे। इसी हेतु आजादी के बाद सर्वपल्ली राधाष्णन को अध्यक्षता में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (University Grants Commission) ने शैक्षिक संस्थाओं में स्वैच्छिक राष्ट्रीय सेवा शुरू करने को संस्तुति की थी। इस पर केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने जनवरी 1950 में विचार किया। 2 वर्ष पश्चात भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजना के तहत 01 वर्ष के लिये छात्रों के सामाजिक सेवा पर बल दिया। तत्पश्चात् शिक्षा मंत्री सम्मेलन में NSS का प्रारूप पेश किया गया। इसके तहत राष्ट्रीय सेवा समिति (National Service Committee) की स्थापना 28 अगस्त 1959 को की गई। इसके पश्चात NSS कार्यक्रम की शुरूआत तत्कालीन

शिक्षामंत्री डॉ. वी.के.आर.वी. राव द्वारा 24 सितंबर 1969 को की गई।

प्रत्येक NSS स्वयंसेवी को प्रतिवर्ष कम से कम 120 घंटे अर्थात् 2 वर्ष में 240 घंटे की सेवा करना अनिवार्य होता है। यह आमतौर पर अध्ययन पश्चात या सप्ताह के अंत में किया जाता है।

NSS का सिद्धांत वाक्य – ''मैं नही बल्कि आप (Not Me But You)" है। यह सिद्धांत वाक्य अपने आप में ही NSS कार्यक्रम की वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को परिलक्षित करता है। यह संगठन की निःस्वार्थ सेवा भावना को दर्शाता है। यह स्वयं की जगह पर दूसरो को केन्द्र बिंदू में रखकर निःस्वार्थ भावना से समाज में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करने, समाज को सही दिशा दिखाने हेतु प्रेरित करता है। प्रतिवर्ष 24 सितंबर को NSS दिवस मनाया जाता है।

NSS के प्रेरणा पुरूष :– मानव सेवा, युवा चेतना तथा सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक स्वामी विवेकानन्द जी को NSS का प्रेरणा पुरूष माना गया है। स्वामी विवेकानन्दजी को अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष 1985 के अंतर्गत भारत सरकार ने युवाओं का प्रतीक पुरूष मान्य किया, तब से ही NSS में भी विवेकानन्द जी को प्रेरणा पुरूष के रूप में मान्य किया।

NSS का प्रतीक चिह्न :– NSS का प्रतीक चिह्न कोणार्क सूर्य मंदिर के चक्र का सरलीत रूप है जो मुख्यतः गति को दर्शाता है। यह निरंतरता और परिवर्तनशीलता का प्रतीक है। यह NSS को समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने और निरंतर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है।

NSS के उद्देश्य :– राष्ट्रीय सेवा योजना मैनुअल (संशोधित) 2006 भारत सरकार युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा NSS योजना के उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. समुदाय को समझना जिसमें वे कार्य करते है।
2. समुदाय की तुलना में स्वयं को समझना।
3. समुदाय की जरूरतो और समस्याओं की पहचान करना और उन्हे समस्या के समाधान की प्रक्रिया में भागीदार बनाना।
4. स्वयं में सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी का बोध विकसित करना।
5. व्यक्तिगत और समुदाय की समस्याओं का व्यवहारिक समाधान ढूंढने में उनके ज्ञान का उपयोग करना।
6. समूह में रहने और जिम्मेदारियों को बांटने के लिये जरूरी क्षमता विकसित करना।
7. समुदाय सहभागिता जुटाने में कौशल अर्जित करना।
8. नेतृत्व गुण और लोकतांत्रिक प्रवृत्ति विकसित करना।
9. आपातकालिन स्थितियों और प्रातिक आपदाओ से निपटने की क्षमता विकसित करना।
10. राष्ट्रीय अखडंता और सामाजिक सद्भावना बनाये रखना।[2]

NSS के कार्य व इनके द्वारा व्यक्तित्व निर्माण

राष्ट्रीय सेवा योजना भारतीय सामाजिक परिवेश व सामाजिक ताने–बाने को ध्यान में रखकर कार्य करती है। इसमें स्वयं सेवक छात्र–छात्राएँ अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते है।

NSS में रहते हुये छात्र अनेक क्रियाकलापों को करता है। NSS में रहते हुये छात्र तीन प्रकार के प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकता हैं – 'A', 'B' व 'C' प्रमाणपत्र। NSS में पंजीयन हेतु छात्र 11वीं व 12वीं में अध्ययनरत् होना चाहिये।

एक NSS छात्र रहते हुये सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य होता है वह है ग्राम या झुग्गी बस्तियों का अधिग्रहण करके वहाँ सेवायें देना। ऐसी कोई ग्राम/बस्ती विद्यालय/महाविद्यालय/संस्था से 8 कि.मी. के भीतर होती है ताकि छात्रो को कोई असुविधा न हो।

NSS छात्र सदैव अनुशासित रहकर अपने संगठन को सर्वोपरि मानकर कार्य करते है। यह अनुशासन छात्र के मानसिक और शारीरिक विकास के साथ–साथ उसे संयमी, समझदार और सही–गलत का भेद सीखाता है। छात्रो में नेतृत्व क्षमता का विकास करना NSS का मुख्य उद्देश्य है। छात्र स्वयं आगे आकर, स्वयं को प्रस्तुत कर सकते है। छात्रों को अनेक गतिविधियों जैसे प्रेरक गीत, वक्तव्य आदि के माध्यम से एक श्रोता के साथ–साथ वक्ता होने के लिये भी प्रेरित किया जाता है। छात्र अपनी झिझक छोड़कर एक कुशल वक्ता के रूप में नेतृत्व क्षमता का विकास करते है। यह झिझक कम होना किसी भी छात्र के व्यक्तित्व निर्माण का सबसे पहला और महत्वपूर्ण पढ़ाव है।

NSS का उद्देश्य छात्रों, विशेषकर 11 वीं व 12 वीं के छात्रों में समाजसेवा, परोपकार भावना, राष्ट्रसेवा व अपने संगठन के प्रति उत्तरदायी होने के लिये प्रेरित करना है। इसके द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, गरीब बालक–बालिकाओं को NSS में सम्मिलित करने हेतु प्रेरित किया जाता है। वे सब आपस में मिलकर कार्य करते है जिससे समाज सुदृढ़ होता है और सामाजिक समरसता बनी रहती है।

NSS स्वयंसेवकों को साधारण ड्रिल, परेड, योग, व्यायाम, पी.टी. आदि के माध्यम से शारीरिक गतिविधियाँ करवाई जाती है ताकि वे आलस को त्यागकर सदैव शारीरिक रूप से मजबूत रह सके। ये आदत छात्र को जीवन पर्यन्त सदैव तत्परता प्रदान करती है। इससे एक मजबूत व्यक्तित्व छात्रों को प्राप्त होता है जो सबसे अलग दिखता है, जो सदैव श्रम कार्य व सेवा हेतु तत्पर रहता है। ऐसा व्यक्तित्व छात्र के साथ–साथ राष्ट्र निर्माण के लिये सबसे आवश्यक घटक है जो वर्तमान के साथ–साथ आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन करते है।

NSS योजना में छात्रों, स्वयंसेवकों को नशामुक्ति, दहेजप्रथा एवं समाज में व्याप्त बुराईयों से अवगत करवाया जाता है। इनके दुष्प्रभाव बताये जाते है। ये छात्रों को गलत संगत में पड़ने से बचाता है। जब ये छात्र अधिग्रहित गांव या बस्ती में जाते हैं तो वहाँ जनजागरूकता कार्यक्रम, नाटक आदि के माध्यम से इन बुराईयो को समाज में पनपने से रोकने हेतु कार्य करते है। वे लोगो को जागरूक करते है, नशे की गिरफ्त में आ चुके लोगो से वार्तालाप करके उन्हें इससे बाहर आने में सहायता करते है।

NSS स्वयंसेवको द्वारा संस्था परिसर, गांव, बस्ती आदि में पर्यावरण संरक्षण, पौधारोपण, सोख्ता, गड्ढो का निर्माण, सड़क और पुलियों का जीर्णोद्धार/मरम्मत, नालियों की सफाई आदि करवाई जाती है और इसमें स्थानीय लोगो को भी शामिल किया जाता है। समय–समय पर नाटकों, रैलियों के माध्यम से सफाई, स्वास्थ्य, बिमारियों आदि के प्रति जागरूकता फैलाई जाती है। शोध पत्र निर्माण करते समय शोधार्थी द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना में 'A', 'B' व 'C' प्रमाणपत्र प्राप्त, गणतंत्र दिवस परेड वर्ष 2021 शिविर में शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरगोन, DAVV इंदौर व मध्यप्रदेश का नेतृत्व करने वाले श्री सावन धनगर[3] से भेंट की गई और NSS कार्यक्रमों को विस्तृत चर्चा की गयी। श्रीधनगर ने अपने व्यक्तित्व अनुभव सांझा किये। इनके द्वारा खरगोन शहर से 5 कि.मी. दूर जामली गांव को अधिग्रहित किया गया है। गांव में नशामुक्ति, रक्तदान, शिविर, कोरोना महामारी के प्रति जागरूकता रैली, नालियों की सफाई, खरपतवार व गाजर घास उन्मूलन आदि क्रियाकलाप किये गये है।

NSS कार्यकर्ता शिक्षा के महत्व को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करते है। यह तो सर्वविदित है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षा ही व्यक्ति को बहुआयामी दृष्टिकोण निर्मित करने में सहयोग करती है। गांवों में शिक्षा के प्रति जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। भारत में 68–84 प्रतिशत जनसंख्या गांवो में निवास करती है।[4] गांधीजी के अनुसार ''भारत की आत्मा गांवों में बस्ती है।''[5] भारत को इसी ग्रामीण आत्मा को शिक्षा के महत्व को समझाना तथा प्रत्येक बच्चे को आंगनवाड़ी, स्कूल, कॉलेज में दाखिला दिलवाना व उच्च शिक्षा हेतु

प्रेरित करने का कार्य NSS स्वयंसेवको ने बखूबी किया है। यह मात्र बच्चों को ही शिक्षा हेतु प्रेरित नही करता वरन् ग्रामीण महिलाओं, पुरुषों व प्रौढ़ नागरिकों को भी शिक्षा के प्रति जागरुक बनाता है। डॉ. जिले सिंह अपनी पुस्तक ''ग्रामीण विकास की चुनौतियाँ'' में लिखते है कि ''प्रत्येक देशभक्त के समक्ष यह चुनौती होगी कि भारत के गांवों का ऐसा पुनर्निर्माण किस प्रकार किया जाये कि कोई व्यक्ति उसमें उतनी ही आसानी से रह सके जैसे की शहरो में रहा जाता है।[6]

निष्कर्ष :– NSS योजना ने आजादी के बाद से ही युवाओं को समाज सेवा, सामाजिक कार्य, अनुशासन चरित्र निर्माण आदि हेतु प्रेरित किया है। सेवा के माध्यम से शिक्षा NSS का उद्देश्य है। NSS का वैचारिक रुझान महात्मा गाँधी व स्वामी विवेकानन्द से प्रेरित है। NSS का आदर्श वाक्य ''मैं नहीं बल्कि आप'' है। एक NSS स्वयंसेवक 'स्वयं' से पहले 'संगठन' को रखता है। यह स्वयं के व्यक्तित्व विकास को सुदृढ़ता प्रदान करता है और समाज तथा देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का आभास कराता है।

NSS योजना के सामने भी अनेक चुनौतियाँ है। छात्रों का रूझान कम ही देखने को मिलता है। छात्रों को इस योजना में कम रुचि होती है, वे NCC को अधिक पसंद करते है। इस कारण से NSS योजना में वे ही छात्र पंजीत होते हैं जो समाजसेवा हेतु प्रतिबद्ध होते हैं। व्यय करने के लिये धन का अभाव देखा गया है। कभी–कभी NSS इकाई का ढुलमुल रवैया भी इस योजना के सामने चुनौती प्रस्तुत करता है। केन्द्र व राज्य सरकारों की अनदेखी भी एक चुनौती है। फिर भी इन सबके बावजूद NSS सेवा व इसके स्वयंसेवक छात्रों ने कठिन परिश्रम से इसे जन–जन तक पहुँचाया है। तृण मूल स्तर पर ग्रामीण स्तर पर जागरुकता फैलाने का जो कार्य NSS ने किया है वह अत्यंत प्रासंगिक है। गांव का विकास ही देश का विकास है। देश विकसित होगा तो विश्व विकसित होगा और इसी तरह वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को विश्वभर में प्रसारित–प्रचारित किया जा सकेगा। इस हेतु NSS योजना का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। इस योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु केन्द्र व राज्य सरकारों, स्थानीय सरकारों, अधिकारियों, संस्थाओं व छात्रो को मिलकर कार्य करना होगा और अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता है। इस योजना में रोजगार प्रदान करने की क्षमता को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है तभी यह सभी छात्रों और समाज में गहरी पैठ बना पायेगी। इसके बावजूद भी NSS योजना अत्यंत सफल मानी जा सकती है।

व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व

डॉ. प्रतीक्षा सावले, **NSS** कार्यक्रम अधिकारी,
शासकीय गीतांजलि कन्या महाविद्यालय, भोपाल

परिचय

राष्ट्रीय सेवा योजना (**National Service Scheme-NSS**) राष्ट्र की युवाशक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है। इसके गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित के कार्य करते है। साक्षरता संबंधि कार्य, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सफाई आपातकालीन या प्रातिक आपदा के समय पीड़ित लोगों की सहायता आदि के कार्य करते है। विद्यार्थी जीवन से ही समाज उपयोगी कार्यों में रत रहने से उनमें समाज सेवा या राष्ट्र सेवा के गुणों का विकास होता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य –

"समाज सेवा के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है।"

राष्ट्रीय सेवा योजना का लक्ष्य –

"शिक्षा द्वारा समाज सेवा एवं समाज सेवा के द्वारा शिक्षा।"

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्य –

"मैं नहीं आप" (नाहं वे भवान्)

राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रकार –

राष्ट्रीय सेवा योजना में दो प्रकार की गतिविधियाँ संचालित होती है।

प्रथम– "नियमित गतिविधि" तथा द्वितीय – गोद ग्राम में दिवा शिविर और सात दिवसीय "विशेष शिविर"।

दिवा शिविर में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक गोद ग्राम में जन चेतना जाग्रत कर ग्रामवासियों को विकास की ओर प्रेरित करते है। सात दिवसीय विशेष शिविर में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक, ग्रामवासियों को शासन की विभिन्न योजनाओ एवं विभागों से जुड़कर विभिन्न सृजनात्मक कार्यो में युवाओं को संलग्न कर एवं सकारात्मक सोच उत्पन्न करते है। साथ ही इन युवाओं को राष्ट्र विकास की संसति की ओर प्रेरित करते हैं। जैसे – स्वच्छता, वृक्षारोपण, पल्स पोलियो, बेटी बचाओ– बेटी पढ़ाओ जैसे जनजागरण कार्यो के माध्यम से समाज सेवा का भाव जागृत कर राष्ट्र सेवा का भाव जागृत करते है।

प्रत्येक एनएसएस स्वयंसेवी को प्रति वर्ष कम से कम 120 घंटे अर्थात दो साल में 240 घंटे की सेवा करना अनिवार्य होता है। यह कार्य एनएसएस शाखाओं द्वारा अपनाए गए गांवों/झोपड़ियों या स्कूल/कॉलेज परिसरों में किया जाता है। आमतौर पर अध्ययन के घंटों के बाद इसे सप्ताहांत/छुट्टियों के दौरान किया जाता है। इसके अलावा, प्रत्येक एनएसएस इकाई स्थानीय समुदायों को शामिल करके कुछ विशेष परियोजनाओं के साथ छुट्टियों में अपनाए गए गांवों या शहरी झुग्गियों में 7 दिनों की अवधि के विशेष शिविरों का आयोजन करती है। प्रत्येक स्वयंसेवक को 2–वर्ष की अवधि के दौरान एक बार विशेष शिविर में भाग लेना जरूरी होता है। इस प्रकार, एक इकाई से लगभग 50 प्रतिशत एनएसएस स्वयंसेवी विशेष शिविर में भाग लेते हैं।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है स्वैच्छिक समुदाय सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र के विकास के प्राथमिक उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) को शुरू किया गया था। एनएसएस का उद्देश्य 'सेवा के माध्यम से शिक्षा' है। एनएसएस की वैचारिक उन्मुखता महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित है। एनएसएस का आदर्श वाक्य "नॉट मी, बट यू" है। एक एनएसएस स्वयंसेवी 'स्वयं' से पहले 'समुदाय' को स्थान देता है। यह शिक्षा के तीसरे आयाम का हिस्सा है, अर्थात् मूल्यवर्धक शिक्षा है जो कि तेजी से महत्वपूर्ण बनती जा रही है।

युवा और खेल मामलों का मंत्रालय बड़े पैमाने पर एनएसएस के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध है। अभी तक एनएसएस में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या 10% से कम है। एनएसएस के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। एनएसएस के लिए स्वयं–वित्तपोषण इकाइयों की स्थापना की भी अनुमति दे दी गयी है। छात्रों को एनएसएस के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए, यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालयों को एनएसएस को क्रेडिट के साथ एक वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू करने के लिए एक एडवाजरी जारी की है। एनएसएस के स्वयंसेवियों द्वारा किए अच्छे कार्यों के लिए मंत्रालय उन्हें पुरस्कृत भी करता है। इसके तहत राष्ट्रीय स्तर पर वार्षिक एनएसएस पुरस्कार दिए जाते हैं, जिसमें एनएसएस स्वयंसेवियों को गणतंत्र दिवस परेड, अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर, साहसिक कैंप आदि में भाग लेने का अवसर दिया जाता है।

सारांश

राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थियों मे अनुशासन, नेतृत्व, टीमवर्क की भावना, विपरीत परिस्थितयों के सामना करने की क्षमता का विकास होता है। शालीन मिलनसार व्यक्तित्व से परिपूर्ण युवाओं राष्ट्र निर्माण मे योगदान ही इस योजना का लक्ष्य है।

जय हिंद

"व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार आयोजन के स्क्रीन शॉट

बाबूलाल गौर महाविद्यालय में राष्ट्रीय वेबीनार

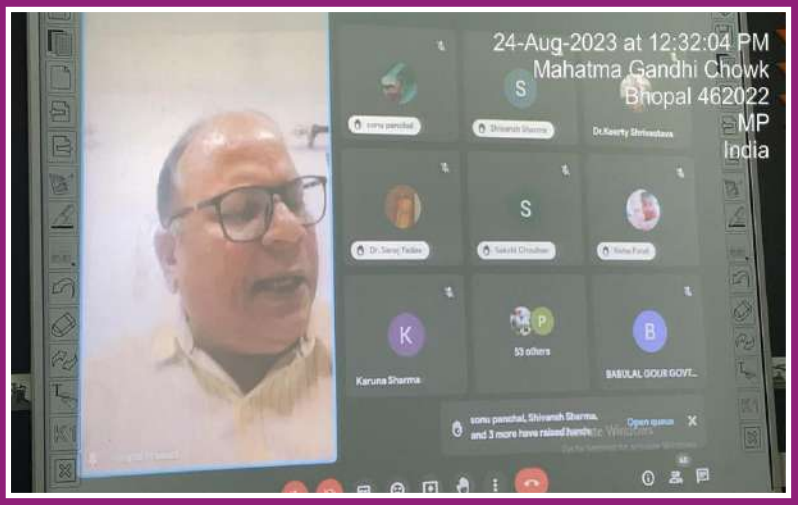

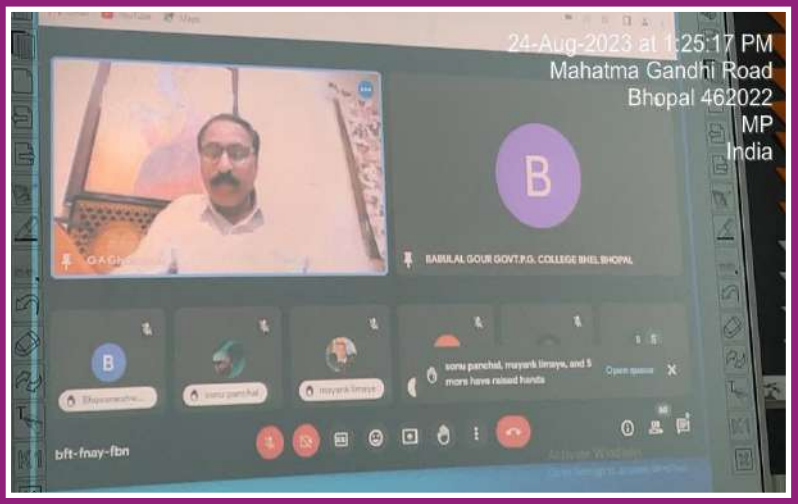

यूनेस्को के बताए गए व्यक्तित्व विकास के 5 बिन्दुओं पर की चर्चा

बरखेड़ा भेल @ पत्रिका. बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल भोपाल में व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश शासन के सहयोग से आयोजित वेबीनार में मुख्य वक्ता उत्तर प्रदेश गोरखपुर के डॉक्टर गोपाल प्रसाद ने यूनेस्को द्वारा बताए गए व्यक्तित्व विकास के पांच बिन्दुओं पर चर्चा की। वहीं डॉ. घनश्याम अयगर छत्तीसगढ़ ने रोचक तरीके से व्यक्तित्व विकास की सतत् प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। राष्ट्रीय वेबीनार में प्राध्यापकों, शोधार्थियों, अतिथि विद्वानों सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने ऑनलाइन और ऑफ़लाइन सहभागिता की। संगोष्ठी की संयोजक डॉ. अनुपमा यादव ने संगोष्ठी के उद्देश्यों की जानकारी दी। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. संजय जैन, डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव, कॉलेज का स्टाफ व अन्य लोग मौजूद रहे।

24 Aug 2023 12:29:51 pm
BHEL
Bhopal Division
Madhya Prade

24-Aug-2023 at 1:26:55 PM
Bhopal
MP
India

24-Aug-2023 at 1:50:57 PM
St Joseph's Catholic Church Road
Bhopal 462022
MP
India

24-Aug-2023 at 12:44:48 PM
Mahatma Gandhi Road
Bhopal 462022
MP
India